मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 57 अंक : 5 नवम्बर, 2016 पृष्ठ : 52 मूल्य : ₹15

है कौन विघ्न ऐसा जग में.....

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

> "मैं क्या कहूँ.... और मैं क्यों कहूँ! सबका सब पारदर्शी है। सब सबके सामने है, हाथ कंगन को आरसी क्या? भारत सरकार से लेकर गाँव-गाँव और ढाणी-ढाणी में बैठा भारत-पुत्र शिक्षा विभाग में आई चेतना और सुधारों को देखकर हमारी सराहना कर रहा है।"

अपनों से अपनी बात कहना शुरू करने से पहिले मुझे कविवर रामधारी सिंह दिनकर की ओजपूर्ण कविता के अंश याद आ रहे हैं। हिन्दी साहित्य की अप्रतिम काव्य कृति 'रश्मिरथी' में कवि दिनकर दहाड़ कर कह रहे हैं-

है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में
खम ठोक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़
मानव जब जोर लगाता है
पत्थर पानी बन जाता है।

दो वर्ष पहिले दिनांक 27 अक्टूबर 2014 को मुख्यमंत्री माननीया वसुंधरा राजे के मंत्रिमण्डल में जब मैंने प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के मंत्री पद का दायित्व ग्रहण किया, तब विद्यालयों में शिक्षकों के पदों के असमान वितरण, बड़ी संख्या में पद रिक्त होने, अपनी सुविधा के लिए शिक्षकों के पद विरुद्ध अथवा बिना पद के कार्यरत होने, विद्यालयों में बालक-बालिकाओं के न्यून नामांकन जैसी दर्जनों समस्याएं एवं विसंगतियाँ राह में मुँह बाएँ खड़ी थीं। राजकीय विद्यालयों के प्रति समाज में अविश्वसनीयता एवं शंका का जबरदस्त वातावरण बना हुआ था। स्थिति बड़ी चुनौतीपूर्ण थी, मगर इन सब स्थितियों से मैं विचलित नहीं हुआ। शिक्षा के माध्यम से समाज सुधार एवं व्यक्ति निर्माण का संकल्प लेकर मैं मंत्रिमण्डल में सम्मिलित हुआ था, इसलिए सकारात्मक आशा एवं परिणाममूलक उत्साह का भाव मेरे मन में हर समय बना रहा। आखिर दिनकर की दहाड़ मेरे हृदय में उछालें जो मार रही थी, है कौन विघ्न ऐसा जग में.....!

आज दो साल बाद के विभाग की सूरत आपके सामने है। मैं क्या कहूँ.... और मैं क्यों कहूँ! सबका सब पारदर्शी है। सब सबके सामने है, हाथ कंगन को आरसी क्या? भारत सरकार से लेकर गाँव-गाँव और ढाणी-ढाणी में बैठा भारत-पुत्र शिक्षा विभाग में आई चेतना और सुधारों को देखकर हमारी सराहना कर रहा है। इन दो वर्षों की उपलब्धियों की महान मुहिम में कदम-कदम पर मेरा मार्गदर्शन एवं सम्बलन करने के लिए मुख्यमंत्री महोदया के प्रति विनम्र आभार प्रकट करते हुए शिक्षा सचिव, शिक्षा निदेशक, शिक्षा अधिकारियों एवं इस रचना के प्रमुख सूत्रधार शिक्षक भाई-बहिनों को साधुवाद देता हूँ।

हमारी संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर ब्रह्मनिष्ठ है जिसमें निर्लिप्त एवं निस्वार्थ भाव से कर्मशील रहकर सबके योगक्षेम की कामना की जाती है। इस उत्तम स्थिति का विवेचन पाँच दशक पूर्व 05 जून 1964 के दिन पं. दीनदयाल उपाध्याय ने उदयपुर में आयोजित अपने एक बौद्धिक में किया था। पंडित जी कहते हैं, "व्यक्ति और समाज को जोड़ने वाली शिक्षा, कर्म, योगक्षेम और यज्ञ– ये चार चीजें व्यष्टि और समष्टि को एकात्म करती हैं। शिक्षा समाज से व्यक्ति की ओर, कर्म व्यक्ति के समाज की ओर, योगक्षेम समाज से व्यक्ति की ओर तथा यज्ञ व्यक्ति से समाज की ओर जाते हैं। यज्ञ भाव न रहने से हम नीचे की तरफ आ जाएँगे, पतन हो जाएगा। यज्ञभाव के साथ कर्मभाव भी चाहिए।" उपाध्याय जी का यह कथन एकात्म मानव दर्शन में शिक्षा की उपादेयता एवं महत्त्व को प्रतिपादित करता है।

हमें अपने महापुरुषों के दर्शन को पढ़ना, समझना एवं उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर चलने का प्रयास करना चाहिए। इतना ही नहीं, बल्कि शिक्षक शिक्षा संबंधी पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं को खूब पढ़ें, देश-दुनिया में हो रहे शैक्षिक शोध एवं नवाचारों से स्वयं को अपडेट रखें ताकि वे अपने ज्ञान एवं कौशल का उपयोग विद्यार्थियों की शिक्षा-दीक्षा में कर सकें। मध्यावधि अवकाश एवं दीपोत्सव-दीपावली का उत्सव मनाकर शिक्षक एवं शिक्षार्थी शिक्षा के पावन यज्ञ में जुट गए हैं। मैं चाहता हूँ कि संस्था प्रधान एवं शिक्षक अब अपनी सम्पूर्ण योग्यता एवं सामर्थ्य शिक्षा के पावन यज्ञ में लगा दें ताकि बोर्ड परीक्षा' 2017 में हमारे विद्यालय एवं विद्यार्थी संख्या के साथ गुणात्मक दृष्टि से भी प्रवीणता प्राप्त कर सकें।

शुभकामनाओं के साथ,

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

चित्र वीथिका-नवम्बर, 2016

पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान द्वारा आयोजित डॉ. ए.पी.जे. कलाम राज्य स्तरीय शिक्षक रत्न पुरस्कार 2016 समारोह का उद्घाटन उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ द्वारा किया गया। साथ में हैं राजस्थान विश्व विद्यालय के कुलपति श्री जे.पी. सिंघल, फोरम के महासचिव श्री रामेश्वर शर्मा।

माननीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री सुरेन्द्र गोयल 61वीं राज्यस्तरीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयी 19 वर्षीय छात्रा हॉकी प्रतियोगिता जैतारण (पाली) के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए। गरिमामय मंच पर उपस्थित हैं सम्माननीय अतिथिगण।

प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री जगदीश चन्द्र पुरोहित, सिटिजन्स सोसायटी फॉर एज्यूकेशन, जोधपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को नि:शुल्क स्टेशनरी वितरित करते हुए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मण्डावर (झालावाड़) के पूरे स्टाफ ने स्वेच्छा से अपने लिए अपना ड्रेस कोड 'हमारा वेश : हमारी पहिचान' निर्धारित कर नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय साफाड़ा (सायला) जालोर में विद्यार्थियों को 200 खोड़ी चरण पादुका वितरित की गईं। आयोजन में भामाशाह, जिला शिक्षा अधिकारी, शाला प्राचार्य के साथ अतिथिगण।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) में 'स्वच्छ शहर, प्रदूषण-मुक्त शहर' विषय पर नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की गई। कलाकार विद्यार्थियों के साथ प्रधानाचार्या और शाला परिवार के सदस्य।

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity/408/2014-16

शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अक्टूबर, 2016
प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2016 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 18350/66

शिक्षा विभाग में नियुक्ति में नवाचार : काउंसिलिंग से पदस्थापन

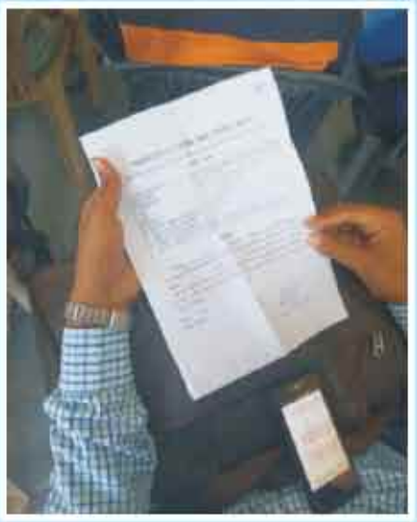

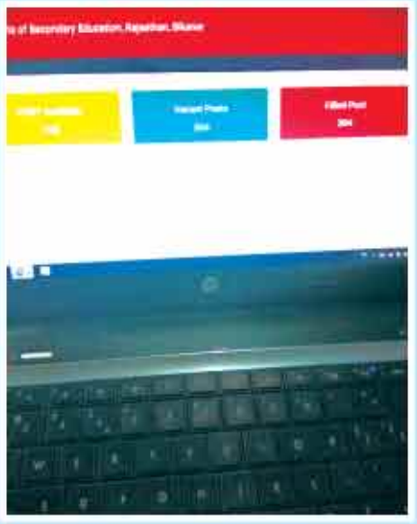

शिक्षा विभाग में नियुक्तियों में काउंसिलिंग से पदस्थापन प्रक्रिया सरल, सम्वेदनशील और पारदर्शी है। आशार्थी काउंसिलिंग से पूर्व नेट पर ही रिक्त पदों की स्थिति जानकर सहमति पत्र में अपने इच्छित स्थान का उल्लेख करते हैं। मार्गदर्शन के लिए काउंसिलिंग स्थल पर ही प्रोजेक्टर पर रिक्त पदों की जानकारी मिलती रहती है। वेबसाइट पर भी आशार्थी को रिक्त और चयनित हो चुके पदों की सूचना अद्यतन मिलती रहती है जो कि पारदर्शिता का अनुपम उदाहरण है। नियुक्तियों में काउंसिलिंग से पदस्थापित हो रहे आशार्थी न केवल संतुष्ट हैं अपितु प्रशासन की पारदर्शी व्यवस्था से अभिभूत भी हैं।

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334001

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 5 | कार्तिक-मार्गशीर्ष २०७३ | नवम्बर, 2016

प्रधान सम्पादक
बी.एल. स्वर्णकार
❁
वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया
❁
सम्पादक
गोमाराम जीनगर
❁
सह सम्पादक
मुकेश व्यास
❁
प्रकाशन सहायक
नारायण दास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- शिक्षा का उद्देश्य 5

आलेख

- कालिदास की कृतियों में चित्रित प्राकृतिक पर्यावरण अब कहाँ! 6
  रमेश कुमार शर्मा
- महान सन्त : गुरु नानक देव 8
  थानाराम जाट
- धन नानक तेरी वडी कमाई 10
  हरप्रीत सिंह कंग
- आधुनिक भारत के लाल-जवाहरलाल 12
  नारायण लाल टाक 'माली'
- भारत रत्न-मौलाना आजाद 13
  सरदार सिंह चारण
- बोझ बस्ते का 14
  भूरमल सोनी
- शिक्षा से जुड़ी अपेक्षा 15
  सुभाष चन्द्र कस्वाँ
- 21 वीं सदी में शिक्षकों की बढ़ती जवाबदेही 16
  डॉ. मुकेश कुमारी
- बस्ते का बोझ कैसे कम हो? 18
  शंकर लाल माहेश्वरी
- कैसे हो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार 19
  सुरेन्द्र माहेश्वरी
- शिक्षा और जीवन निर्माण 21
  शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'
- पृथ्वी, सूर्य और राशियाँ 23
  उमेश चौहान
- आदर्श वाक्यः संस्थाओं की पहिचान 31
  डॉ. प्रतिष्ठा पुरोहित
- प्राणवान शिक्षा : शिक्षक एवं समाज 33
  हरीश कुमार शर्मा
- सह-शैक्षिक गतिविधियाँ : संस्था प्रधान की भूमिका 35
  मंजू वर्मा
- विद्यालय का समाजीकरण 37
  वृद्धिचन्द गोठवाल
- नन्हे फूल 38
  मंजू मीणा

शोध आलेख

- उच्च माध्यमिक स्तर पर आपदा प्रबंधन के प्रति शिक्षकों की जागरूकता 39
  डॉ. फरज़ाना इरफ़ान

मासिक गीत

- उन सैनिक मतवालों का 17
  संकलनकर्ता-**डॉ. विष्णुदत्त जोशी**

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-30
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- शिविरा पञ्चाङ्ग (नवम्बर-दिसम्बर 16) 30
- चतुर्दिक समाचार 47
- शाला प्रांगण से 48
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 43-46

- भारत में सुकरात : शिवरतन थानवी
  समीक्षक-**डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल**
- आज का सच : एन.सी. आसेरी
  समीक्षक-**दुलीचंद स्वामी**
- दोहों में दुर्गादास : मोहन लाल गहलोत
  समीक्षक-**डॉ. कृष्णा आचार्य**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर
मो. 9414142641

▼ *चिन्तन*

न चोरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।

व्यये कृते वर्धते एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधन प्रधानम्।।

सरलार्थ-विद्यारुपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, राजा ले नहीं सकता, भाइयों में उसका भाग नहीं होता, उसका भार नहीं लगता, (और) खर्च करने से बढ़ता है। सचमुच, विद्याधन सर्वश्रेष्ठ धन है।

पाठकों की बात

- शिविरा माह अक्टूबर, 2016 का अंक प्राप्त हुआ। मुखावरण पृष्ठ पर महापुरुषों व नन्हे-मुन्ने बालकों की तस्वीर देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। दिशाकल्प में निदेशक महोदय के विचार सारगर्भित लगे। 'सबल राष्ट्र के सशक्त नागरिक' सराहनीय लगा। भारत के दो महानायक गाँधी और शास्त्री जी का व्यक्तित्व विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक है। दैनिक जीवन में स्वच्छता की सर्वोपरिता अब हमें स्वीकारनी चाहिए। स्वच्छता अभियान प्रत्येक नागरिक का प्रत्येक नागरिक के लिए अच्छे स्वास्थ्य की दिशा में बढ़ने वाला बुनियादी कदम है। अकटूबर 2016 का अंक समग्र रूप से आकर्षक और संग्रहणीय सामग्री का अंक है। सम्पादक मण्डल का हृदय से आभार एवं धन्यवाद।

-भंवरलाल वर्मा, जोधपुर

- शिविरा पत्रिका का अक्टूबर 2016 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। अक्टूबर 2016 अंक दीपोत्सव के साथ दशहरा तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी व दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के जन्म दिवस के कारण महत्त्वपूर्ण बन गया है। नवरात्रा भी इसी माह में होने के कारण भारतीय संस्कृति व अध्यात्म की दृष्टि से यह माह सर्वश्रेष्ठ ही कहा जायेगा। इन्हीं सब बातों को लेकर इस अंक का मुखावरण पृष्ठ आकर्षक व सराहनीय लगा। 'अपनों से अपनी बात' में हमारे शिक्षामंत्री जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय की जन्म शताब्दी वर्ष पर उन्हें याद करना व शिक्षा जगत को उनके योगदान को बताना प्रशंसनीय व अनुकरणीय है। दीपावली के पश्चात के समय का सदुपयोग विद्यार्थियों के हित में करने का आह्वान शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होगा। संस्था प्रधान व शिक्षाधिकारियों को छात्र-छात्राओं का सम्बलन करने की प्रेरणा अनुकरणीय है। 'दिशाकल्प'-सबल राष्ट्र के सशक्त नागरिक में निदेशक महोदय ने स्वच्छता और स्वास्थ्य के महत्व को इंगित करते हुए शैक्षिक वातावरण को प्रभावी और आनन्ददायी बनाने, अध्यापन के अनुकूल परिस्थिति बनाने की प्रेरणा शिक्षक समुदाय को दी, जो उपयोगी होगी। शाला प्रबन्धन व समयबद्ध कार्ययोजना से विकास के नये रास्ते खुलेंगे। 'शिविरा को सब गले लगाते' कविता शिविरा पत्रिका के महत्व को प्रकट करती है। राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान की रिपोर्ट शिविरा के माध्यम से पढ़कर ऐसा महसूस होता है कि जैसे प्रत्यक्ष ही समारोह में उपस्थित हों। सारगर्भित रिपोर्ट पाठकोपयोगी लगी। दीपावली पर्व पर विशेष आलेख 'दीपोत्सव' की महत्ता व दीपावली पर घरों में होने वाली सफाई व सज्जा को बखूबी बयान करती है। यह पर्व हमारी संस्कृति व सौहार्द्र का पर्व है। गाँधी जयन्ती व शास्त्री जयन्ती पर दोनों आलेख नव-राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान का वर्णन करते हैं। महात्मा गाँधी ने अपना जीवन राष्ट्र के लिए होम कर दिया, अहिंसा व सत्य के सिद्धांत पर उनकी विचारधारा पूरे विश्व में अनुकरणीय है। शास्त्रीजी का त्यागमय जीवन विद्यार्थियों के लिए प्रेरक और अनुकरणीय है। शास्त्री व गाँधी जी जैसे महापुरुष हजारों वर्षों बाद ही जन्म लेते हैं।
डॉ. अब्दुल कलाम का जन्म भी अक्टूबर मास में होने और सम्बन्धित सामग्री प्रकाशन के कारण शिविरा के इस अंक की गरिमा और बढ़ जाती है। डॉ. कलाम ने जीवन में जो संघर्ष किए व इन संघर्षों व दृढ़ निश्चय के कारण ही वे सर्वोच्च पद पर पहुँचे तथा समस्त भारतीयों के दिलों में बस गए। प्रेरणादायी जीवन है उनका। अन्य स्थायी स्तम्भ स्तरीय लगे। शिविरा का कलेवर प्रतिमाह नये स्वरूप में पाठकों के सामने आ रहा है। शिविरा की पूरी टीम मेहनत के साथ शिविरा को गौरवान्वित कर रही है। बधाई।

-रामजीलाल घोड़ेला, बीकानेर

- शिविरा का वर्षों से पाठक हूँ। राजस्थान से दूर बैंग्लोर में शिविरा हर माह 15-18 तारीख तक मिल जाती है। बेसब्री से इंतजार रहता है। शिविरा पढ़कर राजस्थान से जुड़े रहने का भाव बना रहता है। आनन्द मिलता है, शुभकामनाएँ।

-ओटमल पटनी, बैंग्लोर

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा, जीवन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उचित शिक्षा से मूल्यवान समाज का निर्माण संभव है। शिक्षा से ही हम अपनी ज्ञानात्मक परम्परा को आगे बढ़ाते हैं। महान दार्शनिक जिद्दू कृष्णामूर्ति का मानना है– ''शिक्षा में तकनीकी पर अतिरिक्त बल जीवन की समग्रता और उसकी प्रक्रिया के बोध को सीमित करता है इसलिए वास्तविक शिक्षा वह है जो तकनीकी कौशल के साथ–साथ जीवन की समग्रता को समझने में मनुष्य की सहायता करे।''

शिक्षक और शिक्षा की प्रक्रिया को इस बात के प्रति सावधानी बरतनी होगी कि ''शिक्षा के नाम पर हम अपने पूर्वग्रहों और अवधारणाओं को बच्चों के मन में रोप कर उनकी स्वतन्त्रता को सीमित न करें।'' व्यक्ति का विकास तभी होगा जब उसकी शिक्षा स्वतन्त्रता के अनुभव को विकसित करे। शिक्षा का उद्देश्य है सही रिश्तों की स्थापना। शिक्षक, विद्यार्थी और समाज का प्रत्येक व्यक्ति 'स्व' को पहिचाने, 'स्व' की पहिचान के साथ जीवन की समग्रता को समझे।

शिविरा नवम्बर 2016 का यह अंक आप तक पहुँचेगा तब तक आप दीपावली, अवकाश विशेष मनाकर विद्यालयों में नई ऊर्जा के साथ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को और प्रभावी रूप से क्रियान्वित कर रहे होंगे। विद्यालय का समग्र वातावरण, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से पूर्ण उत्कृष्टता लिए हो ऐसा प्रयास हमारा होना ही चाहिए।

आशा है सभी कर्मचारी, अधिकारी और शिक्षक, पूर्ण मनोयोग से श्रेष्ठतम सेवाएँ देकर कर्तव्यपूर्णता के अतुलनीय आनन्द की अनुभूति करेंगे।

मंगलकामनाओं सहित!

(बी.एल. स्वर्णकार)

"शिक्षा का उद्देश्य है सही रिश्तों की स्थापना। शिक्षक, विद्यार्थी और समाज का प्रत्येक व्यक्ति 'स्व' को पहिचाने, 'स्व' की पहिचान के साथ जीवन की समग्रता को समझे।"

कालिदास जयन्ती

कालिदास की कृतियों में चित्रित प्राकृतिक पर्यावरण अब कहाँ!

❐ रमेश कुमार शर्मा

भारतवर्ष वनजीवियों और पशुपालकों का देश है, उन्नीसवीं शताब्दी तक हमारे देश के संबंध में ऐसी वैश्विक मान्यता बनी रही। भारतीय वनों की सघनता, जैववैविध्य, (भाँति-भाँति के पशु-पक्षियों एवं वनस्पतियों की उपस्थिति), औषधीय वनस्पतियों अर्थात् जड़ीबूटियों और पर्यावरण या जीवमंडल के विकास में तादात्म्यपूर्ण भावप्रवण मनुष्यों (विशेषकर ऋषि-मुनियों) की भूमिका का उत्कृष्ट चित्रण भारतीय वाङ्मय वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि में हुआ है। ईसा से तीन शताब्दी पूर्व के भारतीय नीतिविद् चाणक्य ने अपनी कृति 'अर्थशास्त्र' में प्राकृतिक संसाधनों एवं ऋत् (प्राकृतिक व्यवस्था) के प्रति मनुष्य के समर्पण भाव को नीति का वैसा ही प्रधान तत्त्व माना है जैसा कि सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों के प्रति दायित्व है। इसी क्रम में चौथी ईसवी शताब्दी (संभवतः) के संस्कृत कवि एवं नाटककार कालिदास अपनी कृतियों रघुवंश महाकाव्य, कुमारसंभव, मेघदूत, अभिज्ञान शाकुन्तलम् आदि में सघन वनों का मनोरम चित्रण करते हैं, हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य और उपवनों का चित्ताकर्षक चित्र उतारते हैं, नदियों और तड़ागो का भी सुन्दर वर्णन करते हैं। अपनी कृतियों में प्राकृतिक सौंदर्य को अपनी अनुपम चमत्कारिक भाषा प्रदान करने के कारण कवि कालिदास को संपूर्ण विश्व 'प्रकृति का कवि' कहकर पुकारता है।

कवि के कालखंड पर विवाद

इतिहासकार महाकवि कालिदास के कालखंड पर एक मत नहीं है। एक मान्यता के अनुसार कालिदास ईसा से 1500 वर्ष पूर्व के कवि हैं, जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार वे ईसा से 400 वर्ष पश्चात के कवि हैं जो चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के राज्य में उज्ज्यनी में रहे। कुछ इतिहासकार कालिदास को राजा भोज के समकालीन ईसा पश्चात 9 वीं शताब्दी के मानते हैं। तीनों मान्यताएँ तो तभी सत्य हो सकती हैं

जब कालिदास नाम के एक कवि ने कम से कम 2400 वर्ष का जीवन जिया हो अथवा उपर्युक्त तीनों कालखंडों में कालिदास नाम के अलग-अलग कुल तीन कवि हुए हों। परन्तु कालिदास ईसा पश्चात् चौथी सदी में चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समकालीन थे, यह मान्यता सर्वाधिक बलवती है।

कालिदास का कृतित्व

महाकवि कालिदास का कालखंड विवादित रहा है, अतः कालिदास रचित ग्रंथों की भी बड़ी सूची है। परन्तु जैसा कि ईसा पश्चात् 400 वर्ष का उनका कालखंड होने की मान्यता प्रचंड है, उनकी सात कृतियाँ सर्वाधिक चर्चित हैं। आधुनिक विद्वान मानते हैं कि कालिदास ने दो महाकाव्य रघुवंश एवं कुमारसंभव, दो खंडकाव्य ऋतुसंहार एवं मेघदूत और तीन नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम, मालविकाग्निमित्रम् एवं विक्रमोर्वसियम् की रचना की।

कालिदास के महाकाव्य

रघुवंश महाकाव्य में कवि कालिदास ने सूर्यवंशी राजाओं के प्रकृति प्रेम को रेखांकित करते हुए उनके धीरोदात्त चरित्र का वर्णन किया है। उदाहरणार्थ वे लिखते हैं कि गुरु वसिष्ठ के परामर्श पर अयोध्या के प्रतापी राजा दिलीप नन्दिनी गाय का उसकी छाया की भाँति अनुसरण करते हैं। यह महाकाव्य ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है जो पशुपालन और पशुधन के लिए तुणादि-युक्त भूमि तथा वन-वनस्पति की रक्षा और उसके निमित्त सिंहादि वन्य जीवों के संरक्षण का संदेश देते हैं। वन्य जीवन से नीति की शिक्षा भी रघुवंश महाकाव्य में पढ़ने को मिलती है जैसे, 'न हि सिंहो गजास्कंदी भयाद्गिरिगुहाशयः (सिंह भारी भरकम हाथियों से डरकर पर्वत-गुफा में नहीं छिपा रहता)।

कुमारसंभव महाकाव्य में दर्शाया गया है कि हिमालय पर्वत पर प्रकृति कैसे अद्भुत आह्लादकारी स्वरूप में समुपस्थित है। पर्यावरण के प्रति कालिदास की जागृत अन्तश्चेतना प्रकृति की भावुकताओं का चितराम प्रस्तुत करती है। भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र कुमार कार्तिकेय के जनम की लोककल्याणकारी कथा-प्रस्तुति का महाकाव्य कुमारसंभव गिरिराज हिमालय की भारतवर्ष में स्थिति के वर्णन और पृथ्वी पर ऊँचाई के मानदण्ड के रूप में उसका महिमागान करते हुए प्रारंभ होता है-

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः
पूर्वापरौ वानिनिधीं विगाह्य
स्थितः पृथिव्याः इव मानदंड।

कालिदास गंगा नदी के प्रवाह एवं निर्मलता के मूल में विशाल वृक्षों, जैसे देवदार की उपस्थिति को मानते हुए लिखते हैं, 'भागीरथी निर्झरिणी काराणां वोटामुहुः कुप्पित देवदारूः।' कालिदास ने कुमारसंभव महाकाव्य में धर्मपालन में शारीरिक स्वास्थ्य की भूमिका रेखांकित करते हुए लिखा, 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् (निश्चित रूप से शरीर ही धर्म का प्रथम साधन है)।' कालिदास ने यह भी लिखा कि जो व्यक्ति धर्म के मार्ग पर चलता है, उसकी आयु पर समीक्षा या विचार नहीं किया जाता, वह धर्मवृद्ध होता है अर्थात् अल्पायु होने पर भी धर्माचरण करने के कारण वृद्ध के समान पूजनीय

है, 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।'

कालिदास के खंडकाव्य

ऋतुसंहार खंडकाव्य में कवि कालिदास ने भारतवर्ष की छह ऋतुओं का सुन्दर चितराम् प्रस्तुत किया है। जीवों और प्रकृति के बीच तारतम्यता की स्थापना करते हुए कवि ने मनुष्य को भी जीवमंडल का अंगभूत घटक माना है। कवि ने कहना चाहा है कि विभिन्न ऋतुओं का प्रभाव सभी वनस्पतियों और पशु-पक्षियों पर पड़ता है तो भला मनुष्य पर क्यों नहीं। उदाहरणार्थ ग्रीष्म ऋतु का प्रभाव रेखांकित करते हुए वे लिखते हैं कि ग्रीष्म ऋतु में उष्णता से विमुक्ति पाने के लिए स्त्रियाँ चन्दन लेप और अन्य शीतल प्राकृतिक प्रसाधनों का उपयोग करने लगती हैं।

मेघदूत खंडकाव्य में विभिन्न पर्वतों, नदियों, झीलों, पशुओं, वनस्पतियों, पुष्पों में प्रकृति के मूल तत्व को कवि ने खोजने की चेष्टा करते हुए अखिल सृष्टि में इस पर्यावरण तत्व की भूमिका रेखांकित की है। उल्लेखनीय है कि इस खंडकाव्य में एक लघुकथा चलती है जो प्राकृतिक पर्यावरण के आलोक में बड़ा आकार ग्रहण करती है। रामगिरि पर्वतक्षेत्र का एक यक्ष सुदूरस्थ अलका नगरी में रह रही यक्षिणी को संदेश भेजने के लिए बादलों की एक टुकड़ी से निवेदन करता है। वह मेघमाला यक्ष का संदेश सुनकर उसे यक्षिणी को सुनाने के लिए रामगिरि से अलका की ओर प्रस्थान कर देती है। कालिदास मेघमाला के संचलन मार्ग का वर्णन करते हुए अमरकूट एवं विन्ध्याचल पर्वतों और नर्मदा, वेत्रवती, गंधावरी एवं गभीरा नदियों का सजीव वर्णन करते हैं। वे अलका नगरी के प्राकृतिक सौंदर्य को भी कलम से भली भाँति उकेरते हैं। उदाहरण के तौर पर यक्ष मेघमाला को अलका नगरी की पहचान बताते हुए कहता है कि स्त्रियों को देखकर अलका को पहचाना जा सकता हैः जहाँ स्त्रियाँ हाथ में लीला कमल धारण करती हैं, केशों को कुन्द के पुष्पों में गूँथती हैं, मुखमंडल को लोध्र पुष्प की श्वेतता (सफेदी) से रंजती हैं, वेणी में कुश एवं पुष्प, कानों में सुन्दर शिरीष पुष्प और मस्तक पर कदम्ब पुष्प धारण करती हैं, समझिये वही अलकापुरी है।

हस्ते लीला कमल के वालकुन्दानिविद्धम्।
नीतालोध्र प्रसवरजसा, पाण्डुतामाननेश्रीः
चूडापाशे नवकुरवकं चारूकर्णे शिरीषम्।
सीमन्ते च त्वदुपगमनं यत्रनीपंबधूनाम्।

कालिदास के नाटक

अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक में कालिदास ने प्रकृति और जीवन का तारतम्य तथा सभी जीवों का सहअस्तित्व दर्शाया है। मनुष्य भी जीवमंडल का घटक या सदस्य है। इस नाते मनुष्य के प्रकृति से तादात्म्य भाव का गूढ़ आशय नाटक में रेखांकित हुआ है कि किस प्रकार पेड़ पौधे और जन्तु मानवजाति के साथ सुख-दुत्ख में भावनाएँ साझा करते हैं जैसा कि कण्व ऋषि के तपश्चर्या कुंज का संपूर्ण जीवमंडल शकुन्तला को विदाई देते हुए शोकमग्न हो जाता है।

मालविकाग्निमित्रम् नाटक में राजा अग्निमित्र और मालविका की प्रेमकथा के माध्यम से वनस्पति जगत और जीव जगत के साथ-साथ विभिन्न ऋतुओं तथा आकाश, मेघमालाओं, सूर्य, चंद्रमा आदि पर मनुष्य की निर्भरता दर्शायी गई है। नाटक के कुछ दृश्यों में तो लगने लगता है मानो पशु-पक्षी मनुष्य से अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है। उदाहरणार्थ राजाओं से आनन्दमग्न कोकिलाएँ पूछती हैं, 'क्या प्रेम की यंत्रणा सहन करने योग्य होती है?'

विक्रमोर्वशीयम् नाटक में कालिदास राजा पुरुरवा के उर्वशी से वियोग होने पर उसे खोजता है और उस प्राकृतिक छटा के दर्शन करता है जहाँ उसे उसकी प्रियतमा से बहुत समानता रखने वाली बहुत सी वस्तुएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उसे लगता है कि उर्वशी बहुरुपिया है जो भिन्न-भिन्न रूप धारण कर प्रकृति में समा गई है। यह नाटक भी प्राकृतिक पर्यावरण से कालिदास के हार्दिक जुड़ाव को दर्शाता है।

कालिदास साहित्य की चिर प्रासंगिकता

आज कहाँ हैं वे हरे भरे वन-उपवन, स्वच्छन्द कलकल कर बहती नदियाँ और मनुष्य का जीव जगत से एकात्म भाव। मानवजाति ने अपने हाथों से भारतवर्ष का पर्यावरण नष्ट कर दिया है। कालिदास की चिर प्रासंगिक कृतियाँ आज की परिस्थिति में और अधिक प्रासंगिक है। ये कृतियाँ हमें बताती हैं कभी हिमालय आदि पर्वतमालाएँ जैव वैविध्य से कितनी भरपूर थीं। भारतवर्ष में पानी की तो क्या बात, घी-दूध की नदियाँ बहती थीं। संपन्न, सुखी-समृद्ध भारतवर्ष बनाने के लिए मनुष्य को जीव-जगत के साथ एकात्मकता का भाव सरसाना होगा, कालिदास साहित्य का यही संदेश है।

6/134 मुक्ता प्रसाद नगर
बीकानेर (राज.)
मो. 9636291559

अतीत कभी नहीं भूला

बिल गेट्स सुबह के नाश्ते के लिए एक रेस्टोरेंट में पहुँचे। जब उन्होंने नाश्ता समाप्त कर लिया और वेटर बिल ले आया, तब उन्होंने भुगतान के अलावा पाँच डालर बतौर टिप ट्रे में रख दिए। वेटर ने टिप तो ले लिया पर उसके मुँह पर आया हुआ आश्चर्य का भाव गेट्स की दृष्टि से ओझल न रह सका। उसी को भाँपते हुए उन्होंने पूछा-क्या कोई खास बात है?

वेटर ने कहा- ''जी, अभी दो दिन पहले की बात है इसी मेज पर आपकी बेटी ने लंच किया और मुझे बतौर टिप पाँच सौ डालर दिये थे और आप उनके पिता दुनिया के सबसे अमीर आदमी होने के बावजूद मुझे केवल पाँच डालर दिये हैं।''

मुस्कुराते हुए गेट्स बोले- ''हाँ, क्योंकि वह दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति की बेटी है और मैं एक लकड़हारे का बेटा हूँ। मुझे अपना अतीत सदा याद रहता है, क्योंकि वह मेरा सर्वोत्तम मार्गदर्शक है।''

-साभार

जयन्ती विशेष

महान सन्त : गुरु नानक देव

❒ थानाराम जाट

भारत भूमि उन वीर प्रसूता संतों की जन्म भूमि रही है, जिन्होंने जनमानस में सच्चे अध्यात्म का बीजारोपण किया है । संत पुरुषों ने त्याग, तपस्या एवं अपने आचरण व्यवहार से नये कीर्तिमान स्थापित कर मानव जाति का उद्धार किया है । ऐसे अनेक महान् संत इस भारत भूमि में पैदा हुए हैं। संत विनोबा भावे, समर्थ गुरु रामदास, महात्मा श्रद्धानन्द, महात्मा आनन्द स्वामी, संत कबीर आदि के साथ ही लाहौर के छोटे से गांव में जन्मे महान समाज सुधारक संत गुरु नानक देव का नाम बड़े आदर एवं श्रद्धा से लिया जाता है ।

जन्म एवं बाल्यकाल:– गुरु नानक देव का जन्म लाहौर के पास तलवंडी नामक गाँव में सन् 1466 ई. में हुआ था, जो उन दिनों भारत का हिस्सा था। उनके पिता कालूराम पटवारी एक सरकारी काम करने वाले सामान्य सद्गृहस्थ थे। वे खेतीबाड़ी भी किया करते थे। नानक के जन्म की कई कथाएँ प्रचलित हैं। कहते हैं कि जन्म के समय गर्भ से बाहर आते ही वे रोने की बजाय हँसने लगे थे। एक बार धूप से बचाने के लिए जंगल से निकलकर एक साँप ने फन फैलाकर उन पर छाया कर दी थी। वे अन्य बालकों के समान खेलने कूदने के शौकीन न होकर आध्यात्मिक विषयों में अधिक रुचि रखते थे। आंतरिक ज्ञान तो छोटी अवस्था में ही प्रकट होने लग गया था। जब एक पंडित ने उन्हें अक्षरों का अभ्यास कराया तभी उन्होंने कहा कि ये क ख ग आदि केवल अक्षर नहीं वरन् परमात्मा की एकता तथा उनके स्वरूप का रहस्य है। इसी प्रकार किसी मौलवी ने फारसी और अरबी सिखाने की चेष्टा की और इस्लाम की विशेषता बताई तो उनको भी ऐसे ही उत्तर दिया।

छोटी आयु में ही वे चाहे जब जंगल में चले जाते और एकांत वातावरण में प्रभु का ध्यान करते थे। कभी-कभी ऐसे महात्माओं से भेंट हो जाती थी जो उनको आध्यात्मिक रहस्य बतलाकर इस मार्ग में आगे बढ़ने का उपदेश देते थे ।

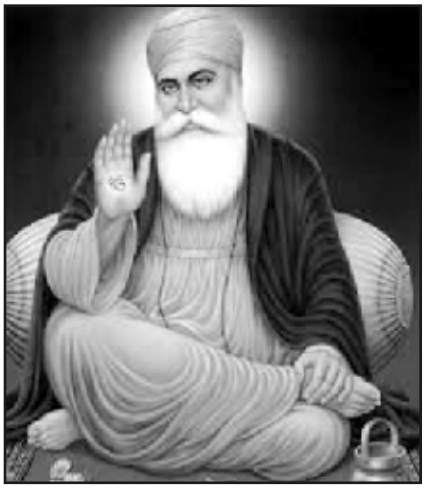

कुल की परंपरा के अनुसार 9 वर्ष की आयु में उनका यज्ञोपवीत संस्कार करवाया गया। जब नानक जी का भजन भाव बहुत बढ़ गया, उन्हें खाने पीने का ध्यान नहीं रहता था तो उनके माता पिता को चिन्ता हुई और उन्होंने समझा कि पुत्र को कोई रोग हो गया है। इसलिए उन्होंने एक वैद्य को परीक्षण कर दवा देने को कहा । वैद्य जब नाड़ी देखने लगा तो नानक ने उसका आशय वचन कहा –

वैद बुलाया बैदगी, पकड़ ढंढोले बाँह।
भोला वैद न जानइ, करक कलेजे माँह।।

अर्थात् – '' मेरा इलाज करने के लिए वैद्य बुलाया है और वह हाथ पकड़ कर जाँच कर रहा है पर बेचारा भोला वैद्य यह नहीं जानता कि पीड़ा तो हृदय में है ।

गुरु नानक का दृष्टिकोण – बाल्यावस्था से ही उनमें सत्य, अहिंसा, संयम आदि सद्गुण भरपूर मात्रा में थे। उनकी विशेषता थी कि अन्य साधु महात्माओं की तरह उन्होंने संसार नहीं छोड़ा और संसार रूपी माया में रहकर संसार को दिशा देते हुए निर्लिप्त जीवन जीया। वर्तमान समाज में बड़े महात्मा का यह लक्षण समझ लिया गया है कि घर गृहस्थी को त्यागकर दूर वन पर्वतों में जा बैठे और संसार से कोई मतलब न रखे। पर ये विचार किसी प्रकार अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता क्योंकि समाज की सहायता और सहयोग के बिना व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता। यदि मनुष्य ज्ञानियों और विद्वानों से तथा शास्त्र एवं ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त करता है तो वह समाज की ही देन है। इस प्रकार समाज से शक्ति, सामर्थ्य और ज्ञान प्राप्त कर जंगल में एकांत में जाकर बैठना और उस प्राप्त सम्पदा का समाजहित में उपयोग न करना स्पष्टत: अपने कर्तव्य पालन से विमुख होना ही है। नानक जी ने अपनी वाणियों में अनेक जगह स्पष्ट किया है कि –

जोग न खिंथा जोग न डंडे जोग न भस्म चढ़ाइये।
जोग न मुँदी मुंड मुंडाइये, जोग न सिंगी वाइये।।
अंजन माही निरंजन रहीये जोग जुगति तउ पाइये।

अर्थात् –''भगवा कपड़ा पहन लेने, दण्ड धारण कर लेने, भस्म लपेट लेने, मूंड मुंडा लेने और शंख बजाने से योग नहीं हो सकता। ये बाह्य उपकरण हैं। सच्चा योग तो वह है जब मनुष्य माया के संपर्क में रहकर भी अप्रभावित रह सके। घर बार छोड़ कर वन उपवन में जा बैठने से योगी की निर्लिप्तता का कोई प्रमाण नहीं मिलता क्योंकि जब किसी प्रकार के प्रलोभन की सामग्री उपलब्ध न हो तो त्यागी और संयमी रह सकने का अधिक महत्व नहीं माना जा सकता।

नारी के प्रति विचार– अधिकांश संतों ने नारी की निंदा ही की है और उसको परमार्थ का विरोधी, नरक का द्वार ही बताया है। कबीर जैसे स्वतंत्र चिन्तक ने भी ''कामिनी काली नागिनी तीनों लोक मँझारी'' कह कर नारी को सर्पिणी बताया है। तुलसीदास जैसे महान भक्त ने भी

''सुन मुनी कह पुराण श्रुति संता।
मोह विपिन कह नारी बसंता।।''
''जप तप नेम जलाश्रय झारी।
होई ग्रीषम सोखई सब वारी।।''

स्त्री को पुरुष के धर्म-कर्म, आध्यात्मिक साधन को नष्ट करने वाला बताया है। अधिकांश मध्यकालीन 'साधु-संत' नारी को संसार का बंधन बतलाकर उसे हीन समझा है। घोर नारी निंदक युग में रहते हुए नानक ने नारी के महत्व

को स्वीकार किया है –

'' सौ किउँ मंदा आखिऐ जिस जम्मे राजान।''

अर्थात् उस नारी को किसलिए बुरा कहा जा सकता है जो बड़े-बड़े राजाओं (महान पुरुषों) को जन्म देती है। आगे चलकर भी नानक ने 'मिष्ट भाषिणी' सदैव पति का ध्यान रखकर श्रेष्ठ आचरण करने वाली सुहागिन स्त्री को धन्य बताया है।

पारिवारिक जीवन:– उन्होंने कहा कि उसी मनुष्य का जीवन सार्थक है जो परिश्रम करके नीतिपूर्वक धन उपार्जित करके समाज में जरूरतमंदों की सहायता करता है।

परिवार वालों के आग्रह पर उन्होंने अठारह वर्ष की आयु में विवाह कर लिया लेकिन लम्बे समय तक साधु संतों के साथ रहकर अपने आध्यात्मिक जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहे लेकिन उनकी पत्नी को दु:ख होता था। इसलिए एक दिन उनकी बड़ी बहिन 'नानकी' ने बड़े प्रेम से समझाया कि तुम अब परिवार वाले हो गये हो, तुम्हें घर पर ही रहना चाहिए। इस बात को वे मानकर घर पर ही रहने लगे और कुछ वर्षों बाद उनके दो पुत्र श्रीचंद और लक्ष्मीचंद हुए। इनमें श्री चंद ने सिख धर्म के 'उदासी' सम्प्रदाय की स्थापना की तथा लक्ष्मीचंद ने घर की व्यवस्था को सम्भालकर समृद्धि को बढ़ाया। अपने पिता के देहांत पर नानक जी ने पूर्वजों की सब संपत्ति दोनों पुत्रों में बांट दी और स्वयं सांसारिक प्रपंच से दूर ही बने रहे। उनके घर में साधु संतों के लिए हमेशा सदावर्त सा लगा रहता था।

गुरु नानक का भारत भ्रमण– भटकती हुई मानवता की दशा-दिशा सुधारने के लिए गुरु नानक तीस वर्ष की आयु में ही सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर सत्य मार्ग का उपदेश देने निकल पड़े।

एक बार उन्होंने कुम्भ क्षेत्र हरिद्वार नगरी में गंगा किनारे लोगों को स्नान कर पूर्व दिशा में सूर्य को जल अर्पित करते देखा तो वे भी स्नान कर पश्चिम की तरफ मुँह कर जल देने लगे। लोगों ने समझा कि बेचारे को दिशा का ज्ञान नहीं होने से उल्टी तरफ जल दे रहा है। इसलिए कहने लगे- '' साधु बाबा! पूर्व तो इधर है आप पश्चिम में जल क्यों दे रहे हैं ।'' नानक बोले अगर आपका दिया हुआ जल करोड़ों मील दूर सूर्य तक पहुँच सकता है तो मेरा दिया जल भी मेरे खेतों में पहुँच जायेगा। लोगों को गलती अनुभव हुई लेकिन इस परंपरा को इतने सहज में कौन तोड़ सकता है?

दूसरी घटना पश्चिम की ओर यात्रा करते करते नानक देव मक्का जा पहुँचे और रात को एक मस्जिद में सो गये। रात को अनजान से उनके पैर 'पवित्र काबा' की तरफ हो गये । किसी मुल्ला ने उनको डांटकर कहा '' तू तो बड़ा काफिर जान पड़ता है जो खुदा की तरफ पैर करके सो रहा है।'' नानक जी ने बडी नम्रता से कहा- ''मुल्ला जी मैं तो परदेशी बुड्ढा आदमी हूँ दिशा का ज्ञान नहीं होने से गलती कर बैठा, मेहरबानी करके मेरे पैरों को उस दिशा में कर दें जिधर खुदा का घर न हो। क्योंकि संसार में ऐसी कोई दिशा नहीं है जहाँ ईश्वर का निवास न हो।'' वह सिर नीचा करके चला गया। इस प्रकार उनके हृदय से निकले सच्चे उपदेशों को सुनकर हिन्दू और मुसलमान सभी लोग उनके अनुयायी बनते चले गये। गुरु नानक ने देश-विदेश की पंद्रह वर्षों तक यात्रा करते हुए अफगानिस्तान, ईरान, अरब और इराक तक हो आए। गुरु नानक ने समता भाईचारा की सुदृढ़ नींव रखी। उन्होंने अपने संगठन के नियम सरल सर्वोपयोगी बनाए कि उनका अनुसरण करना कठिन न जान पड़े।

नानक जी ने परमात्मा को जोरदार उलाहना देकर उस समय के देश के शासकों में बाबर आदि बड़े लोगों को फटकारा है कि तुमने कर्त्तव्य को बिसरा दिया और भोग विलास में डूब गये हो। उन्होंने कहा 'रतन बिगाड़ बिगोए कुती मुइआ सार न काई।' अर्थात् 'इन दुष्ट विलासी शासकों ने रतन के समान इस देश को बिगाड़ कर रख दिया। इनके मरने के बाद इन्हें कोई नहीं पूछेगा ।' खेद का विषय है कि इस प्रकार बाबर के द्वारा किए गए अत्याचारों के बाद भी लोगों की आँखें नहीं खुली।

दलितों के उद्धारक:– हिन्दू धर्म में व्याप्त छुआछूत आदि की कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए गुरु नानक देव ने जीवन भर भरसक प्रयत्न किया। एक बार उनके एक प्रिय शिष्य ने उन्हें सहभोज पर आमंत्रित किया । जब भोजन परोस दिया गया और ग्रहण करने का अवसर आया तब बोले कि भोजन बनाने वाले को भी बुलाया जाए इसके साथ ही दूर खड़े झाड़ू लगाने वाले को भी उन्होंने अपने पास बिठाकर सबके साथ भोजन ग्रहण कर समरसता का परिचय दिया। उन्होंने अपने पंथ में सामूहिक भोजन के लिए 'लंगर' का शुभारंभ इसी समता के लिए किया । हिन्दू धर्म में व्याप्त एक कहावत 'आठ कनौजिये नौ चूल्हे' वाली कहावत को अच्छी तरह देख लिया था इसलिए सबको समता का पाठ पढ़ाते हुए अलग-अलग पूजा पद्धतियों पर विश्वास न कर सभी की सामूहिक उपासना पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ईश्वर के रास्ते पर चलने वाले को न कभी रोना पड़ता है और न कभी पश्चाताप करना पड़ता है ।

एक महान समाज सुधारक– नानक अपने समय के महान समाज सुधारक थे। यद्यपि उन दिनों आवागमन के इतने साधन नहीं थे कि व्यक्ति अपने विचारों को सम्पूर्ण भारत में फैला सके इसलिए इनकी समाज सुधार की योजना पंजाब से आगे नहीं बढ़ सकी फिर भी इन्होंने समाज सुधार की ऐसी योजना रखी कि सबकी आँखे खोल दी। लगभग उस समय चैतन्य प्रभु और कबीर का आगमन भी हो चुका था। सबने अलग अलग ढंग से समाज सुधार को गति दी थी। उन दिनों हिन्दूओं में अनगिनत देवी देवताओं की पूजा, बलि प्रथा तथा छुआछूत का जंजाल बढ़ गया था। उसी का खात्मा करने के लिए उन्होंने धर्म का सरल संशोधित स्वरूप प्रस्तुत किया। इन्हें हिन्दू धर्म का उद्धारकर्ता भी कह दें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है ।

जीवन का सारांश– इस प्रकार गुरु नानक देव ने अपने निर्भीक एवं सच्चे उपदेशों द्वारा सभी धर्मो की रक्षा की। उन्होंने कहा कि ईश्वर एक है, सभी धर्म अलग अलग मार्ग द्वारा मनुष्य को उसी के समीप पहुँचाते हैं। धर्म का असली सार बाह्य पूजा, कर्मकांड और परंपराएँ नहीं हैं वरन् उसका असली तत्व है। अपने आप को जीतना, इन्द्रियों को वश में रखना, सुख-दु:ख हानि-लाभ में एक सा भाव रखना, नेकी और सच्चाई का व्यवहार करना इन सबके साथ भगवान को याद करते रहना ही है। हम नहीं समझते कि कोई धर्म इन्हें अस्वीकार करे । उनके यह उपदेश आज भी सभी धर्मशास्त्रों का सार है।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि., तिगरिया
चौमूं, जयपुर (राज.)

गुरु पर्व

धन नानक तेरी वडी कमाई

❒ हरप्रीत सिंह कंग

सतिगुरु नानक प्रगटिआ
मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ
तारे छपि अंधेरु पलोया।

–भाई गुरदास जी

अर्थात जब गुरुनानक देव जी प्रकट हुए अज्ञानता का अंधेरा दूर हो गया और ज्ञान का प्रकाश चारों तरफ फैल गया जैसे सूरज निकलने से तारे छिप जाते हैं व अंधेरा समाप्त हो जाता है।

सन् 1469 में राय भोये की तलवण्डी, जिला शेखुपुरा (वर्तमान ननकाना साहिब पाकिस्तान) में एक खत्री परिवार में पिता मेहता कल्याण दास व माता तृप्ता के घर नानक का जन्म हुआ। उस समय हिन्दुस्तान की धरती पर अज्ञानता, अत्याचार व अन्धविश्वास का अंधेरा छाया हुआ था। पिछली कई सदियों से लगातार विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा हिन्दुस्तान की सामाजिक, धार्मिक व शैक्षणिक संस्थाओं को नष्ट भ्रष्ट किया जा रहा था। उस समय धार्मिक स्वतंत्रता न के बराबर थी, लोग अपने घरों में छिप कर पूजा पाठ करते थे। शिक्षा व ज्ञान के अभाव में लोग अंधविश्वास, जात–पात ऊँच–नीच व आदिकाल से चली आ रही कुरीतियों के अन्धेरे में जी रहे थे। ऐसे समय में गुरु नानक देव जी ने देश–विदेश की यात्रा कर अपने उपदेशों से लोगों में जागृति पैदा करके अज्ञानता व अंधविश्वास के अन्धकार से बाहर निकाला व ज्ञान रूपी प्रकाश का रास्ता दिखाया।

अपने बाल्यकाल से ही नानक दयावान, दानवीर, आदिकाल से प्रचलित कुरीतियों का खण्डन करने वाले व चमत्कारिक व्यक्तित्व के धनी थे। इसका उदाहरण उस समय मिला जब नानक नौ वर्ष के हुए। उनके पिता मेहता कालू जी के कहने पर पण्डित हरदयाल जी ने नानक को जनेऊ धारण करने के लिए कहा तब बालक नानक ने जनेऊ धारण करने से मना करते हुए फरमाया–

दया कपाह सन्तोख सूत जत गंढी सत वट।।
एह जनेऊ जीअ का हई त पांडे घत।।

ना एह तुटै ना मल लगै ना एह जलै ना जाइ।।
धन सु मानस नानका जो गलि चले पाई।।
(गु.ग्र.सा.पन्ना–471)

अर्थात ''दया रूपी कपास, सन्तोष रूपी सूत, सदाचार व परहेज की गांठ और सत्य रूपी मरोड़ से बना जनेऊ ही जीव आत्मा के लिए है। पण्डित जी! ऐसा जनेऊ है तो मुझे पहना दो। ऐसा जनेऊ न कभी टूटता है, न मैला होता है, न कभी जलता है और न कभी गुम होता है। वे मनुष्य धन्य है, जो इस प्रकार का जनेऊ अपने गले में पहनते है।''

गुरुजी के पिता एक प्रतिष्ठित जमींदार व गाँव के पटवारी थे। पिता द्वारा खेती करने का आदेश देने पर गुरु जी ने सांसारिक खेती को आधार बनाकर आध्यात्मिक खेती करने की बात करते हुए इन शब्दों का उच्चारण किया।

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु।।
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु।।
भाउ करम करि जमंसी से घर भागठ देखु।।
बाबा माइआ साथि न होई।।
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ।।
(गु.ग्र.सा.पन्ना–595)

अर्थात अपने तन को खेत बनाकर मन के हल से खेती बाड़ी (साधना) करनी चाहिए। उसे श्रम के पानी से सींचना चाहिए। प्रभु के नाम का बीज बोना चाहिए। सन्तोष का सुहागा फिराकर मन में नम्रता धारण करते हुए प्रेम की फसल उगानी चाहिए, जो घर बार को सम्पन्न बना दे। इस संसार को मोह माया ने जकड़ रखा है, कोई विरला ही इससे बचा है।

आगे चलकर आपने 20 से भी ज्यादा वर्षों का समय चारों दिशाओं में पैदल चलकर मानव कल्याण के लिए चार लम्बी यात्राएं करने में बिताया। यात्राएं शुरू करने से पहले आपने नारा दिया–

''ना कोई हिन्दू ना मुसलमान।।''

व ईश्वर की सुन्दर परिभाषा की व्याख्या करते हुए गुरु ग्रन्थ साहिब की पहली पंक्ति में सुशोभित इन शब्दों का उच्चारण किया–

सतिनामु करता पुरखु निरभऊ निरवैरू
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।
(गु.ग्र.सा.पन्ना–1)

अर्थात् ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह सबकी रचना करने वाला है, वह डर से दूर है, उसको किसी से घृणा नहीं, न ही उसका किसी से वैर है, वह काल से परे है, वह जन्म मरण से मुक्त है, उसका अस्तित्व अपने आप है, उस ईश्वर की अनुभूति गुरु की कृपा से ही संभव है।

प्रचार यात्रियों के दौरान गुरु नानक जी ने अपने संदेश द्वारा सबको प्रभावित किया तथा सब लोगों के भ्रम दूर करके सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। पूरब दिशा में की गई प्रथम यात्रा के दौरान आप हरिद्वार, बनारस, प्रयाग, अयोध्या, पटना, आसाम, ढाका व जगन्नाथपुरी आदि स्थानों पर गए। दक्षिण दिशा की दूसरी यात्रा में मथुरा, उज्जैन, द्वारका, बीदर, रामेश्वरम व श्रीलंका तक गए। उत्तर दिशा की तरफ की गई तीसरी यात्रा में लाहौर, श्रीनगर, कश्मीर, तिब्बत, लद्दाख, सिक्किम व चीन आदि स्थानों पर गये। चौथी यात्रा में पश्चिम दिशा में स्थित मुल्तान, पेशावर, काबुल, कन्धार, तेहरान, बगदाद व मक्का–मदीना आदि स्थानों की यात्रा की।

राजस्थान के सन्दर्भ में देखें तो गुरु नानक देव जी ने अपनी दक्षिण दिशा की दूसरी यात्रा के

दौरान बीकानेर, कोलायत, पोकरण, अजमेर, पुष्कर व नाथद्वारा आदि स्थानों की यात्रा की थी।

मानव कल्याण व विभिन्न धर्मों के अध्ययन के लिए की गई इन प्रचार यात्राओं के दौरान आपको बहुत संकटों व विरोध का सामना करना पड़ा। लेकिन अपनी सूझबूझ, सद्व्यवहार, नम्रता व ईश्वर भक्ति के बल पर आप सभी रूकावटों को दूर कर देते थे व विरोधियों को भी अपना शिष्य बना लेते थे।

अपनी इन्हीं प्रचार यात्राओं के दौरान आप एक बार अपने शिष्यों बाला व मरदाना के साथ मुल्तान शहर पहुँचे, जहाँ बहावल हक नाम का एक अहंकारी फकीर रहता था। जब उसे गुरु जी के आने का पता चला तो उसने अहंकारवश गुरु जी की परीक्षा लेनी चाही उसने अपने एक शिष्य के हाथों एक दूध से भरा कटोरा गुरु जी के पास भेजा। जब उस शिष्य ने दूध से लबालब भरा कटोरा गुरु जी के सामने रखा तो गुरु जी ने अपनी जेब में से एक चमेली का फूल निकालकर उस कटोरे में डाल दिया व कटोरा वापिस बहावल हक के पास भेज दिया। बाला व मरदाना ने यह सब देख कर गुरु जी से पूछा, ''आपने दूध से भरा कटोरा वापिस क्यों न भेजा व उसमें चमेली का फूल क्यों डाला?'' गुरु जी ने उन्हें समझाया कि, ''यह दूध का कटोरा वास्तव में हमारे लिए एक प्रश्न था जिसका उत्तर मैंने भेजा है।'' गुरु जी ने उन्हें बताया कि, ''बहावल हक ने अहंकार में आकर हमसे प्रश्न किया था कि यह मुल्तान की धरती तो दूध से लबालब भरे कटोरे की भांति पहले ही पीरों फकीरों से लबालब भरी हुई है, आप यहाँ क्या करने आए है। मैंने चमेली का फूल डालकर यह उत्तर दिया कि हम यहाँ रहने के लिए नहीं आए हैं।'' जब वह शिष्य दूध का कटोरा लेकर वापिस बहावल हक के पास पहुँचा तो बहावल हक समझ गया कि गुरुजी कोई मामूली फकीर नहीं है। वह अन्य पीरों, फकीरों को साथ लेकर दौड़ कर गुरुजी के पास आया और क्षमा माँगी। गुरु जी ने उन्हें ईश्वर की भक्ति के साथ-साथ अपनी रिद्धियों व सिद्धियों पर अहंकार न करने व नम्रता के साथ जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया। नम्रता के महत्व को समझाते हुए गुरुजी ने यह वचन किए है-

सिंमल रुखु सराइरा, अति दीरघ अति मुचु।।
ओई जि आवहि आस करि, जाहि निरासे कितु।।
फल फिके फुल बकबके,कमि ना आवहि पत।।
मिठतु नीवी नानका, गुण चगिआईयां ततु।।
सभु को निवै आप कउ, पर कउ निवै न कोई।।
धरि तराजु तोलिए, निवै सु गउरा होई।।
अपराधी दूणा निवै, जा हंता मिरगाहि।।
सीसि निवाइए किंआ थीए, जा रिदै कुसुधे जाहि।।
(गु.ग्र.सा.पन्ना-470)

अर्थात सेमल का वृक्ष बिल्कुल सीधा, बहुत ऊँचा व बहुत घना होता है। पक्षी बहुत आशा के साथ उस पर आकर बैठते हैं परन्तु निराश होकर उड़ जाते है, क्योंकि उसके फल फीके व फूल कसैले होते है, पत्ते भी किसी काम के नहीं होते। हे नानक, मिठे वचन व नम्रता ही मनुष्य के जीवन की अच्छाइयों व नेकियों का निचोड़ है। हर कोई यहीं चाहता है कि सभी उसके आगे झुके, लेकिन स्वयं किसी के आगे झुकना नहीं चाहता। वह यह नहीं समझता कि तराजू में यदि कोई वस्तु तौली जाये तो झुका हुआ पलड़ा ही हमेशा भारी होता है। परन्तु जब तक मन में अहंकार का भाव है तब तक केवल सिर झुकाने का भी कोई लाभ नहीं है जैसे अपराध करने वाला व्यक्ति हिरण के शिकारी की भाँति दुगुना नीचे झुकता है। अतः प्रत्येक मनुष्य को अहंकार का त्याग करके अपने व्यवहार में नम्रता का भाव रखना चाहिए। गुरु जी आगे फरमान करते है-

हे मेरे मन! तू अपने ऊपर मान करना व अहंकार करना छोड़ दे तू परमात्मा प्रभू व उस प्रभू से मिलाने वाले गुरु की सेवा कर, तभी तू प्रभू के दरबार में इज्जत व मान प्राप्त कर सकेगा।

मन रे हऊमै छोडि गुमानु।।
हर गुर सरवर सेवि तू पावहि दरगह मानु।।1।।
(गु.ग्र.सा.पन्ना-21)

देश-विदेश की प्रचार यात्राएँ करने के पश्चात गुरु जी करतारपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में आकर रहने लगे। यहाँ रहकर आप ने लम्बे समय तक अपने हाथों से खेती बाड़ी का कार्य किया व साथ ही मानव कल्याण व समाज सुधार का अपना मिशन भी जारी रखा।

इसी समय दौरान सन् 1526 में मुगल शासक बाबर ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण कर दिया। बाबर की सेनाओं द्वारा जनसाधारण पर घोर अत्याचार किए गए। गुरु जी ने इस अत्याचार की आलोचना की। उस समय के हालात के बारे में अपने शिष्य लालों को सम्बोधित करते हुए गुरु जी गुरबानी में फरमान करते है-

जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।।
पाप की जंज लै काबलहु धाईआ
जोरी मंगै दानु वे लालो।।
सरमु धरमु दुई छपि खलोए कूडु
फिरै परधानु वे लालो।।
(गु.ग्र.सा.पन्ना-722)

हे लालो, ''उस स्वामी से जैसी प्रेरणा मुझे हुई है, मैं वही उच्चारण करता हूँ। बाबर काबुल से पापों की बारात लेकर आया है और जबरदस्ती इस मातृभूमि व खजाने की माँग कर रहा है। लज्जा, शर्म, सत्य व धर्म गायब हो गए है और झूठ प्रधान बना फिरता है।'' लोगों पर हो रहे अत्याचार की पीड़ा को आप ने महसूस करते हुए इन शब्दों का उच्चारण किया-

खुरासान खमसाना कीया हिन्दुस्तान डराइया।।
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाईआ।।
एती मार पई करलाणै तैं की दरदु न आईया।।1।।
(गु.ग्र.सा.पन्ना-360)

अर्थात खुरासान (मध्य एशिया का एक बड़ा क्षेत्र) को फतेह करने के बाद बाबर ने हिन्दुस्तान को भयभीत किया। इस दुनिया को बनाने वाला अपने ऊपर इल्जाम नहीं लेता इसलिए उसने मुगल का मौत का फरिश्ता बनाकर भेजा। इतने अत्याचार हुए कि लोग चीखने चिल्लाने लगे। हे मालिक! तुझे तरस नहीं आया।

हिन्दुस्तान के इतिहास में गुरु नानक ही एक ऐसे महापुरुष व समाजसुधारक हुए है जिन्होंने देश-विदेश का भ्रमण करके व विभिन्न धर्मों के तीर्थ स्थलों पर स्वयं जाकर उनके धर्माचार्यों व अनुयायियों से विचार विमर्श किया। यहाँ तक कि आप ने जंगलों, पर्वतों व पहाड़ों पर जाकर योगियों व सन्यासियों से भी भेंट की। आप जिससे भी मिल उन सबके भ्रमों को दूर किया, अन्धविश्वासों व कुरीतियों को त्याग कर सदमार्ग पर चलने का उपदेश दिया। आपके चमत्कारिक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर विरोधी भी नतमस्तक हो जाते थे। आपने मनुष्य को गृहस्थ जीवन में रहते हुए ईश्वर की प्राप्ति व

शान्तमय जीवन व्यतीत करने के लिए एक सीधा व सरल मार्ग बताया। इस मार्ग पर चलने के लिए इन तीन नियमों का पालन करने का उपदेश दिया–

- नाम जपो (प्रभु का भय मन में रखते हुए प्रभुनाम का सिमरण करो)
- किरत करो (मेहनत व ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए कमाए गए धन से जीवन यापन करो)
- वंड छको (जरूरतमंदों को दान पुण्य करते हुए मिल बांट कर उपभोग करो)

अपने एक अनन्य सेवक भाई लहना जी (गुरु अंगद देव जी) को गुरु गद्दी सौंप कर सन् 1539 में गुरु नानक देव जी ज्योति–जोत समा गए। सिख धर्म के पवित्र ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आपके द्वारा रचित 974 श्लोक, 19 रागों में सुशोभित है। आपकी प्रमुख बाणियाँ जपुजी, पटी, सिद्ध गोसटि, अलाहणिंया, आसा–दी–वार व वार–मलार है।

श्री गुरु नानक देव जी उपदेश किसी एक धर्म, जाति या सम्प्रदाय के लिए नहीं है, वरन् सभी धर्मों के लिए सर्वसांझे उपदेश है। यही कारण है कि विभिन्न धर्मों के लोग बड़े आदर के साथ आपको गुरु नानक, नानक परी, नानक लामा व नानक पातशाह कहकर सम्मान देते है। गुरुपर्व की इस शुभ वेला पर शिविरा पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई। हमें भी गुरु जी के उपदेशों को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर मेरा मन यही कह रहा है जो कि मुल्तान की धरती पर गुरु जी के सम्मान में सिद्ध पीरों–फकीरों, संत–महात्माओं द्वारा कहे गए थे। यह वचन भाई गुरदास जी ने अपने वार में इस तरह लिखे है–

सिधि बोलनि शुभि बचनिः
धन नानक तेरी वडी कमाई।

व्याख्याता (वाणिज्य)
शहीद कैप्टन नवपाल सिंह सिद्धू
रा.उ.मा.वि., पद्मपुर, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

बाल दिवस

आधुनिक भारत के लाल–जवाहरलाल

❒ नारायण लाल टाक 'माली'

जवाहरलाल नेहरु का जन्म 14 नवम्बर 1889 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ। जवाहरलाल नेहरु के पिता मोतीलाल नेहरु एक धनाढ्य परिवार से एवं पेशे से नामी वकील थे। जवाहरलाल की माँ का नाम स्वरूप रानी नेहरु और पत्नी का नाम कमला कौल था। यह मोतीलाल के एक मात्र पुत्र थे। इसके अलावा इनके तीन बहनें थी। इनकी बुआ विजयलक्ष्मी पण्डित संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनी।

जवाहरलाल का बचपन बहुत ही आराम से बीता। उच्च स्कूलों और कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी वह हमेशा जमीन से जुड़े रहे। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हैरो स्कूल और ट्रिनिटी कॉलेज लंदन से पूरी की। इसके बाद उन्होंने अपनी लॉ की डिग्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्राप्त की। नेहरु परिवार जवाहरलाल की पढ़ाई को बहुत गम्भीरता से लेता था। इनके माता–पिता सदा उच्च शिक्षा पर जोर देते थे।

जवाहरलाल नेहरु 1912 में लंदन से भारत लौटे और यहाँ पर वकालत शुरू की। वकालत में नेहरुजी की विशेष रुचि नहीं थी। मार्च 1916 में नेहरु का विवाह कमला कौल के साथ हुआ। जो दिल्ली में बसे कश्मीरी परिवार की लड़की थी। जवाहरलाल की एक अकेली सन्तान इन्दिरा का जन्म 1917 में हुआ। नेहरु जी अपनी पुत्री से बहुत प्यार करते थे। यही प्रिय पुत्री इन्दिरा गाँधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी।

उनकी रुचि वकालत में न होकर भारती स्वतंत्रता आंदोलन में थी। इस तरह वे भारतीय राजनीति में सक्रिय ध्यान देने लगे। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के बाजीपुर (बिहार) अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उस समय महात्मा गाँधी भी जवाहरलाल नेहरु को राजनीति में लाना चाहते थे। नेहरु 1929 में काँग्रेस के लाहौर अधिवेशन में काँग्रेस के अध्यक्ष बने। उन्होंने इसी अधिवेशन में भारत में सम्पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की। जवाहरलाल नेहरु ने 1920–22 के असहयोग आन्दोलन मे भाग लिया और पहली बार गिरफ्तार होकर जेल गए। जवाहरलाल नेहरु आठ बार बंदी बनाए गए और जेल भेजे गए। उन्होंने कुल मिलाकर नौ वर्ष से अधिक समय जेलों में बिताया। नेहरु 1936 में काँग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए चुने गए।

1947 में भारत के आजाद हो जाने के बाद वे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। अंग्रेजों के द्वारा लगभग 500 देशी रियासतों को स्वतंत्र किया गया। इन रियासतों को एक झण्डे के नीचे लाना, यह सबसे बड़ी चुनौती थी। भारत के पुनः गठन के रास्ते में आने वाली हर चुनौती का समझदारी से सामना किया। स्वतंत्र भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इन्हें आधुनिक भारत का निर्माता कहें तो ज्यादती नहीं होगी। उन्होंने विभिन्न योजनाओं को साकार रूप दिया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास को प्रोत्साहित किया और पंचवर्षीय योजनाओं का सूत्रपात किया। उनकी इन नीतियों के कारण देश में कृषि और उद्योगों का एक नया युग प्रारम्भ हुआ। नेहरु ने भारत की विदेश नीति को उदारता के साथ लिया।

जवाहरलाल नेहरु स्वयं को देश का पहला शिक्षक मानते हुए निर्णय लेकर आगे बढ़ने की सोच रखते थे। इसके लिए आधुनिकता और विज्ञान को आम जीवन की संस्कृति में उतारना चाहते थे। वह प्रगतिशील भारत की सभी राजनीतिक हलचल में बाधक या अवरोधक बनने वाले मुख्यमंत्रियों को आगाह कर देते थे। वे स्पष्ट रूप से कहते थे–''मुझे अक्सर यह सुनने को मिलता है कि जब कोई रसूखदार व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही होती है तो लोग तुरन्त आरोपी या गुनाहगार को बचाने की गुहार करते हैं। यह बात उचित नहीं है। अगर एक मंत्री गुनाहगार को बचाने का प्रयास करते है तो ऐसी स्थिति में अधिकारी वर्ग के सही काम कैसे कर सकेंगे? अधिकारियों को उनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं कर सहयोग देना चाहिए।''

जवाहरलाल नेहरु बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। इस कारण बच्चे उन्हें चाचा नेहरु के नाम से पुकारते थे। इस कारण से जवाहरलाल नेहरु के जन्म दिन 14 नवम्बर को विद्यालयों में हर वर्ष बाल दिवस के रूप में मनाते है।

वरिष्ठ लिपिक
रा. चौपड़ा उ.मा. वि. गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
मो.9252726037

शिक्षा दिवस

भारत रत्न-मौलाना आजाद

❒ सरदार सिंह चारण

भारत के महान् सपूत राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी, कर्मठता की जिन्दा मिशाल सशक्त वाणी के और लेखनी के धनी, कौमी एकता व राष्ट्रभक्ति के प्रतीक मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्म 11 नवम्बर 1888 को मक्का में सूफी विद्वान मुहम्मद खैराहूद्दीन के यहाँ कुलीन घराने की अरब माता अलियाह की कोख से हुआ। ये इनकी पाँच सन्तानों तीन बहिन व दो भाइयों में सबसे छोटे थे। इनके बचपन का नाम फिरोज बख़्त रखा गया। दस वर्ष की उम्र में नाम बदलकर अबुल कलाम मोहियुद्दीन अहमद आजाद दहलवी रखा गया तथा केवल बारह वर्ष की उम्र के बाद ही इन्हें अबुल कलाम आजाद के रूप में जाना जाने लगा था।

इनका परिवार मूलतः बंगाली था। जो 1857 के गदर के समय अंग्रेजों के अन्याय के कारण भारत छोड़ कर मक्का चले गये। लगभग 20 वर्ष के बाद कलकत्ता वापिस आये। इनके पिता की शिक्षा दीक्षा का इन पर बहुत असर था। इनके पिता कहा करते थे कि- अमीरों के सामने गर्व करो, गरीबों के सामने विनम्र बनो; शिष्टाचार यही कहता है। आजाद तेरह वर्ष के थे तब इनका निकाह जुलेखा बेगम के साथ कर दिया गया था। इनकी पत्नी भी विदुषी महिला था। आजाद की शिक्षा के लिए इनके पिता ने विशेष ध्यान दिया। जब वे केवल पन्द्रह वर्ष के थे तब ही दरस-ए-निजमिया पूरा कर लिया था। 1905 को जब वे केवल 17 वर्ष के थे तब इन्होंने इस्लाम धर्म की शिक्षा व ज्ञान में इतना पारंगत हो गये कि लोग उन्हें इस्लाम के धर्मशास्त्री मानने लग गए। इन्होंने 1905 से 1907 तक दो वर्ष काहिरा के अल-अजहर-विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। आजाद ने बहुत कम आयु में ही उर्दू पत्र पत्रिकाओं के लिए कविताएँ और साहित्यिक लेख लिखने आरम्भ कर दिए। बारह वर्ष की आयु में प्रकाशक बन गए और इन्होंने 1900 ई. में नैरंग-ए- आलेम नामक कविताओं की पत्रिका निकाली जो आठ

माह तक निकलती रही। 1 जून 1912 में आजाद ने उर्दू की साप्ताहिक पत्रिका अल-हिलाल और बाद में अब-बलाध निकाली। 1921 ई. में कलकत्ता से पैगाम नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। 1931 में पवित्र कुरान पर तर्जुमान-उल-कुरान नामक टीका के माध्यम से इस्लाम के नियमों व सिद्धांतों की व्याख्या की। इन्होंने अधिक मात्रा में साहित्य सर्जन किया जैसे- 1. एलम-ए-हक, 2. मुसलमान औरत, 3. ताजा मजामीन, 4. मसाला-ए-खिलाफत, 5. कौल-ए-फैजल, 6. खुतबत-ए-आजाद, 7. तकर्वर, 8. नर्वादर-ए-अबुल कलाम, 9. तजुर्मन-उल-कुरान, 10. तजकिरा, 11. आजाद की कहानी, 12. कारवान-ए-ख्याल, 13. नक्श-ए-आजाद, 14. मकतब-ए-कलाम आजाद, 15. फैसला-ए-मुकदमा-ए-जामा मस्जिद, 16. मलीरकोटला का नीजा, 17. सरमाद शहीद, 18. नेशनल तीरीक, 19. अलबरूनी और ग्रन्धाफिये, 20. गुबार-ए-खातिर।

मौलाना आजाद एक दूरदर्शी नेता, दार्शनिक राजनेता, इस्लामी संस्कृति के विद्वान थे। 1920 में इनके जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ आया। खिलाफत आन्दोलन के समय ये महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आए। वहीं से इनके जीवन की दिशा बदल गयी। सभी धार्मिक नेता, उलेमा, इनको मुसलमानों का सर्वोच्च आध्यत्मिक नेता इमाम बनाने के लिए दबाव डालने लगे लेकिन वे सहमत नहीं हुए। वे एक राष्ट्रवादी मुसलमान थे। 1921 में मुस्लिम लीग द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन की निन्दा करने पर उन्होंने मुस्लिम लीग को हमेशा के लिए छोड़ दिया।

1923 में दिल्ली में हुए काँग्रेस के अधिवेशन में मौलाना अबुल कलाम आजाद को अध्यक्ष चुना गया। तब वे मात्र 35 वर्ष के थे। वह स्वतंत्रता पूर्व भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के सबसे लंबी अवधि तक 1940 से 1946 तक अध्यक्ष रहे। मौलाना देश विभाजन के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने राष्ट्र के विभाजन की उपयोगिता पर गहरा असंतोष व्यक्त किया। वे कहते थे- ''भाई क्या पानी को तलवार से दो टुकड़ों में काटा जा सकता है।'' वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। वे नेहरु की खुले दिल से प्रशंसा किया करते थे। भावनात्मक रूप से वे नेहरु व गाँधी जी के निकट थे। अपने जीवन के ग्यारह वर्ष तक कलकत्ता की अलीपुर जेल, इलाहाबाद की नैनी जेल, मेरठ गौडा, मुरादाबाद, दिल्ली और अहमदनगर की जेल में रहे। जब वे अहमदनगर जेल में थे तब इनकी बीवी जुलेखा बेगम का इन्तकाल हो गया था। आजाद ने अपनी जीवनी को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध किया उस पुस्तक का नाम 'इण्डिया विन्स फ्रीडम' है। अपने नाम के साथ आजाद ही लगाते थे। इसे वे आजाद ख़याल का प्रतीक मानते थे।

मौलाना आजाद 15 अगस्त 1947 को नेहरु मंत्रिमण्डल में 1947 से 1952 तक प्रथम शिक्षा मंत्री के रूप में रहे व 1952 से 1958 तक शिक्षा तथा प्राकृतिक संसाधन तथा वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री रहे। सन 1952 ई. में रामपुर चुनाव क्षेत्र से और 1957 ई. में गुड़गाँव चुनाव क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए थे। केन्द्रीय शिक्षामंत्री के रूप में इन्होंने विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की तथा भारतीय सांस्कृतिक विकास के लिए भारतीय

सांस्कृतिक संबंध परिषद का गठन किया। कला, साहित्य व संगीत का संवर्द्धन करने के लिए राष्ट्रीय-साहित्य, कला, ललित कला तथा संगीत कला, अकादमी बनाने का विचार भी उन्हीं का था। उन्होंने अनुसंधान परिषद्, विज्ञान प्रयोगशाला की देश में शृंखला खड़ी कर दी। मौलाना आजाद ने कहा था कि -''शिक्षा से चरित्र का विकास होना चाहिए, घृणा का नहीं।'' भारत सरकार के शिक्षामंत्री रहते हुए भारत संघ की भाषा के चयन के बारे में वे हिन्दी के बजाय हिन्दुस्तानी भाषा के पक्षधर रहे। वे चाहते थे कि संघ की भाषा फारसी व देवनागरी दोनों लिपियों में हिन्दुस्तानी भाषा रखी जाये लेकिन पटेल, पुरुषोत्तम दास टंडन, काका साहिब, एन.वी. गाडगिल की राय के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया गया। इनके अथक प्रयासों के बदौलत 1952 में माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया। 1947 से 1958 तक इनके कार्यकाल में इनकी ही पहल पर देश के शिक्षा का बजट 15 गुना बढ़ाया गया। वे भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि थे। उनकी मान्यता थी कि प्यार ही प्रत्येक धर्म की आत्मा है। वे वास्तव में अनेक गुणों के भण्डार थे।

1 फरवरी 1958 को आजाद अपने घर के स्नानघर में फिसल पड़े और उससे उनके कूल्हे की हड्डी टूट गई। इसके बाद उन्हें दिल का दौरा पड़ा और 22 फरवरी 1958 को इनकी मृत्यु हो गई। इनका मकबरा दिल्ली में जामा मस्जिद के समीप बाग में बना हुआ है। यह स्थल ऐतिहासिक लाल किले के निकट है। राष्ट्रीय एकता के प्रतीक इस महान राष्ट्र प्रेमी को मरणोपरान्त जनवरी 1992 ई. में भारत सरकार द्वारा देश का सर्वोच्च मानद अलंकरण भारत-रत्न से विभूषित किया गया तथा इनके जन्म दिन को शिक्षा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

प्रधानाचार्य
राआउमावि सॉफाडा, सायला, जालोर
मो. 9001165745

बोझ बस्ते का

❐ भूरमल सोनी

वर्तमान समय में बच्चों के बस्ते को लेकर हर अभिभावक चिंतित है। कारण धरातलीय अध्यापन को त्याग स्कूलों में मनमानी की जाती है। मौखिक ज्ञान कम कमीशन के चक्कर में बच्चों की शुरुआती शिक्षण व्यवस्था में कापी-पुस्तकों से उसे लाद दिया जाता है। पानी की बोतल, लंच बॉक्स को मिलाकर 15 से 20 कॉपी-पुस्तकों का बोझ तकरीबन 10 से 15 कि.ग्रा. तक वजन उन्हें नियमित उठाना पड़ता है। जिससे उनके कंधे व रीढ़ की हड्डी में दर्द होने लगता है, भारी वजन उनके शारीरिक विकास में भी रुकावट डालता है।

दिल्ली व महाराष्ट्र की पहल सराहनीय

महाराष्ट्र में 'वाचन प्रेरणा दिवस' एक अनोखी पहल है। कक्षा तीन से आठवीं तक के बच्चों को बिना बस्ते स्कूल बुलाया गया। इस दिवस को 'वाचन प्रेरणा दिवस' नाम दिया गया। इसी तर्ज पर केरल व दिल्ली में भी बस्ते बोझ को कम करने की पहल की गई। सरकारी स्कूलों के साथ-साथ निजी स्कूलों ने भी भागीदारी निभाई। राजस्थान, गुजरात व मध्य प्रदेश में तो अन्य राज्यों के मुकाबले स्कूली बस्ते का बोझ कम ही है।

तीसरी कक्षा में बच्चों के लिए भारी बस्ता मुसीबत बन जाता है। कई ऐसे कालांश है, जो खाली रहते हैं और उनमें पढ़ाई नहीं होती वरन

बच्चों को सारे विषय की कॉपियाँ व पुस्तकें ले जानी पड़ती है। सीबीएसई के अनुसार दूसरी कक्षा तक के बच्चों के बस्ते स्कूल में रहने चाहिए।

जरूरत है ऐसे समय की जिसमें बच्चों को कम से कम बोझ का बस्ता ले जाना पड़े। चिकित्सकों की राय माने तो भारी बैग शारीरिक व मानसिक विकास पर प्रभाव डालता है।

दिल्ली सरकार का सराहनीय कदम

दिल्ली सरकार ने बस्ते का बोझ कम करने के लिए एक विशेष अभियान चलाया, जिससे नये लागू होने से शायद बच्चों को भारी बस्ते से निजात मिल सके।

- बस्ते रखने का प्रबंध स्कूल में रखना सुनिश्चित करने की पहल से बच्चों को राहत मिली।
- बच्चे उतनी ही किताबें घर ले जाएं, जितनी उन्हें जरूरत है, भारी बस्ते के बोझ से छुटकारे के लिए सटीक उपाय ढूंढ़ने होंगे, दृढ़ इच्छाशक्ति से ही नये विकल्प खुलेंगे। आने वाला भविष्य बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और स्वस्थ जीवन ला सकता है।

31 वर्ष पूर्व राज्य सभा में बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने की आवाज उठाने वाले आर. के. नारायण की दूर दृष्टिता की दाद दी जाती है। परन्तु 31 वर्ष बाद भी बच्चे बस्ते के बोझ से दबे है।

कई स्कूल, अभिभावकों को इसका कारण मानते हैं कि अभिभावक बच्चों की समय-सारणी नियमित चैक नहीं करते।

अभिभावकों का मानना है कि स्कूलों में पढ़ाई का समय कम कर खेलकूद और दूसरी गतिविधियों का समय बढ़ाया जाए, ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।

कला शिक्षक
रा.आ.उ.मा.वि., पलाना
बीकानेर (राज.)
मो. 9252176253

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

शिक्षा से जुड़ी अपेक्षा

❒ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

किसी देश की भव्यता, सुन्दरता, शालीनता व महानता का आकलन उस देश की भव्य व गगनचुंबी अट्टालिकाओं से नहीं किया जा सकता। सही आकलन तो उस राष्ट्र के नागरिकों के सद्चरित्र से ही किया जा सकता है। यह कार्य सही शिक्षा से ही संभव है। हर देश व सरकार शिक्षा पर प्रतिवर्ष बजट का एक बड़ा भाग इसलिए खर्च करती है कि यह उपलब्धि प्राप्त की जाए। हमने 11 नवम्बर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के जन्म दिन को घोषित कर अपने कदमों की गति इस गतिविधि से और तेज कर दी है। आजादी के बाद हमने अपनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा कर उन कारगर उपायों पर ध्यान केन्द्रित कर दिया जिससे शिक्षा के जरिए व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास परस्पर समान व संतुलित रूप से होता रहे।

शिक्षा की अवधारणाओं में जुड़े प्रत्यय वाकई मर्यादा के साथ प्रवाह करने वाले समाज के लिए हर तरफ से हितकारी हैं जिससे उसकी संस्कृति की अनुभूति लगातार अपना प्रभाव बनाए रखने में कामयाब रहे। शिक्षा हमें बंधन (बाधा) का ज्ञान मन में करवाती है। मन फिर प्रश्न करने लगेगा कि यह बेड़ियाँ क्यों है और कैसे मिले इनसे मुक्ति शिक्षा का असली स्वरूप भी यही है। साठ से सत्तर के दशक के बीच रचा साहित्य व सिनेमा इसी भावना से प्रेरित था। बेवजह की जंजीर को तोड़ मानव को चलने के लिए मैदान दिया। अस्पृश्यता, बेगार प्रथा, नारी शोषण व सामन्तशाही प्रवृत्ति को शिक्षा ने ही धराशायी किया था। सामाजिक, आर्थिक, वैचारिक व सांस्कृतिक जागृति का सम्पूर्ण श्रेय शिक्षा को ही इस दरमियान जाता है। शिक्षा ने पुराने मिथकों को तोड़ा व जन कल्याण से प्रेरित कथकों को जोड़ा। यही वजह थी दिन भर का थका हारा व्यक्ति काम की चिंता से मुक्त हो चैन की नींद सो जाता था। न कि व्यक्ति के जीवन में कठोर संघर्ष की कड़वाहट थी न कुछ अधिक पाने की बड़बड़ाहट। धीरे-धीरे शिक्षा के प्रसार-प्रचार से लगने लगा हम कई अनछुए पहलूओं को आसानी से सुलझा लेंगे पर नब्बे के दशक के उत्तरार्द्ध में जो गुल समाज में खिलने लगे उसे देखकर हैरानी होने लगी कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में कहाँ खामी रह गई!

इस दौर में एक नई संस्कृति अनायास ही पनपने लगी जिसमें ठीक से नहीं कहा जा सकता कि भविष्य में स्त्री-पुरुष संबंध, सामाजिक संरचना व वैयक्तिक आजादी किस ओर मुड़कर हैरत में डालेगी। शिक्षा ऐसे मोड़ पर पहुँच गई जहाँ हम इसके जरिए कितने ही अच्छे गुण सिखा दें, सहकारिता का पाठ पढ़ा दें, नैतिकता की झड़ी लगा दें पर इन सब बातों से परे एक ऐसा सामाजिक ढाँचा प्रतियोगिता पर आधारित होकर तैयार होने लगा जो व्यक्तिगत तरक्की के लिए दूसरों की लाशों पर खड़ा हो आगे बढ़ने में नहीं झिझकने लगा। इस दौर के एक शायर ने ठीक ही फरमाया है, ''इस दौरे तरक्की के अंदाज निराले हैं-जहनों में अंधेरे हैं सड़कों पे उजाले हैं।'' प्रश्न उठा ऐसे में शिक्षा को कैसे अप्रभावित रखा जाए!

शिक्षा ज्ञान के क्षितिज का विस्तार करती है। ज्ञान से बुद्धि बढ़ती है। बुद्धि की प्रकृति हमेशा निरंकुश रहने की होती है। यह किसी प्रकार की परतंत्रता बर्दाश्त करने की सहनशक्ति नहीं रखती। यदि बुद्धि को खुला छोड़ दिया जाए तो इसकी मार तलवार से भी तीक्ष्ण होती है जिससे अनर्थ होने का भय बराबर बना रहता है। जब तक भावना का पहरा इस पर बना रहता है तब तक मानव हित में कार्य करती है। भावना के लुप्त होने पर यह अपना बुरा असर दिखाना शुरू कर देती है। यही वजह है कि एक चिकित्सक पैसे के अधिक लालच में रोगियों को अस्पताल समय में न बुलाकर घर बुलाना शुरू कर देता है। एक अध्यापक ट्यूशन के लिए विद्यार्थी को घर आने के लिए बाध्य करता है। एक वकील सच को जानते हुए भी तर्क-वितर्क से न्यायालय में झुठलाने की कोशिश में शर्म महसूस नहीं करता। एक दारोगा कि संवेदनाएं मृत शरीर पर भी पतंग की डोर की तरह कट जाती हैं। अखिल भारतीय सेवा का अधिकारी ट्रेप हो जाता है। इन सबके मूल अंश में वजह तलाशे तब पता चलता है। मौजूद शिक्षा प्रणाली में घटती भावना व संवेदना।

शिक्षा का एक बड़ा दायित्व यह भी बनता है कि वह विद्यार्थी के जीवन से जुड़े सवाल का उत्तर भी दें। शिक्षा जहाँ व्यक्ति के जीवन से नहीं जुड़ती वहाँ बुरे परिणाम भी हमें भुगतने पड़ते हैं। बड़े-बड़े कोचिंग संस्थानों में आज विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या की घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि इसी बात का संकेत करती है। शिक्षा में भाषा के माध्यम का संतुलन भी हो। उदाहरण बतौर हम 2016 के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अंतिम परिणाम को देखें। 1000 पदों के लिए आयोजित की गई परीक्षा में केवल 52 हिन्दी माध्यम वाले परीक्षार्थी अपना स्थान बना सके। बाकी अंग्रेजी व अन्य भाषा माध्यम वाले परीक्षार्थी। शिक्षा में भाषा माध्यम की अहमियत परीक्षार्थी को कुण्ठा व निराशाजनक स्थिति में ला खड़ा कर देती है। इससे उसको बचाया जाए।

शिक्षा से जुड़ी एक आत्म-विमोही बालक की अभिलाषा-

''माँ सुनाओ मुझे वो कहानी,
जिसमें राजा ना हो ना हो रानी।
वो हमारी-तुम्हारी कथा हो,
जो सभी के हृदय की व्यथा हो।
गंध जिसमें भरी हो धरा की,
बात उसमें न हो अप्सरा की।
हो न परियाँ जहाँ आसमानी,
माँ सुनाओ मुझे वो कहानी।
वह कहानी जो हँसना सीखा दें,
पेट की भूख को भूलादे।
जिसमें सच की भरी चाँदनी हो,
जिसमें उम्मीद की रोशनी हो,
जिसमें ना हो कहानी कोई पुरानी,
माँ सुनाओ मुझे वो कहानी।

इन पंक्तियों में एक छोटा बालक जीवन से जुड़ी शिक्षा का हिमायती है। वह शिक्षा जो उसे कुछ महसूस नहीं करवा रही है। उससे वह थक गया है। स्वामी विवेकानन्द भी इस बालक के पक्षधर है। वे कहते हैं-''Education is not amount of information that is put into your brain and runs rot there undigested all your life.'' अर्थात शिक्षा सूचनाओं का महज पुलिंदा बने न जिसे मस्तिष्क में रख जीवन भर निरर्थकता के साथ अपाच्य बना रहना पड़े।

प्राध्यापक
फूलचन्द जालान राआउमावि., नूंआ (झुंझुनूं)
मो. 9460841575

शिक्षा चिन्तन

21 वीं सदी में शिक्षकों की बढ़ती जवाबदेही

❒ डॉ. मुकेश कुमारी

यह एक सार्वभौम सत्य है कि शिक्षा न केवल प्रमुख माध्यम है वरन् सबसे शक्तिशाली साधन है जिसके द्वारा वैश्विक जीवन में सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिवर्तन लाए जा सकते हैं। आज के युग में शिक्षा एक उद्योग, तकनीकी, एक टेक्नोलोजी के रूप की ओर अग्रसर हो रही है।

भारतीय संस्कृति में शिक्षित को द्विजन्मा कहा जाता है। प्रथम जन्म माता के गर्भ से होता है और द्वितीय उपनयन के रूप में जब बालक अध्ययन प्रारम्भ करता है। प्रथम को प्रकृति कहा जाएगा और द्वितीय को संस्कृति। माता पृथ्वी के समान है जहाँ व्यक्तित्व का बीज अंकुरित होता है और शिक्षक माली के समान जो उसे फूल और फलों से संपन्न वृक्ष अर्थात् शक्तिशाली व्यक्तित्व का रूप प्रदान करता है। इससे पता चलता है कि भारतीय संस्कृति में शिक्षक का कितना महत्व रहा है, वही दूसरा जन्मदाता है।

बड़ा ही गरिमामय है शिक्षण का यह व्यवसाय! बड़े ही शक्तिशाली कंधों की आवश्यकता है इस व्यवसाय को वहन करने हेतु। केवल वे ही व्यक्ति जो अपने कार्य के प्रति निष्ठावान, सच्चरित्र हो तथा जिनमें पढ़ने की भूख हो इस व्यवसाय में चुने जाने चाहिए। उत्साह की बात तो यह है कि अध्यापन को एक विज्ञान तथा टेक्नोलोजी के पद तक समुन्नत रहने के जोश के साथ-साथ अध्यापकों में अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठा व जवाबदेही का भाव स्पष्टतया दृष्टिगोचर हो रहा है।

बुद्धि एवं मनोबल दोनों के विकास के लिए आवश्यक है कि बालक अध्यापक द्वारा बतायी गयी बातों को बोझ न मानकर उनसे तृप्ति प्राप्त करे। मेरा विश्वास है कि शिक्षण की अवधारणा में मूल परिवर्तन व उसका समाज से औचित्य बनाए बिना कोई भी अध्यापन प्रणाली प्रभावी नहीं बन सकती।

दो मत नहीं कि आज हमारे पास साधनों का अभाव है तथा रोजगारोन्मुखी व्यावसायिक कौशलों का विकास करना कठिन प्रतीत होता

है, किन्तु हमारे अधिकाँश अध्यापक तो इसे भी अपनी सूझबूझ एवं मानवीय प्रयासों से संभव बना रहे हैं, जब तक शालाओं में संसाधन प्रचुर न हो जाए, स्थानीय उद्योगों, कारखानों तथा व्यावसायिक संस्थानों से सहयोग और सहायता प्राप्त कर छात्रों को वांछित अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान दिए जाने के प्रयास हो रहे हैं। किन्तु भाग्य की ये कैसी विडम्बना है कि हमारे ही कुछ शिक्षक साथी संसाधनों व प्रशासनिक कमियों की आड़ में अपनी जवाबदेही से मुँह चुरा रहे हैं। महाकवि रविन्द्र ने तत्कालीन शिक्षा प्रणाली व शिक्षक का चित्रण निम्न शब्दों में किया है-

किसी राजा के उद्यान में एक तोता स्वतंत्र होकर घूम रहा था। स्वेच्छापूर्वक कभी इस शाखा पर, कभी उस शाखा पर और अभी उड़कर दूसरे पेड़ पर चला जाता था। जब मन में आता तो बोलने लगता और कभी अन्य पक्षियों के साथ खेलने। राजा ने उसे देखकर अपने मंत्री को कहा- इसे शिक्षा देनी चाहिए। मंत्री ने उसे पकड़कर एक पिंजरे में बंद कर दिया और एक प्रशिक्षक की ड्यूटी लगा दी कि उसे राम-राम कहना सिखाए। तोता कुछ दिन तक बाहर निकलने के लिए फड़फड़ाता रहा, किन्तु जिधर जाता गिर पड़ता, घायल होकर, वह चुपचाप पिंजरे में एक स्थान पर बैठ गया। दूसरे दिन उसे शान्त बैठा देखकर शिक्षक ने मंत्री को और मंत्री ने राजा को सूचना दी, तीनों से शांति देखकर कहने लगे-कितना अनुशासन प्रिय है। शिक्षा पूरी हो गयी।

अनेक वर्षों से अनुशासन के नाम पर दमन की यह प्रक्रिया शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक रूप ले चुकी थी। अध्यापक चाहते, कि बालक उनके कहे अनुसार सोचे। उनके कहे अनुसार उठे, बैठे और बोले। जब अध्यापक चाहे तो संकेत मिलते ही चुप हो जाए तथा दूसरा संकेत मिलते ही कुछ सुनाने लगे। इस प्रकार अध्यापक छात्र को एक यंत्र का रूप देना चाहते हैं। उसकी निजी भावनाओं एवं स्वतंत्र प्रवृत्तियों को कोई महत्व नहीं देना चाहते। शिक्षण की यह विद्या छात्र को निर्जीव यंत्र बनाने का प्रक्रम साबित हो रही थी।

इक्कीसवीं सदी, शिक्षण की इस प्रक्रिया को नकार चुकी है तथा आज शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का केन्द्र अध्यापक न होकर छात्र हो गया है। आज शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना, उलाहना व उपालम्भ मुक्त शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सर्वत्र अपनायी जा रही है। आज का शिक्षक विद्यार्थी के संवेग, भावनाओं, रुचियों का ध्यान रखते हुए शिक्षण को इस प्रकार आयोजित करता है कि यह एक आनंददायी, संरचनात्मक और अन्वेषणात्मक प्रक्रम बन सके।

आधुनिक शैक्षिक परिवेश में, कोई भी अध्यापक विलम्ब से विद्यालय पहुँचकर, समय समाप्त होने से पहले वहाँ से चलकर, विद्यार्थियों को बिना तैयारी के पढ़ाकर या अपने कर्तव्य की अवहेलना करके अपनी स्थिति को उच्च नहीं बना सकता है।

शिक्षा का तात्पर्य छात्र के सर्वांगीण विकास से है। शिक्षा का उद्देश्य छात्र के विषय-ज्ञान से ही पूर्ण नहीं हो जाता। शिक्षा का तात्पर्य देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने वाले नागरिकों के निर्माण से है। छात्र के बौद्धिक व मानसिक विकास के साथ-साथ उसका नैतिक, चारित्रिक और सामाजिक विकास करना भी हमारे शिक्षकों का ही दायित्व है।

बड़े सम्मान के साथ कहना चाहती हूँ कि

हमारे शिक्षकों में अपने इस गुरुतर दायित्व के निर्वहन के प्रति एक स्पष्ट जवाबदेही की भावना दृष्टिगोचर होती है। लेकिन इसके साथ ही साथ मैं इस बात से भी सहमत हूँ कि यदि अध्यापकों के वर्तमान ऊर्जा स्तर को बनाए रखना है एवं शिक्षा को विशुद्ध राष्ट्र निर्मात्री गतिविधि बनाना है, तो नितान्त आवश्यक है कि उसके स्तर व स्थितियों में सुधार होना चाहिए।

प्रो. हुमायूँ कबीर अध्यापकों की स्थितियों में सुधार के लिए वकालत करते हुए बल देते हैं कि- ''अन्ततः विश्लेषण में, शिक्षा पद्धति की क्षमता अध्यापकों के गुण पर निर्भर करती है।'' अच्छी शिक्षा पद्धति के होते हुए भी अच्छे अध्यापकों के अभाव में शिक्षा पद्धति का असफल होना अवश्यंभावी है। अच्छे अध्यापक के रहते दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति भी अत्यधिक सफल हो सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि अध्यापन व्यवसाय में सही प्रकार के स्त्री अथवा पुरुषों को आकर्षित करने तथा बनाए रखने के लिए उनकी क्षमता बढ़ाने के लिए उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाएँ और ऐसी स्थितियाँ पैदा की जाए जिससे उनमें अपने कार्य के प्रति गर्व एवं सम्मान की भावना विकसित हो।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शिक्षक की समाज में गरिमामयी भूमिका को रेखांकित करते हुए कहते हैं-''महान चुनौती है हमारे शिक्षकों के समक्ष कि वे किस प्रकार शिक्षण का आयोजन करें कि विद्यार्थी भविष्य की चुनौतियों का सामना करने हेतु समग्र रूप से तैयार हो सकें।'' शिक्षक के समाज में महत्व को स्पष्ट करते हुए वे अपने अनेक साक्षात्कारों में कह चुके हैं कि व्यक्ति अपनी सफलता का श्रेय मुख्य रूप से अपने माता-पिता एवं गुरु को ही देता है।

मैं आप सभी से एक बार पुनः निवेदन करना चाहूँगी कि यहाँ पर मैंने उदाहरण स्वरूप कुछ ही बिन्दुओं पर लेखनी उठाई है प्रयोजन यही है कि इस विषय में हमारा चिन्तन जाग्रत हो। मेरा विश्वास है कि आज अध्यापन कार्य समाज में वह गरिमापूर्ण स्थान बना चुका है जो किसी भी प्रगतिशील समाज में अपेक्षित है। आज अध्यापकों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति अपेक्षाकृत रूप से सुदृढ़ हो चुकी है। कोढ़ है वह चन्द समाज कंटक हतभागी अध्यापक साथी, जो कि नैतिक मानदंडों व शैक्षिक आदर्शों के इतर जाकर आचरण करते हैं। ऐसे पथ भ्रमित शिक्षकों को शिक्षक समुदाय अपने बीच कभी सहन नहीं करता है क्योंकि इतिहास में ऐसा एक ही समुदाय है जिसने कभी भी नैतिक मानदंडों के साथ समझौता नहीं किया है।

राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षण व्यवस्था की सुदृढ़ता पर निर्भर करती है। भारत को विश्वगुरु के रूप में पुनर्स्थापित करने का महायज्ञ हमारी पाठशालाओं में आरम्भ हो चुका है। हर राष्ट्रवादी से अनुरोध है कि वह अपना विश्वास व समर्थन अपनी निकटतम पाठशाला को प्रदान करे। इस महायज्ञ में यही आपकी सच्ची आहूति होगी। हमारे पाठशालाओं से निकले ये हमारे नैतिक चारित्रिक व बौद्धिक बल से परिपूर्ण राजदूत संपूर्ण विश्व में शांति व विकास का संदेश फैलाएंगे। निकट भविष्य में भारत की युवा शक्ति के यही सार्थक बौद्धिक एवं रचनात्मक प्रयास भारत को विश्वगुरु का दर्जा दिलाकर अपने गुरुओं को सच्ची गुरुदक्षिणा देंगे।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. नांद, अजमेर (राज.)

इस माह का गीत

उन सैनिक मतवालों का

चित्रकार तू चित्र बना दे, उन सैनिक मतवालों का,
मातृभूमि हित बलिवेदी पर, शीश चढ़ाने वालों का।।

जौहर की ज्वाला को जगा दे, आग लगादे प्राणों में,
नूतन शक्ति जोश जगा दे, भारत के दीवानों में,
दुश्मन के पैटन टैंक और जेट जलाने वालों का।।
मातृभूमि हित....

वीर सुभाष महाराणा और छत्रपति शिवाजी का,
झांसी वाली महारानी और चूंडावत छत्राणी का,
देश की खातिर कटा दिया सिर, जोश बढ़ाने वालों का।।
मातृभूमि हित....

चित्र बना केशरिया वेशी, आर्यवीर ललनाओं का,
चूड़ी वाले कमल करों में आज पुनः तलवारों का,
स्वतन्त्रता की रक्षा के हित, कदम बढ़ाने वालों का।।
मातृभूमि हित....

चित्रकार तू चित्र बना दे, उन सैनिक मतवालों का,
मातृभूमि हित बलिवेदी पर, शीश चढ़ाने वालों का।।

संकलनकर्ता-**डॉ. विष्णुदत्त जोशी**
व्याख्याता (हिन्दी)
राउमावि., बिरमसर (बीकानेर)
मो. 9414028368

शौक्षिक चिंतन

बस्ते का बोझ कैसे कम हो ?

❐ शंकर लाल माहेश्वरी

यह निर्विवाद सही है कि वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में बालकों के लिए बस्तों का बोझ एक समस्या बन गई है। इसके लिए अध्यापक अभिभावक भी चिन्तित है तथा निरीह बालक भी शारीरिक और मानसिक पीड़ा से ग्रसित है। अतः इस संबंध में गंभीर चिन्तन की आवश्यकता है। यदि संस्था प्रधान तथा विषयाध्यापक इस दिशा में सजग होकर निश्चित कार्य योजना के अनुरूप कार्य कर सके तो समाधान संभव है। इसके लिए....

- छोटी कक्षाओं के बच्चों को गृहकार्य नहीं दिया जाना चाहिए। संबद्ध पाठ का विश्लेषण कक्षा में ही बालकों के सहयोग से कराया जा सकता है।
- बड़ी कक्षाओं में सभी विषयाध्यापक अपने विषयों से संबंधित गृह कार्य देते हैं तो कार्य की मात्रा बढ़ जाती है। सभी विषयों की अभ्यास पुस्तिकाओं का बोझ लादकर लाना आवश्यक हो जाता है। अतः विषयाध्यापकों से विचार-विमर्श करते हुए कार्य की मात्रा को ध्यान में रखते हुए गृहकार्य की साप्ताहिक कार्य योजना बनाई जानी चाहिए। इसमें कार्यभार का आकलन करते हुए सीमित मात्रा में गृह कार्य आवंटित किया जा सकता है।
- साप्ताहिक कार्य दिवसों को विषयवार बाँटते हुए गृह कार्य की योजना क्रियान्वित करने से गृहकार्य की मात्रा अपेक्षाकृत कम हो जाएगी और सभी विषयों की अभ्यास पुस्तिकाएँ एक साथ लाने की विवशता नहीं रहेगी।
- जो कार्य गृह कार्य के रूप में दिया जाता है। उसे विषयाध्यापक के निर्देशन में विद्यालय परिसर में ही कराए जाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- कभी-कभी लिखित कार्य नहीं दिया जाकर मौखिक कार्य के रूप में भी गृह कार्य आवंटित किया जाए ताकि दिए गए कार्य का मूल्यांकन कक्षा में दूसरे दिन मौखिक प्रश्नोत्तर द्वारा किया जा सकता है। इससे अभ्यास पुस्तिकाओं के बोझ से बचाव होगा।
- कक्षा के प्रतिभाशाली छात्रों के नेतृत्व में

वर्ग शिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। प्रत्येक वर्ग में पाँच सात छात्र हो और विद्यालय में ही गृह कार्य सम्पन्न कराने की व्यवस्था की जा सकती है।

- यदि पाठ्योपरन्त विषयाध्यापक द्वारा सम्पूर्ण पाठ इकाई की विषय वस्तु का विश्लेषण कर लघुउत्तरात्मक प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नोत्तर व्यवस्था हो सके तो गृह कार्य की अनिवार्यता नहीं रहेगी।
- सभी विषयों की एक या दो अभ्यास पुस्तिकाएँ सम्मिलित रूप से होगी, तो बस्ते का बोझ कम होगा। सभी विषयों का गृह कार्य उन्हीं में करा लिया जायेगा।
- कक्षागत कराये जाने वाले कार्य की लेखन पुस्तिका में अलग पृष्ठों पर गृह कार्य करने की सुविधा दी जा सकती है। इससे अतिरिक्त अभ्यास पुस्तिकाओं का भार नहीं बढ़ेगा।
- गृह कार्य के प्रश्नों के उत्तर बिन्दुवत तथा सारगर्भित प्राप्त करने का आग्रह बनाया जाना जाए ताकि भारी भरकम अभ्यास पुस्तिकाओं से बचा जा सके।
- बालकों की स्वाभाविक प्रकृति होती हैं कि वे अवांछित सामग्री भी बस्तों में रखते हैं तथा एक ही विषय की अतिरिक्त संबंद्ध सहायक पुस्तकें पास बुकें और अवांछित सामग्री से बस्तों का वजन बढ़ाते हैं इस प्रवृत्ति पर भी नियंत्रण होना चाहिए।
- विषय शिक्षण की ऐसी आंतरिक कार्य योजना बनाई जाए की सभी विषयों की पुस्तकें सभी दिन नहीं लाना पड़े।
- प्रत्येक विषय की इकाई परख की अनिवार्यता रहेगी तो गृह कार्य की आवश्यकता कम हो जायेगी।
- गृह कार्य विद्यालय समयोपरान्त किसी भी एक अध्यापक के संरक्षण में विद्यालय में ही ठहरकर करवाया जा सकता है।
- छात्रों के बस्तों को विद्यालय भवन में सुरक्षित रखने की व्यवस्था भी इस कार्य में सहयोगी हो सकती है।
- पूरे बस्ते को रोज लाने ले जाने की अपेक्षा आवश्यक कॉपी किताबों को ही घर पर लाने ले जाने की सुविधा दी जाए।

वस्तुत प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों पर बालकों के शारीरिक विकास के साथ ही सामाजिक और भावात्मक विकास पर बल देना आवश्यक है। बौद्धिक विकास हेतु विशिष्ट शिक्षण सामग्री का उपयोग करते हुए मौखिक दिशा निर्देशों द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास संभव है। नरेन्द्र देव समिति द्वारा भी इस आशय का सुझाव प्रस्तुत किया गया था। साथ ही 1986 की शिक्षा नीति के निर्धारण के समय भी इस संबंध में चिन्ता व्यक्त की गई थी। बस्तों के वजन से बच्चों के सिरदर्द, रीढ़ की हड्डी में टेढ़ापन होना और कंधों का झुक जाना आदि शारीरिक व्याधियों तथा मानसिक तनाव में भी वृद्धि होना स्वाभाविक है। अतः कष्टदायक समस्या का निवारण अति आवश्यक है।

यदि विद्यालय प्रशासन एवं विषयाध्यापक इस संबंध में गम्भीरता से सोच समझ कर कार्य योजना का निर्माण कर सके तो ही बच्चों के बस्तों का बोझ कम हो सकता है।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी,
आगूचा, भीलवाड़ा (राज.)-311022
मो.09214581610

शैक्षिक गुणवत्ता

कैसे हो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार

❐ सुरेन्द्र माहेश्वरी

शिक्षक को समाज की सर्वाधिक संवेदनशील इकाई का माना गया है, यदि शिक्षक अपने कार्य को सही तरीके से अंजाम नहीं देते हैं तो हर जगह आरोप-प्रत्यारोप लगाए जाते हैं, लेकिन इस बात पर कोई विचार नहीं करता कि शिक्षक को पढ़ाने का समुचित अवसर मिल भी पा रहा हैं या नहीं? आए दिन गैर शैक्षणिक कार्यों में शिक्षक को इस्तेमाल करता प्रशासन शैक्षिक सोच को पूरी तरह से ध्वस्त कर देता हैं। आज हर कोई सोचता है कि पढ़ाना सबसे सरल काम हैं लेकिन उनकी सोच वास्तविकताओं से कोसों दूर हैं। आज हम न जाने कितनी समस्याओं का सामना कर रहे हैं हमारे पास उन बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी है जो न तो स्वयं शिक्षा के प्रति गंभीर है और न ही उनके परिवार वाले। जो बच्चे और उनके संरक्षक शिक्षा के प्रति गंभीर हैं वो निजी स्कूलों का रुख कर लेते हैं, ये सोचकर कि सरकारी स्कूल में कोई पढ़ाई नहीं होती है। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी दोहरी हो जाती है।

सुधार हेतु प्रयास–स्कूली शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए हमारी परम्परागत सोच को बदलना होगा। स्कूलों में एक अध्यापक केवल मिड डे मील को तैयार करवाता है और उसकी डाक बनाता है ऐसे भी अनेक स्कूल हैं जो एक या फिर दो शिक्षकों से संचालित होते हैं। आज शिक्षक प्रतिदिन अनेक प्रकार की डाक बनाने और आँकड़े जुटाने में व्यस्त रहता हैं फिर उससे हम किस प्रकार एक अच्छे शिक्षक की भूमिका का निर्वहन करने की अपेक्षा कर सकते हैं। अतः आवश्यकता है कि स्कूलों को कार्यालय न बनाकर शिक्षण संस्थान ही बने रहने देना चाहिए। विद्यालयों में कम्प्यूटर तो ठेकेदारों के माध्यम से लगवा दिए गए हैं लेकिन वो कम्प्यूटर केवल विद्यालयों के आँकड़ों की शोभा ही बढ़ा रहे हैं, कम्प्यूटर शिक्षण वास्तविकताओं से कोसों दूर है क्योंकि कम्प्यूटर शिक्षण हेतु अलग से शिक्षक नहीं हैं। सरकार अंग्रेजी, गणित, विज्ञान विषय के शिक्षक को 10-12 दिन का प्रशिक्षण देकर इतिश्री कर लेती है जबकि इनमें से कई शिक्षक तो ऐसे हैं जिन्होंने इस प्रशिक्षण के दौरान ही कम्प्यूटर चलाना सीखा। उन शिक्षकों से हम कैसे अच्छे शिक्षण की उम्मीद कर सकते हैं? अच्छा हो कि कोई पूर्ण प्रशिक्षित कम्प्यूटर शिक्षक उस विद्यालय में कार्यरत हो जो उस स्कूल के बच्चों का कम्प्यूटर शिक्षण कर सके और साथ ही विद्यालय के ऑफिस कार्य करने में भी कम्प्यूटर के माध्यम से सहयोग दे सके।

विद्यालय बनाम सामुदायिक शिक्षण केन्द्र– हमारे राजकीय विद्यालयों का संबंध शिशु शिक्षण के लिए संचालित आँगन बाड़ी और प्रौढ़ शिक्षा के लिए सतत् शिक्षा केन्द्रों से कहने भर हैं। इनका आपसी तालमेल अच्छी शिक्षा के लिए बहुत जरूरी है। यदि तीनों एजेंसियों का आपस में अच्छा समन्वय हो तो 3 साल के बच्चे से 50 साल तक के पुरुष के लिए बेहतर शिक्षण व्यवस्था संभव है। यदि एक शिक्षक, आँगनबाड़ी कार्यकर्ता और एक प्रेरक मिलकर कार्य करे अर्थात तीनों एजेन्सियाँ एकीकृत स्वरूप में कार्य करें तो स्कूलों की कार्यावधि भी 10 से 12 घण्टे प्रतिदिन हो जाएगी। साथ ही समुदाय के सभी वर्गों के लिए स्कूल में प्रवेश और सीखने के अवसर भी बढ़ जाएँगे।

आज अधिकांश विद्यालय अन्य कार्यालयों की तर्ज पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक खुलते हैं। इस कारण से रोजगार में जुटे बच्चों के लिए ये अनुपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। जिससे स्कूलों में उपस्थिति और सीखने का समय कम होता जा रहा हैं। किशोर-किशोरी जो स्कूली उम्र पार कर चुके हैं और कामकाजी महिलाओं-पुरुषों के लिए स्कूल के दरवाजे एक तरह से बंद ही हो चुके हैं। यदि समाज की आवश्यकता के चलते चिकित्सालय और पुलिस थाने दिन-रात खुले रह सकते हैं तो यह भी आवश्यक है कि शिक्षण संस्थान भी 10 से 12 घण्टे प्रतिदिन खुलें ताकि हर उम्र का व्यक्ति एवं कामकाजी व्यक्ति अपने समय के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर सके।

शिक्षक छात्र अनुपात सही हो–शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रमों के अनुरूप प्रभावी शिक्षण, शिक्षकों की योग्यता, सक्रियता और पढ़ाने के कौशल पर निर्भर करता है। एक शिक्षक कितनी कक्षाओं के कितने बच्चों को भली भाँति अध्ययन करा सकेगा, इस बारे में गंभीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत है।

आदर्श स्थिति यह है कि एक शिक्षक अधिकतम 40 बच्चों को सही तरीके से पढ़ा सकता है, लेकिन वर्तमान की स्थिति पर नजर डालें तो एक कक्षा में 80 से 100 बच्चे पढ़ रहे हैं और कहीं-कहीं तो यह संख्या 125 को भी पार कर चुकी हैं। ऐसे में शिक्षक बच्चों को केवल घेर कर ही रख सकते है, उन्हें पढ़ाई कराना संभव नहीं है। आज आवश्यकता है कि शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात को व्यावहारिक बनाया जाए ताकि शिक्षा के स्तर में सुधार हो सके।

शिक्षण में तकनीक का उपयोग–जिस तेजी से दुनिया बदल रही है और तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है उसमें हम काफी पिछड़े हुए लगते हैं। आज शिक्षकों की समस्या का काफी हद तक समाधान तकनीक में ही छुपा हुआ है, बस जरूरत है तकनीक को सही तरीके से उपयोग करने की। इसके लिए प्रत्येक जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से ऐसे शिक्षकों का चुनाव किया जाना चाहिए जिनका अपने विषय पर पूर्ण अधिकार है तथा अध्यापन के क्षेत्र में भी प्रभावी है। उनके द्वारा पढ़ाए गए पाठों की वीडियो रिकॉर्डिंग करके उसे इंटरनेट पर यू ट्यूब के माध्यम से डाला जा सकता हैं ताकि उस वीडियो को विद्यार्थी यू ट्यूब के माध्यम से देख सकें, इसके अतिरिक्त उस वीडियो को एम पी 4 फॉर्मेट में सीडी द्वारा विद्यालयों में वितरित किया जा सकता है यह काफी किफायती भी होता है और इसे विद्यार्थी

अपने डिवाइस पर डाउनलोड करके देख सकेंगे या डीवीडी प्लेयर से टेलीविजन पर देख सकेंगे।

प्रशिक्षण, शिक्षण और परीक्षण– स्कूली शिक्षा में सुधार के लिए शिक्षण, प्रशिक्षण और परीक्षण की विधियों में सुधार की जरूरत है। अच्छे प्रशिक्षण के लिए कर्तव्यनिष्ठ, योग्य और क्षमतावान प्रशिक्षकों की आवश्यकता है। शिक्षकों के प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने, शिक्षण में नवाचारी पद्धतियां विकसित करने सहित परीक्षण की व्यापक विधियाँ तय कर उन्हें व्यावसायिक स्वरूप में लागू करने की दिशा में कारगर कदम उठाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हर प्रदेश में एक 'शैक्षिक संदर्भ एवं स्रोत केन्द्र' विकसित किया जाए।

पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यक्रम– आज तक यह ठीक प्रकार से तय नहीं हो पाया है कि किस आयु वर्ग के बच्चों को कितना सिखाया जा सकता है और सिखाने के लिए न्यूनतम कितने साधनों और सुविधाओं की आवश्यकता होगी। नई शिक्षा नीति 1986 के लागू होने के पश्चात न्यूनतम अधिगम स्तरों को आधार मानकर पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रम में लगातार परिवर्तन किया जा रहा है लेकिन उनके अनुरूप साधनों की आपूर्ति संभव नहीं हो पा रही है। हमारा यह नजरिया है कि पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से हम भाषायी एवं गणितीय कौशलों और पर्यावरणीय ज्ञान को ठीक प्रकार से विकसित कर सकते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि पाठ्यपुस्तकें अध्ययन का एक साधन मात्र हैं न कि साध्य। कक्षाओं पर केन्द्रित पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रमों को श्रेणीबद्ध रूप में निर्धारित करना भी जोखिम भरा है क्योंकि बच्चों की सीखने की क्षमता पर उनके पारिवारिक और सामाजिक वातावरण का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः सभी क्षेत्रों में एक समान पाठ्यक्रम और एक जैसी पाठ्यपुस्तकें लागू करना बच्चों के साथ नाइंसाफी है।

प्रशासनिक और प्रबन्धकीय क्षमता में सुधार– आज शिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक सुधार हेतु शीघ्र सार्थक कदम उठाते हुए हमें ऐसी शिक्षण पद्धति और कार्यक्रम विकसित करने होंगे जो बच्चों के मन में श्रम के प्रति निष्ठा पैदा करें और उनका ज्ञान किताबी ज्ञान तक ही सीमित न हो बल्कि एक व्यापक सोच लेकर समाज के आधार स्तंभ बने। इसके लिए हमें एक ऐसा प्रभावी शैक्षिक कार्यक्रम बनाना होगा जिसमें–

- कक्षागत पाठ्य योजनाएँ स्वयं शिक्षकों द्वारा तैयार की जाएँ।
- पाठ्यक्रम लचीला और गतिविधि आधारित हो। साथ ही पाठ्यक्रम बच्चों की ग्रहण क्षमता के अनुरूप भी होना चाहिए।
- शिक्षा नीति निर्धारण में शिक्षाविदों और कार्यरत शिक्षकों को सहभागी बनाकर उनके के विचारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए।
- कक्षाओं में शिक्षक छात्र अनुपात सही होना चाहिए। साथ ही पर्याप्त मात्रा में शैक्षिक सामग्री की पूर्ति एवं शिक्षकों की भर्ती की जानी चाहिए।
- विद्यालय विकास समितियाँ प्रबन्धन का दायित्व स्वीकारें। समितियाँ विद्यालय में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें, शिक्षण का अधिकार शिक्षकों को वास्तविक में सौंपा जाए।
- पाठ्य पुस्तकों की रचना स्थापित रचनाकारों के बजाए शिक्षकों और शिक्षा विशेषज्ञों के माध्यम से की जानी चाहिए, जो शैक्षिक दृष्टि से उपयुक्त हो।

शिक्षकों का मनोबल बढ़ाया जाए– सम्पूर्ण विश्व के विकसित और विकासशील देशों में शिक्षकों को सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और शैक्षिक दृष्टि से श्रेष्ठ माना गया है। शिक्षा नीति बनाने का प्रयास किया जाता रहा है जिससे शिक्षकों का मनोबल सदैव ऊँचा बना रहे। आज आवश्यकता है कि किसी प्रकार पढ़ने लिखने की प्रक्रिया में परिवर्तन लाने हेतु विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों और शैक्षिक कार्यक्रमों में तालमेल बनाया जाए। समुदाय की शैक्षिक जरूरतों की पहचान कर उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप निर्णय लेते हुए वातावरण बनाने की आवश्यकता है जिससे व्यावसायिक योग्यता में वृद्धि सुनिश्चित हो सके। शिक्षा के प्रशासन एवं प्रबंधन में उत्तरदायी भूमिका निभाने वाले संस्था प्रधानों की नियुक्ति और प्रशिक्षण हेतु शिक्षा विभाग एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्य संगठनों को शीघ्र कारगर कदम उठाना चाहिए। संस्था प्रधानों की भूमिका को सशक्त बनाए बगैर शिक्षा में सुधार की संभावनाएं अत्यंत क्षीण रहेंगी।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. टहूँका
भीलवाड़ा (राजस्थान)– 311029
मो. 9829925909

वाणी पर संयम

पहलवान रास्ते से जा रहा था। सामने से आते हुए मरियल से आदमी को पता नहीं क्या सूझा, बोल पड़ा–'सूजा हुआ सा शरीर किस काम का। जहां बैठते हो, दो–तीन आदमियों की जगह रोक लेते हो।' इतना सुनना था कि पहलवान का सधा हुआ हाथ उस व्यक्ति के जबड़े पर पड़ा और इसी के साथ उसकी बत्तीसी ढीली हो गई। मुँह से खून निकल आया। चुपचाप अपनी राह पकड़ ली। तभी एक तीसरा व्यक्ति मिला। पूछा, 'यह क्या हुआ भाई, कहीं गिर पड़े क्या?'

उस व्यक्ति ने मुँह से आ रहे खून को पोंछते हुए कहा, 'नहीं, गिरा नहीं, थोड़ी–सी जबान चल गई और व्यर्थ में काम बढ़ा लिया।' उसने पूरी कहानी कह सुनाई।

घर में और समाज में अधिकांश लड़ाई–झगड़े क्यों होते हैं? इसलिए कि वाणी का संयम नहीं है, जीभ पर नियंत्रण नहीं है। कुछ लोग तो आदी हो जाते हैं। कुछ न कुछ कड़वा–खारा बोलते रहते हैं और किसी न किसी से उनकी भिड़ंत होती रहती है।

वाणी के दोनों पक्ष हैं–अच्छा और बुरा। कुछ लोग वाणी के इतने मधुर होते हैं कि सहज ही वे लोगों के आत्मीय बन जाते हैं। अच्छा बोलने में कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। लेकिन कुछ ऐसे होते हैं, जिन्हें दुश्मनों की संख्या बढ़ाने में आनंद आता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो दूसरों को कटु वचन तो नहीं बोलते, किंतु मुँह से अपशब्द निकालने की आदत होती है। सामान्य बातचीत में भी वे भद्दे शब्दों का प्रयोग करते हैं। कुछ भद्दे शब्द उनका तकियाकलाम बन जाते हैं।

हम वाणी पर संयम करना सीखें।

–साभार

शिक्षा-संस्कार

शिक्षा और जीवन निर्माण

❒ शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'

हमने शिक्षा की ब्रिटिश प्रणाली को ग्रहण किया। मुख्य प्रश्न यह है कि क्या यह प्रणाली हमारे समाज के लिए अनुकूल है? एक जमाना था कि जब विद्यालय को हमारे समाज में देवालयों जैसा पवित्र स्थान प्राप्त था। अध्यापकों का शिक्षण-कर्म आराधना के स्तर पर था। शिक्षा और शिक्षाकर्मियों की भारतीय समाज में उज्ज्वल छवि थी। समय बदल गया। मूल्य बदल गए। क्या आज स्थिति शिक्षा के इस उद्देश्य के अनुकूल है? शिक्षा का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के विकास से है। शिक्षा जीवन के संस्कार को ही कहा गया है। **'शिक्षा जीवन संस्कारमुच्यते।'** वस्तुतः संस्कार युक्त जीवन ही शिक्षा का ध्येय है। शिक्षा सुसंस्कृत एवं विवेकशील बनाने का माध्यम है। उद्देश्यविहीन कार्य पतवार रहित नौका के समान है। शिक्षा बेहतर व्यक्ति, बेहतर समाज और राष्ट्र का निर्माण करती है। अज्ञान, अंधविश्वास आदि से मुक्ति दिलाती है साथ ही सामाजिक हितों को आगे बढ़ाती है।

महर्षि अरविन्द के अनुसार- 'शिक्षा जो केवल ज्ञान देने तक ही अपने आपको सीमित रखती है, कोई शिक्षा नहीं। शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उसका चारित्रिक एवं आत्मिक उन्नति में सहायक होना भी है। वस्तुतः शिक्षा पद्धति व्यक्ति को भौतिक दृष्टि से 'सभ्य' बनाने में अवश्य सफल रही है, परन्तु संस्कारित करने के उद्देश्य में पूर्ण सफलता अर्जित न कर सकी। मेकाले की शिक्षा पद्धति में निःसन्देह भारतीय समाज के पाश्चात्यीकरण का लक्ष्य छिपा था। शिक्षा और संस्कृति के मध्य अलगाव का जो बीजारोपण मेकाले ने किया, कदाचित वह अभी भी जारी है। भारतीय संस्कृति ज्ञान और अनुभव की नींव पर खड़ी है, जिस पर हमें सांस्कृतिक वैभव की इमारत खड़ी करनी है। यह कार्य दुष्कर अवश्य है पर असंभव कदापि नहीं। जीवन निर्माण में शिक्षा को महत्वपूर्ण भूमिका है भारतीय संस्कृति में समस्त मानवता के लिए प्रेरणा-स्रोत बनने की क्षमता विद्यमान है। शिक्षा का उद्देश्य प्रमाण-पत्र या डिग्री प्राप्त कर जीविकोपार्जन करना नहीं है। शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य मानव को संवेदनशील बनाना है। शिक्षा का संवेदना से गहरा संबंध है। मानवीय संवेदना के आधार पर ही कहा जा सकता है कि शिक्षा का उद्देश्य पुस्तकीय ज्ञान बढ़ाना नहीं बल्कि नई पीढ़ी को चरित्रवान बनाना है। शिक्षा जीवन निर्माण की प्रक्रिया है। वर्तमान भौतिक युग में शिक्षा-छात्र, अभिभावक और अध्यापक सभी का रूप और कर्तृत्व बदल गया है। शिक्षा को वातावरण के अनुरूप ढालने तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने की जरूरत है।

स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। आज हम शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति अधिक चिन्तित है। आजकल शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है। शिक्षा को रोजगारपरक बनाने पर विशेष बल दिया जा रहा है, दिया जाना चाहिए। महती आवश्यकता है इस बात की। यह सब तो ठीक है, लेकिन इससे शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। शिक्षा का एक और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है व्यक्ति को अच्छा इंसान बनाने में सहायता करना। जितनी अधिक शिक्षा उतनी ही कम मानवीयता शिक्षा का नैतिक पक्ष बेहद कमजोर हो गया है।

आज देश संकट में है-चरित्र का पतन, नैतिकता का ह्रास, मूल्यों का अवमूल्यन, सुरक्षा का संकट आदि। आज आवश्यकता है कि श्रेष्ठ लोग शिक्षा के कार्य को सम्पन्न करें। बालकों की शिक्षा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालक बीज है, संभावना है, शक्ति है। उसे साहसी बनाना है, उसके आत्मविश्वास को जाग्रत करना करना है। शिक्षक प्रथमतः तो वह दर्शन और मनोविज्ञान दोनों का अध्येता होता है। गोविन्द से भी बड़ा गुरु को मानने वाली हमारी संस्कृति को कदाचित बेनजीर ही है। पश्चिम में शिक्षक को महज सुविधा प्रदाता माना जाता है। वहीं भारत में शिक्षक को ईश्वर का रूप माना जाता है। आदर्शवादी शिक्षा में शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। अतः सद्संस्कारित व्यक्ति ही शिक्षक जैसे महत्वपूर्ण पद के कर्तव्यों का निर्वहन कर सकता है। किसी भी राष्ट्र या समाज का विकास सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत शिक्षकों पर निर्भर करता है। मानव विवेकशील प्राणी है- वह अच्छे-बुरे का भेद कर सकता है। शिक्षा ही उसकी विवेक शक्ति को, बुद्धि को पैनी बनाती है। यह विवेक ही उसे अन्य प्राणियों से भिन्न बनाता है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही समाज एवं राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं।

मन्दिर शब्द का स्मरण करते ही मन में पवित्र भावों का संचार होने लगता है। विद्यालय को भी प्रायः विद्या मन्दिर ही कहा जाता है। आखिर विद्यालय सभ्यता सीखने का एक प्रमुख स्थान जो है। विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही सीखते हैं परन्तु आज विद्यालयों में ऐसा वातावरण है ही नहीं क्योंकि आजकल के विद्यालय केवल विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के केन्द्र मात्र रह गए हैं। शिक्षक व शिक्षार्थी के संबंध मात्र प्रशासनिक हो गए हैं। शिक्षक तथा बालक एक-दूसरे के पूरक हैं। आज स्थिति यह है कि बच्चा बचपन से ही अपसंस्कृति मय वातावरण से घिर जाता है और फिर शनैः-शनैः अपनी मानवीयता, गरिमा, अस्मिता को दाव पर रख परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए नासूर बन जाता है। हम वैज्ञानिकता और आधुनिकता के नाम पर अपने जीवन मूल्यों को तिरोहित न करें। हमारे प्राचीन मूल्यों की शाश्वतता स्वयं सिद्ध है। जीवन मूल्यों के उत्कर्ष से ही कोई समाज और राष्ट्र शत्रु होता है। इसी से देशभक्ति जागती है और व्यक्तिगत चरित्र निखरता है और हमारी सभ्यता और संस्कृति का रक्षाकवच मजबूत होता है। संस्कृति में ही हमारी भौतिक सभ्यता निहित होती है। इनकी संवाहक शिक्षा है।

भारत में शिक्षा का स्तर उन्नत हुआ है। शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक मिलकर गुणवत्ता प्रधान शिक्षा की ओर अग्रसर हैं। संस्कार जीवन व्यवहार का महत्वपूर्ण भाग है। शिक्षा को जीवन का सबल माध्यम बनाने के लिए समय-समय पर भारतीय मनीषियों ने

अपने-अपने शैक्षिक-विचारों का प्रतिपादन किया है। इनके शैक्षिक नवाचार इनकी धरती के उपजे हुए रत्न थे, जिनमें सुस्पष्टता, मौलिकता और व्यावहारिकता थी। शिक्षा के इन उदात्त विचारों को प्रस्तुत करने वाले शिक्षाविद् का नाम था 'गिजु-भाई।' उन्होंने देश-विदेश के शिक्षाविदों के विचारों पर मनन किया व निष्कर्ष निकाला। इनका मर्म था-कि वर्तमान में चल रही यंत्रवत् शिक्षा प्रक्रिया को पलटना होगा क्योंकि इस पद्धति से बच्चे वही सीखते हैं जिससे उनका कोई सरोकार नहीं है। मनुष्य योनि में जन्म लेने मात्र से मानव 'इंसान' संज्ञा का वाचक भले ही बन जाए पर मानवता-मनुष्यता-इंसानियत के अभाव में वह संस्कृत सूक्ति-**''साहित्य, संगीत, कलाविहीन; साक्षात् पशु-पुच्छ विषाण हीन;''** के अनुसार बिना सींग-पूँछ का पशु ही माना गया है।

वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तित होते जीवन मूल्यों में भी हमारी अनादि संस्कृति के बल पर राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखना है। इसके लिए विद्यालयों और शिक्षकों को अपना दायित्व निभाना ही है। व्यक्ति देश या समाज के लिए कितना मूल्यवान है इसका मूल्यांकन भी उसके जीवन-मूल्यों, मानवीय-मूल्यों पर ही किया जाता है। हमारी संस्कृति तो **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के भाव से परिपूर्ण है। प्रत्येक राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति वहाँ की शिक्षा पद्धति पर निर्भर करती है। हमारी प्राचीन संस्कृति मानव धर्म प्रधान रही है।

वर्तमान शिक्षा और शिक्षा प्रणाली की स्थिति अति चिन्तनीय है। जापान व स्विटजरलैण्ड कोई विशाल देश नहीं है। न ही उनके पास अपार प्राकृतिक सम्पदा है, केवल अनुकूल शिक्षा के बल पर आज विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आए हैं। आज का युवा विद्यार्थी देश के भविष्य की धरोहर है। उसे वह सन्मार्ग दिखाना है, जो उसे आत्मनिर्भर बनने की क्षमता, शक्ति, योग्यता व कर्मठता उत्पन्न करें जिससे सम्बल पाकर अपने सुन्दर भविष्य की कल्पना को साकार कर सके। ज्ञान मन्दिरों में अनुशासन एवं नैतिक आचरणों का अभाव सा हो गया है। सम्पूर्ण राष्ट्र एक विशाल उपवन है। हमारी मंजिल, हमारा मूलभूत चिंतन है-शिक्षा तक सबकी पहुँच सहजता से हो एवं सबके लिए शिक्षा का गुणात्मक स्तर उन्नत हो। इसके लिए आवश्यक है अध्यापकों का कुशल होना। शिक्षा नीति में कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊँचा नहीं हो सकता। गुरु जब विचार कर ले तो ऐसा कोई काम नहीं है जो वह नहीं कर सके। बालक का वास्तविक कल्याण किस में सन्निहित है? इसका आभास एक मात्र सद्गुरु को होता है। इसमें संदेह नहीं कि शिक्षक राष्ट्र की प्राणशक्ति है, और प्राणतत्व है।

दरअसल शिक्षक ने अध्ययन करना प्रायः छोड़ दिया है और अंतिम उपाधि प्राप्त करने को ही वह अध्ययन का अंतिम छोर मान बैठा है। एक अध्यापक शायद यह सोचना पसन्द करे- क्या मेरी अपने विषय पर गहरी पकड़ है? क्या मैं शिक्षण विधियों में नयापन लाने का सतत प्रयास कर रहा हूँ? सार रूप में यही कहा जा सकता है कि उक्त सब बातों का स्त्रोत हमारा 'अंतस' है। हमें अंदर झाँकना होगा, अंतस को जाग्रत करना होगा, वहाँ से जो प्रकाश पुंज निकलेगा, वह बालक की दुनिया को रोशन कर देगा। जो अध्यापक जितना अधिक बच्चों के संग जुड़ेगा वह उतना ही उनके लिए लोकप्रिय होगा। सदा श्रद्धा से स्मरण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त शिक्षकों का चिन्तनात्मक स्तर भी आवश्यक है। शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में मात्र अकादमिक उपलब्धियाँ पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके सोच, साँस्कृतिक चिन्तन व भावी अभिलाषाओं का मूल्याँकन भी करना चाहिए। समाज आशा भरी नजर एवं विश्वास के साथ समाज के शिल्पी शिक्षक को देख रहा है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है कि- ''आज शिक्षक

दुकानदार है, विद्यादान उनका व्यवसाय हो गया है। अतः शिक्षक जड़ता को मिटाए, शिक्षण को आनन्ददायी बनाए, स्वाध्याय कर अपने ज्ञान को अद्यतन रखें। शिक्षक तो गुरु है जो छात्र को आत्मोन्नति का मार्ग दिखाता है, उसका सर्वांगीण विकास करता है ताकि वह राष्ट्र का अच्छा नागरिक बन सके। परन्तु वर्तमान में गुरु अपनी गुरुता को खो बैठा है। वर्तमान में शिक्षक की गुरुवाली छवि धूमिल हो चुकी है। शिक्षक को 'शिक्षक' बनना ही पड़ेगा। शिक्षक 'शिक्षक' बनकर ही सामाजिक सम्मान पा सकता है, व्यवसायी बनकर नहीं। निरन्तर अध्ययनशील रहने वाला शान की दौड़ में कभी नहीं पिछड़ेगा।

मेरी मान्यता है कि शिक्षक यदि अपनी सार्थक भूमिका में लौट आता है तो कोई कारण नहीं कि समाज की उन्नति न हो पाए। समाज का वही सच्चा पथ प्रदर्शक है। मित्रों आप पर गुरुतर भार है ऐसी पीढ़ी तैयार करने का जो राष्ट्र को सुदृढ़, सुखी, उन्नत कर आपके राष्ट्र निर्माता होने की सार्थकता प्रदान करने। वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने देश को दो हिस्सों में बाँट दिया है। एक समृद्ध लोगों का एवं दूसरा गरीब लोगों का भारत। केन्द्र सरकार नई शिक्षा नीति के प्रारूप को अंतिम रूप देने में जुटी है। तथा राज्यों से भी सलाह मशविरा कर रही है। नए सामाजिक बदलाव को ध्यान में रखते हुए पटना के स्टूडेंड ऑक्सीजन मूवमेन्ट द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन के तहत संस्कार व चरित्र निर्माण का अभियान बच्चों को स्कूलों की चहारदीवारी से बाहर निकाल कर महत् उद्देश्य से जोड़ने में काफी हद तक सफलता पाई है। इस अभियान में पटना के सौ से अधिक विद्यालयों के हजारों विद्यार्थी जुड़ चुके हैं। नई शिक्षा नीति को अंतिम स्वरूप प्रदान करने के पूर्व ऐसी संस्थाओं से भी सलाह मशविरा करना चाहिए ताकि जमीन स्तर के सुझाव मिलेंगे।

अन्त में भारतेन्दु की इन पंक्तियों के साथ

''मेटहु तुम अज्ञान कौ, सुखी होहु सब कोय,
बाल-वृद्ध-नर-नारि सब विद्या संयुत हो।''

इसे हम शिक्षा के शैक्षिक क्षेत्र का नवजागरण काल मान सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्राध्यापक (हिन्दी)
फोरेस्ट चौकी के पास, लोहारिया
बाँसवाड़ा (राज.)-327605
मो.: 9460116012

खगोल विज्ञान

पृथ्वी, सूर्य और राशियाँ

❒ उमेश चौहान

घूमती धरती का विज्ञान पढ़ाना बहुत आसान है। दिन-रात का होना, पृथ्वी की दैनिक गति, वार्षिक गति, दिन बड़े-रात छोटी या रात बड़ी या दिन छोटे आदि। जब इन्हीं अवधारणाओं को ग्लोब के माध्यम से समझाने की बारी आती है तो अनेक शिक्षक बच्चों को स्पष्ट नहीं करा पाते कि उपर्युक्त घटनाओं के पीछे आखिर धरती का विज्ञान क्या है?

सबसे पहले तो पृथ्वी 23 1/2 अंश पर झुकी क्यों है, यदि इसके ध्रुव एक दूसरे पर ऊर्ध्वाधार होते तो क्या दिन-रात छोटे-बड़े होते। पृथ्वी की दैनिक गति की दिशा क्या है? दैनिक गति और वार्षिक गति के परिणाम क्या हैं? आदि।

उन दिनों मैं माध्यमिक शाला में सहायक शिक्षक था। सेवाकालीन प्रशिक्षण के अन्तर्गत, सामाजिक विज्ञान विषय के प्रशिक्षणार्थ, राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार की सी.डी. दिखाई गई। महिला विशेषज्ञ ने ग्लोब से पृथ्वी की दैनिक गति को समझाया। मैंने अवलोकन किया कि मैडम ने ग्लोब को घड़ी के काटे घूमने की दिशा में घूमाकर दिन-रात होने की घटना समझाकर आगे बढ़ गई। पूरी कक्षा में मेरे अलावा कोई और इस ग्लोब को गलत दिशा में घुमाने की घटना को नहीं पकड़ पाया।

प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद मैंने घर आकर ग्लोब को उसी तरह घुमाया। बात स्पष्ट थी। उल्टी दिशा में घुमाने पर मुंबई में सूर्योदय पहले हो रहा था। और बाद में कलकत्ता में। मैंने उसी दिन राज्य शिक्षा केन्द्र की महिला प्रमुख को फोन किया कि प्रशिक्षक गलत दिशा में ग्लोब घुमाकर बता रही हैं। उन्हें मेरे कथन पर विश्वास ही नहीं हुआ। कौन हैं आप, क्वालिफिकेशन क्या है, कहाँ, किस जिले में पदस्थ हैं, अच्छा मा.शा. में सहायक शिक्षक हैं आप। आप जानते हैं वे विषय विशेषज्ञ हैं। मैंने जब सूर्योदय का उदाहरण देकर अपनी बात स्पष्ट की। तब उन्होंने मेरी बात को गंभीरता से न लेते हुए यह कहकर बात खत्म कर दी कि उन्होंने वैसे ही ग्लोब घुमाकर दिखाया होगा। आप सही हैं तो अपने प्रशिक्षण केन्द्र पर इसे स्पष्ट कर दें। उनका कहने का लहजा इस तरह था कि- ''राजा कोई गलती नहीं करता''। खैर अगले दिन मैंने पुनरावृत्ति चर्चा में ग्लोब से प्रशिक्षणार्थियों को स्पष्ट किया कि पृथ्वी के घड़ी के काँटों की दिशा में और विपरीत दिशा में घुमाने से क्या अन्तर आएगा।

मेरा मानना है कि किसी की गलती को पकड़ना उद्देश्य नहीं होना चाहिए। परन्तु उस गलती को सुधारने की पहल जरूर होनी चाहिए।

सामाजिक विज्ञान में भूगोल को मैंने यथा संभव प्रायोगिक तरीके से ही पढ़ाया। मैंने पृथ्वी की दैनिक गति, वार्षिक गति, दिन और रात का होना, इन्हें बखूबी पढ़ाया। एक पुराने चरखे के पहियों आदि का उपयोग एक क्रियाशील मॉडल बनाया था। इस मॉडल से जब मैंने बी.एड. में भूगोल खंड का एक फाइनल लेसन पढ़ाया तो निरीक्षण मैडम ने कक्षा के बाद मेरे साथ बैठकर उस मॉडल को कई बार चलाकर देखा। उनके शब्द आज भी मुझे याद हैं-

''उमेश चौहान सर, मैं एम.ए. भूगोल हूँ, परन्तु पहली बार मुझे पृथ्वी की ये घटनाएं अच्छी तरह से समझने और अवलोकन करने का मौका मिला। बहुत ही सरलता से मॉडल से अवधारणाएं अच्छी तरह स्पष्ट हुई है'' (मॉडल पर लेख अलग से लिखूंगा।)

ऐसे ही हमने पढ़ा होता है कि पृथ्वी से देखने पर सूर्य लगभग एक माह तक एक राशि में रहता हैं किन्तु इस घटना को प्रायोगिक मॉडल से समझाते हुए मैं अब तक किसी भूगोल शिक्षक को नहीं देखा है। पिछली मकर संक्रांति पर चर्चा के दौरान एक शिक्षक ने जिज्ञासावश पूछ लिया-आज सूर्य मकर रेखा पर है या मकर राशि में है। मैंने उन्हें स्पष्ट किया कि आज सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। मकर रेखा तो दक्षिणी गोलार्द्ध में हैं उस रेखा पर सूर्य की लंबवत किरणें 22 दिसंबर को पड़ती है और उस दिन रात सबसे बड़ी तथा दिन सबसे छोटा होता है। आज 15 जनवरी है अब से लगभग 11 माह सूर्य मकर रेखा पर होगा। अच्छा-अच्छा करकर वे आगे निकल गए पर उन्हें ही नहीं कई लोगों को यही भ्रम है। मुझे लगा कि क्यों न इसे समझाने के लिए कुछ मॉडल बनाऊं।

हम सभी जानते हैं कि पृथ्वी लगभग 365 दिन 6 घंटों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है। इस परिक्रमा के चलते पृथ्वी के सामने सूर्य और सूर्य के पीछे एक तारों का समूह रहता है जिसे हम 'राशि' कहते हैं। आकाशीय पिंडों का अध्ययन करने वाले खगोलविदों ने वर्षों तक अध्ययन करके सुनिश्चित किया कि पृथ्वी से देखने पर सूर्य वर्ष भर में 12 तारा समूहों के सामने से गुजरता है। हर तारा समूह के तारों को याद रखने के लिए उन तारों को एक काल्पनिक आकृति से जोड़कर देखा जाता है। जैसे-बिच्छू (वृश्चिक) जैसा आकार बना तो वृश्चिक राशि, तराजू के समान आकार बना तो 'तुला' राशि आदि। गणना के अनुसार सूर्य हर राशि में लगभग 1 माह तक रहता है। सूर्य का किसी राशि में प्रवेश और निर्गम का विज्ञान समझने के लिए आइए वर्ष 2016 में खगोलविदों की गणना के अनुसार सूर्य किस राशि में कितने दिनों तक रहा और भविष्य में किन राशियों में रहेगा इसकी तालिका देखिए-

दिन संख्या	राशि में सूर्य के रहने की अवधि	राशि
31	14 अप्रैल से 14 मई 2016	मेष
32	15 मई से 15 जून	वृषभ
31	16 जून से 16 जुलाई	मिथुन
32	17 जुलाई से 17 अगस्त	कर्क
31	18 अगस्त से 17 सितम्बर	सिंह
30	18 सितम्बर से 17 अक्टूबर	कन्या
30	18 अक्टूबर से 16 नवम्बर	तुला
30	17 नवम्बर से 16 दिसम्बर 2016	वृश्चिक
29	17 दिसम्बर से 14 जनवरी 2016	धनु
30	15 जनवरी से 13 फरवरी	मकर

30	14 फरवरी से 14 मार्च	कुंभ
30	15 मार्च से 14 अप्रेल 2016	मीन

365 दिन

*दिनों की संख्या में सन्निकटन किया गया है।

उपरोक्त तालिका में दिनों की संख्या को ही आधार माना गया है जिसका उद्देश्य महज समझ विकसित करना है, ज्योतिष सिखाना नहीं।

हम सभी जानते हैं कि पृथ्वी घड़ी के काँटे घूमने की विपरीत (एंटी क्लॉक) दिशा में घूर्णन करती है जिस मा का काल्पनिक पथ भी एंटी कलाक दिशा में ही के कारण दिन और रात होते हैं। इसे हम पृथ्वी की दैनिक गति भी कहते हैं। इस गति के साथ-साथ पृथ्वी, सूर्य की परिक्रमा भी करती है। इस परिक्रहोता है।

आपने तालिका में देखा होगा कि सूर्य, पृथ्वी से देखने पर 15 जनवरी को 7:42 बजे प्रातः मकर राशि में प्रवेश कर चुका था एवं इस राशि में 13 फरवरी को 6:19 बजे शाम तक रहा। यह अवधि लगभग 30 दिन थी। वर्षो पूर्व सूर्य 14 जनवरी को मकर राशि में प्रवेश करता था जो आंशिक परिवर्तन के चलते अब 15 जनवरी को प्रवेश करता है। हमारे देश में सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तब इस दिन को 'मकर संक्रान्ति' का उत्सव मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन पवित्र नदियों में स्नान किया जाता है तथा घरों में तिल-गुड़ की लड्डू, मिठाई, गजक बनाने की भी परंपरा हैं।

सूर्य का राशियों में प्रवेश एवं निर्गम की अच्छी समझ विकसित करने हेतु मैंने मोटी कार्ड शीट से 2 वृत्ताकार चक्तियाँ काटकर एक मॉडल बनाया है। इस मॉडल को आप भी कार्ड शीट काटकर आसानी से बना सकते हैं।

सामग्री : मोटी कार्ड शीट, परकार, चाँदा, पेन्सिल, स्केल, स्केच पैन एवं छोटी चिटपुट (प्रेस बटन)

विधि :मोटी कार्ड शीट पर 10 से.मी. त्रिज्या का एक वृत्त बनाओ। इस वृत्त के भीतर 9 तथा 8 से.मी. त्रिज्या के 2 वृत्त बनाओ। यह बड़ी डिस्क या कार्ड शीट होगी। इसके वृत्तों को 12 बराबर भागों में बाँटना है अतः वृत्त के केन्द्र पर 30-30 अंश के कोण बना दो। इस प्रकार हर वृत्त पर 12 खाने बन जाएंगे।

अब चित्र में बताएँ अनुसार भीतरी खानों में क्रमशः 12 राशियों के नाम लिखना है। ध्यान रहे कि राशियों का क्रम एंटी क्लॉक ही रहे। बाहरी खानों में चित्रानुसार उन राशियों में सूर्य कितने दिनों तक रहेगा। तालिका देखकर ध्यान से लिख लो। बस राशियों की डिस्क तैयार है। इस बड़े वृत्त से थोड़ा छोड़कर काट लो। अब कार्ड शीट पर छोटी डिस्क की आकृति बनाओ। इसके लिए 8 तथा 6 से.मी. त्रिज्या के दो वृत्त बनाओ। वृत्त के केन्द्र पर चिटपुट बटन के आकार को वृत्त (सूर्य) बना लो। वृत्त के केन्द्र से 6 से.मी. त्रिज्या वाले वृत्त पर पेन से ही बड़ी बिन्दु बना दो। यह पृथ्वी मान लो। इसी वृत्त पर टूटी-टूटी रेखाएँ बना दो यह पृथ्वी का परिक्रमा पथ है। अब चित्र में बताए अनुसार सूर्य के दोनों ओर से टूटी-टूटी रेखाएँ बनाओ जो सूर्य से निकलकर 8 से.मी. वृत्त तक जाती हो। निचली रेखा पर एक मोटा तीर बना दो यह सूर्य का राशि में प्रवेश दर्शाएगा। इस चक्ती पर पृथ्वी का परिक्रमा पथ एवं दिशा के तीर पृथ्वी एवं सूर्य लिख लो।

बड़ी चक्ती पर मध्य में छोटी चक्ती रखकर केन्द्र में प्रेस बटन लगा दो। ध्यान रहे बटन लगाने पर चक्तियाँ आसानी से घूमना चाहिए। बस बन गया डिस्क मॉडल, भीतरी (छोटी) चक्ती में बने तीर को किसी भी रेखा पर रखो। चक्ती को एन्टी क्लाक घुमाओ। तीर वाली रेखा जब तक राशि में है तब तक सूर्य उस राशि में पृथ्वी से दिखाई पड़ेगा। एक बार भीतरी चक्र का चक्कर पूरा करो तुम्हें हर राशि में सूर्य के रहने की अवधि समझ में आ जाएगी। बच्चों को भी इस मॉडल से अवधारणा स्पष्ट हो जाएगी।

अब आपके मन में उलझन पैदा हो रही होगी कि राशियों वाली तालिका के अनुसार सूर्य विभिन्न राशियों में 29, 30, 31 या 32 दिन तक भी रहता है। तब कैसे निश्चित हुआ कि जनवरी माह 31 दिन का और फरवरी माह 28 या 29 का कैसे हो जाता है।

हम जानते हैं कि-

जनवरी, मार्च, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर, दिसम्बर माह 31 दिन के हैं जबकि अप्रैल, जून, सितम्बर, नवम्बर 30 दिन के तथा फरवरी 28 या 29 दिन की होती है।

पिछली तालिका में आपने ध्यान दिया होगा कि अंग्रेजी महीनों के अनुसार सूर्य हर राशि में दो माह के कुछ दिन रहता है जैसे-मकर राशि में 15 जनवरी से 31 जनवरी (17 दिन) तथा 1 फरवरी से 13 फरवरी (13 दिन) कुल 30 दिनों तक रहा- इस तालिका से आप और अधिक समझ पाएंगे-

सूर्य किस राशि में कितने दिन	दिन संख्या	माह का नाम
धनु 14 मकर 17	31	जनवरी
मकर 13 कुम्भ 16	29	फरवरी
कुम्भ 14 मीन 17	31	मार्च
मीन 14 मेष 17	30	अप्रैल
मेष 14 वृषभ 17	31	मई
वृषभ 15 मिथुन 15	30	जून
मिथुन 16 कर्क 15	31	जुलाई
कर्क 17 सिंह 14	31	अगस्त
सिंह 17 कन्या 13	30	सितम्बर
कन्या 17 तुला 14	31	अक्टूबर
तुला 16 वृश्चिक 14	30	नवम्बर
वृश्चिक 16 धनु 15	31	दिसम्बर

कुल 366 दिन

* दिनों की संख्या में घण्टों को सन्निकटन किया गया है।

सामान्य वर्ष में फरवरी 28 दिन की होती है किन्तु चौथे वर्ष में यह 29 दिनों से गणना की जाती है।

इस तरह हम सभी पृथ्वी, सूर्य और राशियों के संबंध की प्रमुख जानकारी सबसे साझा कर सकते हैं।

सेवानिवृत्त
(राष्ट्रपति एवं राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त शिक्षक)
टिमरनी, हारड़ा (म.प्र.)

आदेश-परिपत्र : नवम्बर, 2016

1. पंचायती राज कार्मिकों का वेतन भुगतान कोषालयों के माध्यम से ; नवीन प्रक्रिया का यूजर मैनुअल।

2. लम्बित प्रकरणों का निस्तारण अभियान चलाकर (7.10.16 से 30.11.16 तक) निस्तारित किए जाने सम्बन्धी आदेश।

1. पंचायती राज कार्मिकों का वेतन भुगतान कोषालयों के माध्यम से ; नवीन प्रक्रिया का यूजर मैनुअल।

● राजस्थान सरकार वित्त (आर्थिक मामलात) विभाग ● क्रमांक : एफ.5 (थ-75)DTA/IFMS/PRI/7404-8003 दिनांक 14.09.2016 ●परिपत्र

बजट घोषणा वर्ष 2015-16 के बिन्दु संख्या 230 की अनुपालना में एकीकृत वित्तीय प्रबन्धन प्रणाली के अन्तर्गत पंचायती राज कार्मिकों का वेतन भुगतान कोषालयों के माध्यम से किए जाने हेतु उक्त प्रक्रिया निम्न 5 कार्यालयों में कार्यरत पंचायतीराज कार्मिकों का संवेतन आहरण दिनांक 01.05.2016 (माह अप्रैल पेड मई 2016) से वित्त (आर्थिक मामलात) विभाग के परिपत्र क्रमांक एफ.5(थ-75) डी.टी.ए./आई.एफ.एम.एस./1-300 दिनांक 01-04-2016 द्वारा लागू की गई।

1. पंचायत समिति, झोटवाड़ा, जयपुर
2. पंचायत समिति, दूदू, जयपुर
3. पंचायत समिति, सांगानेर, जयपुर
4. पंचायत समिति, आमेर, जयपुर
5. पंचायत समिति, बस्सी, जयपुर

अब उक्त प्रक्रिया दिनांक 01.11.2016 (माह अक्टूबर, 2016 पेड नवम्बर 2016) से राज्य के सभी पंचायती राज कार्मिकों हेतु पंचायती राज कार्यालयों व ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा कार्यालयों के पंचायती राज कार्मिकों से संबंधित संवेतन बिलों के आहरण हेतु लागू की जा रही है। इस प्रक्रिया के माध्यम से संवेतन बिल बनाने हेतु यू.आर.एल. http://pripa/manager.raj.nic.in होगा। नवीन प्रक्रिया के अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं के अनुसार कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करें:-

1. पंचायती राज संस्थाओं/ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालयों के अधीन कार्यरत पंचायती राज कार्मिकों के वेतन बिल कोषालय के माध्यम से आहरित करने हेतु जिला परिषदों एवं पंचायत समितियों के पी.डी. खातों में दिनांक 01.10.2016 को सितम्बर 2016 देय अक्टूबर 2016 के वेतन आहरण करने के पश्चात् संवेतन मद में अवशेष रही राशि की सूचना संबंद्ध प्रशासक/संचालक द्वारा संबंधित कोषालयों/उप कोषालयों को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जानी होगी। ऑनलाइन सिस्टम पर संवेतन बिल बनाए जाने हेतु वेतन मद में पी.डी. खाते में उपलब्ध राशि से ही बजट नियंत्रण करते हुए बिल बनाने का प्रावधान किया गया है। अतः पंचायती राज संस्थाओं के आहरण वितरण अधिकारी दिनांक 25.10.2016 से पूर्व पी.डी. खातों के अवशेष संबंधित कोषालयों से मिलान कर प्रमाणित करवाकर ठीक कराया जाना सुनिश्चित करेंगे।
2. पंचायती राज संस्थाओं/ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालयों के पंचायती राज कार्मिकों के जो पद बजट (4 A वॉल्यूम में) उपलब्ध नहीं है उन अतिरिक्त पदों का विवरण अलग से सिस्टम में संवेतन हेतु जोड़े जाने की व्यवस्था उपलब्ध है, परन्तु इन पदों को राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत पदों की श्रेणी में बजट 4 A वॉल्यूम में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।
3. सिस्टम पर कार्मिकों का मास्टर डाटा संबंधित कार्मिक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना एवं कार्मिक के सेवा अभिलेख से सत्यापति कर एवं पी.डी. खाता संचालक के स्तर पर शुद्धता सुनिश्चित करते हुए इंद्राज किया जाएगा, जिससे कोई त्रुटि सम्भावित न रहे, जो कार्मिक राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग द्वारा उपलब्ध डेटा में पहले से ही विद्यमान है उनका डेटा सिस्टम में एम्पलॉई आई.डी. एन्टर कर प्रथम संवेतन बिल (अक्टूबर 2016 पेड नवम्बर 2016) कोषालय को सिस्टम से फोरवर्ड करने से पूर्व दर्शाए जाएंगे, जिन्हें उक्त प्रक्रिया के माध्यम से सत्यापित करते हुए एवं शुद्धता सुनिश्चित करते हुए अपडेट किया जा सकता है।
4. कोषालयों द्वारा पंचायती राज संस्था व ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालयों के पंचायती राज कार्मिकों को वेतन का भुगतान पी.डी. खाता प्रशासक/संचालक द्वारा ऑनलाइन/हार्ड प्रति में प्रेषित किए गए वेतन बिल के डेटा के आधार पर सीधे उनके खातों में ऑनलाइन किया जावेगा। अतः निजी निक्षेप खातों के समसत प्रशासक/संचालक संबंधित कार्मिकों के बैंक खाते का विवरण यथा बैंक का नाम, बैंक शाखा का नाम, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक खाता संख्या सिस्टम पर सावधानीपूर्वक फीड किया जाना सुनिश्चित करेंगे। इस हेतु प्रथम बार संबंधित कार्मिक से पास बुक की सत्यापित प्रति भी उनके स्तर पर लिया जाना सुनिश्चित किया जाएगा। गलत विवरण की वजह से यदि किसी कार्मिक का वेतन किसी अन्य के खाते में चला जाता है या रिजेक्ट होता है तो उसका सम्पूर्ण दायित्व प्रशासक/संचालक का होगा।
5. प्रथम बार प्रत्येक कार्मिक को देय वेतन की विगत यथा मूलवेतन, देय भत्ते तथा वेतन से की जाने वाली कटौतियों का विवरण सेवा अभिलेखों से पूर्ण रूप से जाँच कर प्रशासक/संचालक द्वारा सत्यापित कर सिस्टम पर दर्ज किया जाएगा ताकि सिस्टम से शुद्ध वेतन बिल जनरेट किया जा सके।
6. सिस्टम द्वारा वेतन बिल के इनर एवं आउटर एवं कटौती प्रपत्र जनरेट किए जा सकेंगे। वेतन बिल के दो प्रिन्ट किए जावें। प्रथम प्रति प्रशासक/संचालक द्वारा हस्ताक्षर कर (पी.डी. खाता चैक आहरण के लिए हस्ताक्षर किए जाने की प्रक्रिया के समकक्ष) मय कटौती शिड्यूल ऑनलाइन बिल के साथ वेतन बिल पारित करने हेतु संबंधित कोषालयों/उपकोषालयों को प्रेषित की जावेगी। वेतन बिल की दूसरी प्रति कार्यालय रिकॉर्ड के लिए संधारित की जावेगी। प्रशासक/संचालक द्वारा वेतन बिल Discharge करने के उपरान्त ही कोषालय को प्रेषित किया जावेगा।

7. प्रशासक/संचालक द्वारा वेतन बिल की हस्ताक्षरित भौतिक प्रति के साथ-साथ सिस्टम के माध्यम से ऑनलाइन वेतन बिल भी संबंधित कोषालय/उपकोषालय को फॉरवर्ड किया जाना आवश्यक होगा।
8. वेतन बिल कोष/उपकोष द्वारा हार्डकॉपी व ऑनलाइन डेटा में अन्तर के आधार पर ही आक्षेपित किए जा सकते हैं इन बिलों के नियमानुसार आहरण व कार्मिकों को शुद्ध भुगतान का सम्पूर्ण दायित्व संबंधित निजी निक्षेप खाते के प्रशासक/संचालक का होगा। यह प्रक्रिया पूर्ण रूप से पी.डी. खातों से आहरण की जाने वाली प्रक्रिया के ही समकक्ष होगी। यदि पी.डी. खाता संचालन की अधिकृति एक से अधिक अधिकारी के पास है तो तद्नुसार ही कोष/उपकोष को प्रेषित संवेतन बिल की हार्डकॉपी पर हस्ताक्षर किए जाने उनके द्वारा सुनिश्चित किए जाएंगे।
9. बिन्दु संख्या (8) में अंकित प्रक्रियानुसार यदि बिल कोषालय/उपकोषालय द्वारा आक्षेपित कर दिया जाता है तो बिल सिस्टम पर पुनः प्रशासक/संचालक को उपलब्ध हो जावेगा साथ ही कोषालयों/उपकोषालयों द्वारा बिल की हार्डकॉपी भी आक्षेप पूर्ति हेतु प्रशासक/संचालक को लौटा दी जावेगी।
10. कोषालयों/उपकोषालयों द्वारा इस प्रक्रिया से संबंधित समस्त पी.डी. खातों के प्रशासक/संचालकों कोषालयों में संधारित नमूना हस्ताक्षर एवं बिल पर अंकित हस्ताक्षरों की जाँच एवं मिलान के पश्चात् ही ऑनलाइन वेतन बिल पारित किया जाना सुनिश्चित किया जावेगा। कोष/उपकोष द्वारा उक्त बिलों/वाऊचर्स का लेखा पी.डी. खाते की लेखा प्रेषण प्रणाली व निर्धारित नियमों के अनुसार ही प्रेषित किया जाएगा।
11. उक्त प्रक्रिया के अन्तर्गत जिन पंचायती राज कार्मिकों पर नेशनल पेंशन स्कीम (एन.पी.एस.) लागू होती है उनके वेतन बिलों से नियोक्ता एवं कर्मचारी अंशदान की कटौती के संबंध में निम्न प्रक्रिया अपनाई जाएगीः-
    1. पंचायती राज कार्मिक की एनपीएस कटौती हेतु 2 बिलों के स्थान पर एक ही बिल (जिसमें नियोक्ता अंशदान तथा कार्मिक अंशदान की कटौती हेतु अलग-अलग पे-आई डी हो) बनाया जाकर कार्मिक को देय वेतन एवं भत्तों के साथ नियोक्ता अंशदान की राशि कार्मिक को देय वेतन में जोड़कर एन पी एस कटौती रूप में कार्मिक के अंशदान की दुगुनी (Double) राशि की कटौती की जाएगी तथा एनपीएस के संबंधित बैंक खाते में सीधे इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के माध्यम से जमा की जाएगी, परन्तु इसे पे-स्लिप व जी.ए.55 ए में पृथक से दिखाया जाएगा।
    2. पंचायती राज कार्मिकों के वेतन से एनपीएस कटौती (नियोक्ता एवं कार्मिक अंशदान) के बिलों के Inner sheet में Non treasury accounting deducations के रूप में Show करवाई जावेगी तथा बिल के Outer में इन्हें Show नहीं करवाया जाएगा।
    3. पे-मेनेजर पोर्टल के माध्यम से पंचायत समिति के वेतन बिल की उक्त प्रक्रिया के पश्चात् सिस्टम से बैंक खाते में जमा हुए कर्मचारी अंशदान एवं नियोक्ता अंशदान दोनों की डिटेल पे-मेनेजर से SIPF पोर्टल पर पृथक-पृथक उपब्ध कराई जाएगी जिसके आधार पर SIPF पोर्टल पर SCF तैयार कर बीमा विभाग के जिला कार्यालय द्वारा CRA को उपलब्ध करवाई जा सके।

अतः पंचायती राज कार्मिकों के माह अक्टूबर 2016 पेड नवम्बर 2016 के वेतन का आहरण पी.डी. खाते के चैक के स्थान पर उक्त प्रक्रियानुसार किया जाना अनिवार्य होगा। इन निर्देशों की अक्षरशः पालना किया जाना आयुक्त पंचायती राज विभाग, निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, सम्बद्ध कोषाधिकारी/उपकोषाधिकारी, प्रशासक/संचालक पी. डी. खाता, सुनिश्चित करेंगे। पंचायती राज विभाग व प्रारम्भिक शिक्षा विभाग द्वारा सभी संबंधित अधीनस्थ कार्यालयों को अपने स्तर पर भी पालना सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया जाएगा।

नवीन व्यवस्था को सुचारू रूप से उक्त बिन्दुओं के अनुसार लागू करने का पूर्ण दायित्व संबंधित विभागाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष कार्यालय में पद स्थापित वरिष्ठतम लेखा अधिकारी का होगा। सम्बद्ध विभाग के स्तर पर नवीन व्यवस्था का नियमित पर्यवेक्षण किया जाएगा। नवीन व्यवस्था को लागू किए जाने हेतु विभागीय/जिला/ब्लॉक स्तर पर बनाए गए नोडल अधिकारी/हैल्प डेस्क द्वारा स्थानीय स्तर पर भी तकनीकी व अन्य समस्याओं का निराकरण किया जावेगा।

उक्त नवीन प्रक्रिया का यूजर मैनुअल यू.आर.एल. http://pripaymanager.raj.nic.in पर उपलब्ध है। इस प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु निम्न दूरभाष नम्बर व ई-मेल आई.डी. सम्पर्क किया जा सकता है :-

1. पंचायती राज विभाग, जयपुर

(i) लेखाधिकारी (बजट)(नोडल अधिकारी) 9928278410 rajpr_cao1@rediffmail.com

हैल्प डेस्क-

i. प्रोग्रामर 9414237070 rajpr_programmer@rediffmail.com
ii. सहायक लेखाधिकारी (रोकड़) 9660004493 rajpr_cao1@rediffmail.com
iii. कनिष्ट लेखाकार 9414519152 rajpr_cao1@rediffmail.com
iv सहायक प्रोग्रामर rajpr_programmer@rediffmail.com

2. निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर

(i) सहायक निदेशक, पंचायत राज अनुभाग 9414324692 (नोडल अधिकारी)

(ii) हैल्प डेस्क 0151-2226551, 0151-2226553

3. एन.आई.सी. हैल्प डेस्क-0141-511007, pripaymanager.raj@gmail.com
4. निदेशालय कोष एवं लेखा राजस्थान, जयपुर

(i) लेखाधिकारी (आई.एफ.एम.एस.)-0141-2744402, ao-ifms-rj@nic.in

(ii) सहायक लेखाधिकारी (PRI)-0141-2744402
aaopaymanager.ifms@rajasthan.gov.in, aaoegras.ifms@rajasthan.gov.in
(iii) सूचना सहायक डी.टी.ए.-0141-2744402, ia.ifms@rajasthan.gov.in

● (नवीन महाजन) शासन सचिव वित्त (बजट)

2. लम्बित प्रकरणों का निस्तारण अभियान चलाकर (7.10.16 से 30.11.16 तक) निस्तारित किए जाने सम्बन्धी आदेश।

● कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर क्रमांक : शिविरा-माध्य/साप्र/बी-2/4389/39/03/क.क. अभियान-16/वो-II दिनांक : 7-10-2016

मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार के परिपत्र क्रमांक प.14 (49) कार्मिक/क-5/2016 दिनांक 05.10.2016 (प्रति संलग्न) की पालना से सहायक कर्मचारी संवर्ग, मंत्रालयिक कर्मचारी/अधिकारी संवर्ग, अध्यापक संवर्ग एवं शिक्षा सेवा संवर्ग के सेवा संबंधी प्रकरणों, स्थानान्तरण एवं समय पर डीपीसी के आयोजन, पदोन्नति, वेतन निर्धारण तथा सेवानिवृत्ति के लाभों से सम्बन्धित लम्बित प्रकरणों का निस्तारण अभियान चलाकर दिनांक 07.10.2016 से दिनां का 30.11.2016 तक निस्तारित किया जाना है, इस अभियान की मॉनिटरिंग हेतु अतिरिक्त निदेशक कार्यालय हाजा को विभाग का राज्य स्तरीय नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाता है।

निस्तारित किये जाने वाले विषयों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया जाता है-

1. सेवा सम्बन्धी प्रकरण
    1. पेंशन
    2. आश्वासित करियर प्रगति/चयनित/वरिष्ठ वेतनमान प्रकरण
    3. वेतन स्थिरीकरण
    4. वेतन निर्धारण
    5. अवकाश प्रकरण
    6. दो वर्ष का परिवीक्षा पूर्ण करने का नियमित वेतन श्रृंखला स्वीकृति के प्रकरण
    7. स्थाईकरण प्रकरण
    8. वरिष्ठता सूचियों में नामांकन, योग्यता अभिवृद्धि, संशोधन, परिवर्द्धन सम्बन्धी प्रकरण
    9. तदर्थ पदोन्नति सेवा अवधि का नियमितिकरण
    10. सेवा सम्बन्धित प्रकरणों के न्यायिक प्रकरण

उक्त 10 विषयों से सम्बन्धित प्रकरणों के निस्तारण के सम्बन्ध में सर्वप्रथम विभाग के जिला स्तरीय मण्डल स्तरीय, निदेशालय स्तर पर सम्बन्धित विषयवार पृथक-पृथक निम्नांकित प्रपत्र-अ में नामवार सूचना संधारित की जावेः-

प्रपत्र-अ

कार्यालय का नाम-

सेवा सम्बन्धी प्रकरण का विषय का नाम- संवर्ग का नाम-

क्र. सं.	लोक सेवक का नाम मय पद एवं पदस्थापन स्थान	प्रकरण का संक्षिप्त विवरण	प्रकरण कार्यालय में प्राप्ति दिनांक	प्रकरण निस्तारण दिनांक	यदि प्रकरण उच्च स्तर पर निस्तारित किया जाना हो तो सम्बन्धित कार्यालय के प्रकरण भिजवाने का दिनांक

उक्त प्रकरणों को दिनांक 30.11.2016 तक निस्तारित कर निम्नांकित प्रपत्र-ब में पृथक-पृथक उपर्युक्त 10 विषयवार संख्यात्मक सूचना शिक्षा निदेशालय को दिनांक 06.12.2016 तक अनिवार्यतः प्रेषित की जावेः-

प्रपत्र-ब

कार्यालय का नाम-

लेखा सम्बन्धी प्रकरण का विषय का नाम- संवर्ग का नाम-

लम्बित प्रकरणों की कुल संख्या	निर्धारित किए गए प्रकरणों की कुल संख्या	विशेष विवरण

2. विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) सम्बन्धी प्रकरण

उपर्युक्त वर्णित सभी संवर्गों के पदों को विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) का आयोजन कर व 2016-17 तक के पदों पर पदोन्नति कर पदस्थापन आदेश दिनांक 30.11.2016 तक जारी किया जाना सुनिश्चित किया जावे।

डीपीसी आयोजन कर पदस्थापन की कार्यवाही के सम्बन्ध में सम्बन्धित संवर्गवार/पदवार जिला स्तरीय, मण्डल स्तरीय, निदेशालय स्तर पर पृथक-पृथक निम्नांकित प्रपत्र-स में सूचना संधारित की जावे तथा दिनांक 30.11.2016 तक की गई कार्यवाही की सूचना निदेशालय को दिनांक 06.12.2016 तक अनिवार्यत प्रेषित की जावेः-

प्रपत्र-स

कार्यालय का नाम-

डीपीसी संवर्ग का नाम- पद का नाम-

वर्ष 2016-17 तक लम्बित डीपीसी का वर्ष एवं पदों की संख्या का वर्षवार विवरण	वर्ष 2016-17 तक आयोजित डीपीसी का वर्ष एवं पदों की संख्या का वर्षवार विवरण	लाभान्वित कार्मिकों/ अधिकारियों की संख्या का वर्षवार विवरण	वर्ष 2016-17 तक आयोजित डीपीसी से पदोन्नत कार्मिकों/ अधिकारियों के सहयोग आदेश जारी करने की दिनांक वर्षवार एवं पदवार

यह सुनिश्चित किया जावे कि राज्यकर्मियों के सभी प्रकार के लम्बित मामले दिनांक 30.11.2016 के पश्चात विभागध्यक्ष स्तर पर, मण्डल स्तर, जिला स्तर पर तथा ब्लॉक स्तर लम्बित नहीं रहने चाहिए। यह निर्देशित किया जाता है कि सम्बन्धित अधिकारी उन लम्बित प्रकरणों को जो उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं है। आवश्यक पूर्ति एवं अनुशंसा सहित निर्धारित माध्यम से स्वीकृति हेतु सक्षम अधिकारी को निस्तारण हेतु दिनांक 20.10.2016 तक अनिवार्य रूप से प्रेषित करें, इस तिथि के पश्चात् यदि सक्षम अधिकारी को प्रकरण नहीं भिजवाए गए तो सम्बन्धित अधिकारी इसके लिये उत्तरदायी होंगे एवं इसके विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जावेगी।

इस हेतु कर्मचारी कल्याण अभियान समितियों का गठन एतद् द्वारा तत्काल प्रभाव से निम्नानुसार किया जाता हैः-

1. निदेशालय स्तरीय कर्मचारी कल्याण अभियान समिति-

1.	अतिरिक्त निदेशक	अध्यक्ष
2.	उपनिदेशक (प्रशासन)	सदस्य
3.	उप विधि परामर्शी	सदस्य
4.	लेखाधिकारी (पेंशन स्थिरीकरण अनुभाग)	सदस्य
5.	सहायक निदेशक (प्रशासन)	सदस्य
6.	सहायक निदेशक (संस्था-ए)	सदस्य
7.	संस्थापन अधिकारी (संस्था-बी)	सदस्य
8.	सहायक निदेशक (संस्था-सी-1)	सदस्य
9.	सहायक निदेशक (संस्था-सी-2)	सदस्य
10.	सहायक निदेशक (संस्था-सी-3)	सदस्य
11.	प्रशासनिक अधिकारी (संस्था-सी-4)	सदस्य
12.	प्रशासनिक अधिकारी (वरिष्ठता-नियम)	सदस्य
13.	प्रशासनिक अधिकारी (संस्थापन-बी)	सदस्य

निदेशालय के निम्नांकित कार्मिक समिति को सहयोग प्रदान करेंगे-

1. श्री रूपचंद जीनगर,
   का. अधीक्षक कम सहा. प्रशा. अधि. संस्था-सी अनुभाग
2. श्री मदन मोहन व्यास,
   सहायक कार्यालय अधीक्षक, सामान्य प्रशासन
3. श्री श्याम सुन्दर व्यास,
   सहायक कार्यालय अधीक्षक संस्था एबी अनुभाग
4. श्री राजेश परिहार,
   सहायक कार्यालय अधीक्षक संस्थापन एफअनुभाग
5. श्री मोहन लाल सेवग,
   सहायक कार्यालय अधीक्षक, सामान्य प्रशासन
6. श्री राजेश्वर व्यास, सहायक कार्यालय अधीक्षक, वरिष्ठता अनुभाग
7. श्री के.सी. व्यास, लिपिक ग्रेड-1. गोपनीय प्रतिवेदन अनुभाग
8. श्री अनिल कुमार गोस्वामी, लिपिक ग्रेड-1, योजना अनुभाग
9. श्री जितेन्द्र माथुर, लिपिक ग्रेड-1, छात्रवृत्ति अनुभाग
10. श्री सुदेश कुमार भाटी, लिपिक ग्रेड-1 सामान्य प्रशासन
11. श्री राजेश दइया, लिपिक ग्रेड-1, सामान्य प्रशासन

2. मण्डल स्तरीय कर्मचारी कल्याण अभियान समितिः-

1.	उपनिदेशक (माध्यमिक) संबंधित मण्डल	अध्यक्ष
2.	उपनिदेशक (प्रारंभिक) संबंधित मण्डल	सह-अध्यक्ष
3.	संस्थापन अधिकारी	सदस्य
4.	सहायक निदेशक	सदस्य सचिव
5.	कार्यालय में कार्यरत लेखा सेवा का वरिष्ठतम अधिकारी/कार्मिक	सदस्य

नोट-सम्बन्धित मण्डल अधिकारी (अध्यक्ष) कर्मचारी कल्याण अभियान समिति के लिए विज्ञ कार्मिकों को समिति के सहयोगार्थ सम्मिलित करने हेतु अपने स्तर से आदेश प्रसारित करेंगे।

3. जिला स्तरीय कर्मचारी कल्याण अभियान समितिः-

1.	जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/मा-प्रथम)	अध्यक्ष
2.	जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक)	सह-अध्यक्ष
3.	प्रशासनिक अधिकारी	सदस्य
4.	अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी	सदस्य सचिव
5.	कार्यालय में कार्यरत लेखा सेवा का वरिष्ठतम अधिकारी/कार्मिक	सदस्य

नोटः सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (अध्यक्ष) कर्मचारी कल्याण अभियान समिति के लिए विज्ञ कार्मिकों को समिति के सहयोगार्थ सम्मिलित करने हेतु अपने स्तर से आदेश प्रसारित करेंगे।

यह भी निर्देशित किया जाता है कि चूँकि लम्बित प्रकरणों के निस्तारण के लिये सम्बन्धित समिति के अध्यक्षगण उत्तरदायी होंगे अतः समिति अध्यक्ष अपने स्तर पर आवश्यक निर्देश जारी कर समस्त समुचित व्यवस्था कर इस अभियान को सफल बनाने का प्रयास करें तथा इस संबंध में प्रक्रियादि निर्धारित कर, की गई कार्यवाही से इस कार्यालय को दिनांक 13.10.2016 को अनिवार्यतः अवगत करावें।

● (बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/साप्र/बी-2/4389/39/ 03/क.क. अभियान-16/वो-1। दिनांक :7.10.2016

परिपत्र

● राजस्थान सरकार, कार्मिक (क-5) विभाग ● प.14(49) कार्मिक/ क-5/ 2016 जयपुर दिनांकः 05.10.2016 ● समस्त अति. मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव एवं शासन सचिव, समस्त विभागाध्यक्ष/ संभागीय आयुक्त एवं समस्त जिला कलेक्टर्स।

माननीय मुख्यमंत्री महोदया द्वारा जन समस्याओं के निराकरण हेतु नियमित रूप से जन सुनवाई की जा रही है। दिनांक 09.09.2016 को जन सुनवाई के दौरान यह प्रकरण ध्यान में आया है कि राज्य कर्मचारियों के कई प्रकरण यथा-सेवा संबंधी, स्थानान्तरण एवं समय पर डीपीसी के आयोजन पदोन्नति, वेतन निर्धारण तथा सेवानिवृत्ति के लाभ के संबंध में विभिन्न विभागों में लम्बित चल रहे हैं। इससे यह प्रकट होता है कि प्रशासनिक विभागों में लम्बित चल रहे हैं। इससे यह प्रकट होता है कि प्रशासनिक विभागों को दिन-प्रतिदिन के सेवा संबंधी प्रकरणों के निष्पादन हेतु तुरन्त कार्यवाही करने की आवश्यकता है। यदि कर्मचारियों के उक्त प्रकरणों का निस्तारण समय पर हो जाता है तो इससे वादकरण संबंधी

कार्यवाही भी स्वतः कम हो जाएगी और जिसके फलस्वरूप राज्य सरकार के समय एवं धन की भी बचत होगी।

अतः राज्य सरकार ने यह निर्णय लिया है कि राज्य कर्मियों के सभी प्रकार के लम्बित मामले दिनांक 30.11.2016 के पश्चात् विभागाध्यक्ष स्तर पर जिला स्तर तथा ब्लॉक स्तर पर लम्बित नहीं रहने चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह भी निर्णय लिया गया है कि कर्मचारी कल्याण अभियान दिनांक 07.10.2016 से दिनांक 30.11.2016 तक चलाया जाए। जिसमें कर्मचारियों के सेवा संबंधी समस्त उपर्युक्त वर्णित प्रकरणों का निस्तारण किया जाएगा और इनके निस्तारण के लिए संबंधित विभागों के विभागाध्यक्ष एवं प्रभारी शासन सचिवगण उत्तरदायी होंगे।

अतः समस्त अति. मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव एवं शासन सचिव, समस्त विभागाध्यक्ष/संभागीय आयुक्त एवं समस्त जिला कलेक्टर्स को यह निर्देश दिए जाते हैं कि कृपया उक्त कर्मचारी कल्याण अभियान दिनांक 07.10.2016 से 30.11.2016 तक आयोजित करने के संबंध में वे अपने स्तर पर आवश्यक निर्देश जारी कर समस्त समुचित व्यवस्था कर इस अभियान को सफल बनाने का प्रयास करें तथा इस संबंध में प्रक्रिया आदि निर्धारित कर की गई कार्यवाही से इस विभाग को दिनांक 14.10.2016 तक निश्चित रूप से अवगत करावें।

● (ओ.पी. मीना) मुख्य सचिव।

माह : नवम्बर, 2016

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
3.11.2016	गुरुवार	जयपुर	8	विज्ञान	13	सूचना प्रौद्योगिकी
4.11.2016	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस–उत्सव
5.11.2016	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
7.11.2016	सोमवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	16	राष्ट्रीय सुरक्षा
8.11.2016	मंगलवार	जयपुर	10	विज्ञान	16	प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन
9.11.2016	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
10.11.2016	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
11.11.2016	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राष्ट्रीय शिक्षा दिवस–उत्सव एवं कालिदास जयन्ती–उत्सव
12.11.2016	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
14.11.2016	सोमवार	बाल दिवस (उत्सव) गुरु नानक जयन्ती (अवकाश–उत्सव)				
15.11.2016	मंगलवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	24	हमारे गौरव
16.11.2016	बुधवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	12	हमारा संविधान
17.11.2016	गुरुवार	उदयपुर	10	संस्कृत	7	भूकम्प विभीषिका
18.11.2016	शुक्रवार	जयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	19	आधुनिक भारत में होने वाले वैचारिक परिवर्तन एवं समाज सुधार
19.11.2016	शनिवार	उदयपुर	10	संस्कृत	11	विचित्रः साक्षी
21.11.2016	सोमवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	16	अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था
22.11.2016	मंगलवार	उदयपुर	8	हिन्दी	15	शक्ति और क्षमा
23.11.2016	बुधवार	जयपुर	10	संस्कृत	10	अन्त्योक्तयः
24.11.2016	गुरुवार	उदयपुर	9	विज्ञान	15	प्राकृतिक सम्पदा एवं कृषि
25.11.2016	शुक्रवार	जयपुर	7	हिन्दी	12	वन–श्री
26.11.2016	शनिवार	उदयपुर	3	हिन्दी	16	बताओं मैं कौन हूँ
28.11.2016	सोमवार	जयपुर	6	हिन्दी	15	योग और हमारा स्वास्थ्य
29.11.2016	मंगलवार	उदयपुर	5	हिन्दी	15	पन्ना का त्याग
30.11.2016	बुधवार	जयपुर	9	हिन्दी	10	उपसर्ग, प्रत्यय (कृदन्त, तद्धित)

शिविरा पञ्चाङ्ग सत्र 2016-17

नवम्बर 2016					
रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

नवम्बर 2016 ● कार्य दिवस–23, रविवार–4, अवकाश–3, उत्सव–4 ● 1 नवम्बर–भैयादूज अवकाश। **9 से 10 नवम्बर–**राज्य स्तरीय ''रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता'' का आयोजन (SIERT)। **11 नवम्बर–**राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव) एवं कालिदास जयन्ती (उत्सव)। **14 नवम्बर–**बाल दिवस (उत्सव), गुरु नानक जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **18 से 19 नवम्बर–**तहसील स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। **19 से 25 नवम्बर–**कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। **20 नवम्बर–**''नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप'' परीक्षा का आयोजन। (SIERT) **23 से 24 नवम्बर–**राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन (RMSA)। **25 से 26 नवम्बर–**जिला स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **28 से 30 नवम्बर–**राज्य स्तरीय केजीबीवी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना (SSA)। **28 नवम्बर से 1 दिसम्बर–**राज्य स्तरीय ''विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी तथा जनसंख्या शिक्षा मेला'' का आयोजन (SIERT) **29 नवम्बर (अमावस्या)–**समुदाय जागृति दिवस। **नोटः–1.** द्वितीय योगात्मक आकलन का आयोजन (नवम्बर के द्वितीय सप्ताह में) (SIQE/CCE संचालित विद्यालयों में) **2.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजनः- I. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, II. राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा, III. राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा।

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

दिसम्बर 2016					
रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

दिसम्बर 2016 ● कार्य दिवस–19, रविवार–4, अवकाश–8, उत्सव–2 ● 1 दिसम्बर–विश्व एड्स दिवस (SIERT), विश्व एकता दिवस (उत्सव)। **3 दिसम्बर–**विश्व विकलांगता दिवस का आयोजन (समावेशित शिक्षा के उन्नयन हेतु)। **8 से 9 दिसम्बर–**राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **10 दिसम्बर–**मानव अधिकार दिवस (उत्सव)। **10 से 23 दिसम्बर–**अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन। **13 दिसम्बर–**बारावफात (अवकाश-चन्द्र दर्शनानुसार)। **14 से 21 दिसम्बर–**राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन। **15 से 16 दिसम्बर–**राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन व दल गठन। **19–25 दिसम्बर–**राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **24 दिसम्बर से 7 जनवरी–**शीतकालीन अवकाश (25 दिसम्बर को क्रिसमस डे), राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान को दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही करना। **24 से 26 दिसम्बर–**राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **28 से 30 दिसम्बर–**राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **27 से 30 दिसम्बर–**राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। **नोटः–1.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल विकास शिविर का आयोजन (शीतकालीन अवकाश के दौरान)। **2.** 10 दिसम्बर से पूर्व केजीबीवी बालिकाओं को आधारभूत वार्षिक सामग्री का वितरण करना (गर्म कपड़े/स्टेशनरी सहित)।

बोध कथा

मित्र का भरोसा

एक बार युद्ध चल रहा था। कई सिपाही घायल हो गए थे। इसी दौरान एक सिपाही युद्ध क्षेत्र में अपने घायल साथी सिपाही के पास पहुँचने को उतावला हो रहा था। यह देख कप्तान बोला, ''जाने से पहले सोच लो, वहाँ जाना अपनी भी जान जोखिम में डालने जैसा है। वैसे भी जब तक तुम अपने साथी के पास पहुँचोगे, हो सकता है तब तक उसकी मृत्यु हो चुकी हो।''

इसके बावजूद सिपाही युद्ध क्षेत्र में गया और अपने साथी को वापस ले आया। साथी का शव सिपाही के कन्धे पर देख कप्तान बोला, ''मैंने कहा था, वहाँ जाना व्यर्थ ही होगा, देखा वह जीवित नहीं है।'' सिपाही की आँख में आँसू थे। वह बोला ''सर मेरा वहाँ जाना सार्थक रहा, क्योंकि जब मैं वहाँ पहुँचा तो मेरे मित्र की सांसें चल रही थी। मुझे देखकर वह मुस्कुराया और अपने आखिरी शब्द कहे–मैं जानता था मित्र कि तुम जरूर आओगे।'' यह होता है मित्रता का भरोसा।

संकलनकर्ता–**सत्य नारायण नागोरी**
व्याख्याता, राउमावि, केलवाड़ा-313325, कुम्भलगढ़ (राजसमन्द)
मो. 9610334431

विचार धारा

आदर्श वाक्यः संस्थाओं की पहिचान

❒ डॉ. प्रतिष्ठा पुरोहित

भारतीय संसद के प्रवेश द्वार एवं भारतीय मुद्रा पर लिखा 'सत्यमेव जयते' वाक्य अर्थात् सत्य ही विजयी होता है, भारत की आदर्श विचारधारा का परिचायक है। यह भारतीय संस्कृति का मूल आधार है, जनमानस की आस्था तथा भारतीयों को अन्य देशों से पृथक कर विशिष्ट पहचान स्थापित करने वाला 'ध्येय वाक्य' है। मुण्डकोपनिषद् से उद्धरित यह वाक्य भारतीय जीवन के मूल दर्शन की अभिव्यक्ति करता है।

सभी संस्थान प्रायः अपना आदर्श/ध्येय या लक्ष्य वाक्य निर्धारित करते हैं। किसी संस्थान द्वारा निर्धारित आदर्श वाक्य में उस संस्थान की दिशा, कार्य प्रणाली, लक्ष्य तथा संस्थान द्वारा संकल्पित भविष्योन्मुखी उद्देश्यों की छवि प्रतिबिम्बित होती है। महान व्यक्ति भी अपने जीवन का आदर्श तय करते हैं, जिनमें उनके जीवन का लक्ष्य तथा पहचान स्पष्ट होती है। महात्मा गाँधी ने **'सत्य'** को आदर्श माना, इसी के लिए संघर्ष किया और शहीद हुए। विनोबा भावे का **'भूदान यज्ञ'** सुभाष का **'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा'** तथा लालबहादुर शास्त्री का **'जय जवान जय किसान'** आदि महान व्यक्तियों के जीवन के लक्ष्य, ध्येय अथवा आदर्श वाक्य हैं।

भारतीय सेना के आदर्श वाक्य हैं, **'वीरता और विवेक, बी प्रिपेयर (तैयार रहो)'** तथा सर्विस बिफोर सेल्फ (स्व से पहले सेवा)। इन आदर्श वाक्यों से सेना के लक्ष्य एवं भारतीय सैनिकों की देशसेवा एवं समर्पण का पता चलता है। वायु सेना का आदर्श वाक्य है- **'नभः स्पर्शं दीप्तम्'** चमकते हुए आकाश का स्पर्श करे अर्थात् आकाश निरापद हो। जल सेना का आदर्श वाक्य है **'शं नो वरूणः'** वेदों में वरूण को जल का देवता कहा गया है। इस ध्येय वाक्य का अभिप्राय है वरूण में शान्ति प्रदान करें अर्थात् हमारा जल क्षेत्र शान्त रहे, आक्रमणों से, झंझावातों से, सुनामियों से। एन.सी.सी. के

आदर्श वाक्य **'एकता और अनुशासन'** तथा एन.एस.एस. के **'नॉट मी, बट यू'**, (मेरे लिए नहीं, बल्कि आपके लिए) आदर्श वाक्यों में कितने सुन्दर भाव निहित हैं। इनमें भारतीय संस्कृति के मूल्य निहित हैं। भारतीय डाक तार विभाग ने अपना आदेश वाक्य **'अहर्निश सेवामहे'** रखा है। यह विभाग दिन रात जन-सेवा में संलग्न है। भारतीय कर विभाग का आदर्श वाक्य है-**'कोष मूलो दण्डः'**। अनेक विभाग बिना आय के जन साधारण की सेवा करते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क एवं आपदा-प्रबंधन पर अपार धन राशि व्यय होती है। यदि विभिन्न सेवाओं पर कर (दण्ड) नहीं होगा, तो कोष खाली हो जाएगा। अतः कर विभाग का आदर्श वाक्य समीचीन कहा जाएगा। सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े उपक्रम भारतीय जीवन बीमा निगम का आदर्श वाक्य है-**'योगक्षेमं वहाम्यहम्'**। श्रीमद् भगवद्गीता से लिए गए इस वाक्य का गूढ़ अर्थ है। **''मैं (श्री कृष्ण) प्राणियों के योग एवं क्षेम (कल्याण) का वहन करता हूँ।''** यह वर्तमान में **'जीवन के साथ भी, जीवन के बाद भी'** की गहन अभिव्यक्ति है।

आइए, अब प्रमुख शीर्ष शिक्षण संस्थानों के आदर्श वाक्यों का अवलोकन करें। केन्द्रीय, राज्यस्तरीय एवं विश्वविद्यालयी शैक्षणिक संस्थानों के आदर्श वाक्य वृहत स्तर पर उन संस्थानों के लक्ष्य, उद्देश्य तथा कार्य प्रणाली की अभिव्यक्ति करते हैं। भारतीय उच्च स्तरीय सर्वोच्च शिक्षा संस्थान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) ने अपना आदर्श वाक्य रखा है- **'ज्ञान विज्ञानं विमुक्तये।'** प्राचीन काल से शिक्षा का परम लक्ष्य मुक्ति रहा है। आदर्श वाक्य से भी अभिव्यक्त हो रहा है, ज्ञान-विज्ञान मुक्ति का कारक बनें। आध्यात्मिक ज्ञान एवं विज्ञान मिलकर मुक्ति प्रदान करें। समाज की आधुनिक विचारधारा में आज मुक्ति को चाहे उस अर्थ में न ग्रहण किया जाये किन्तु शाश्वत, सांस्कृतिक, भौतिक वैभव एवं जीवन के प्राचीन काल से चले आ रहे संदर्भ को नकारा भी नहीं जा सकता है।

भारतीय माध्यमिक स्तरीय शिक्षा की मार्गदर्शक संस्था राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् का ध्येय वाक्य **'विद्ययाऽमृत मश्नुते'** अर्थात् विद्या से अमरत्व या अमरता प्राप्त होती है, यही संकेत करता है कि शिक्षा का लक्ष्य महान बनाना है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् जो राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक शिक्षा के स्तर निर्धारण से सम्बन्धित है, ने अपना ध्येय वाक्य **'गुरुर्गुरुतमो धाम'** अर्थात् गुरु गुरुत्व का धाम है, को निर्धारित किया है। शिक्षक में गुरुत्व होना चाहिए अर्थात् शिक्षक को ज्ञान, विद्या एवं चरित्र से भारी होना चाहिए। इसीलिए तो गुरु को शिक्षक या आचार्य भी कहा गया है। आचरणात् आचिनोति इति आचार्यः अर्थात् जिसका आचरण ग्रहण करने योग्य हो वही आचार्य है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् इसी को लक्ष्य रखकर अपने ध्येयानुरूप कार्य कर रही है। उच्च स्तरीय शिक्षा के मानविकीकरण एवं प्रत्यायन निर्धारण के लिए बनाई गई संस्था राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नैक) का आदर्श वाक्य है- **'एक्सीलेन्स (excellence) क्रैडीबिलिटी (credibility) एवं रिलेवेन्स (relevance)'** अर्थात् श्रेष्ठता, विश्वसनीयता एवम् प्रासंगिकता। यह संस्था उच्च स्तरीय

संस्थानों यथा विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों का स्तर निर्धारण करती है।

भारत के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने **'विद्ययाऽमृतमश्नुते'** अर्थात् विद्या से अमरत्व या अमरता प्राप्त होती है, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने **'निष्ठा धृतिः क्षमा'** अर्थात् लगन, धैर्य एवं क्षमाशीलता को तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने **'योऽनूचान स नो महान'** अर्थात् जो वेद पढ़े वह हममें श्रेष्ठ है, (यहाँ वेद का अभिप्राय ज्ञान के भण्डार से है) वाक्यों को अपना ध्येय वाक्य बनाया है।

राजस्थान के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के आदर्श वाक्य विश्वविद्यालयों के लक्ष्यों का प्रतिबिम्बन करते है। **'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'** राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर का आदर्श वाक्य है। यहाँ धर्म की संकीर्ण अर्थ में न होकर व्यापक अर्थ लिए है। समस्त संसार की प्रतिष्ठा धर्म में निहित है। धारयति इति धर्मः अर्थात् जिसे धारण किया जाए, जो उचित मार्ग है, वही धर्म है। जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने **'विद्या शक्तिः समस्तानां शक्तिः'** अर्थात् विद्या शक्ति सब की शक्ति है। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर ने **'श्रद्धार्योन्तमते ज्ञान तत्परः संयतेन्द्रियः'** अर्थात् जो श्रद्धावान हैं, वे संयतेन्द्रिय एवं ज्ञान तत्पर हैं। महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर ने **'सर्वेषां भूषणं विद्या'**-विद्या सभी का आभूषण है, मोहनलाल सुखाड़िया, विश्वविद्यालय उदयपुर ने **'विद्यया विन्दतेऽमृतम'** विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है। कोटा विश्वविद्यालय, कोटा ने **'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'** ज्ञान के बिना मुक्ति का कोई साधन नहीं है, महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा ने **'सा विद्या या विमुक्तये'** विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान करे। जनार्दन राय नागर मानित विश्वविद्यालय, उदयपुर ने **'विद्यया विन्दतेऽमृतम्'** वनस्थली विद्यापीठ मानित विश्वविद्यालय ने **'सा विद्या या विमुक्तये'** तथा जैन विश्व भारती संस्थान विश्वविद्यालय, लाडनूँ ने जैन महाव्रतों के महत्वपूर्ण महाव्रत आचार अर्थात् चरित्र व आचरण-**'णाणस्स सारमायारो'** (ज्ञानस्य सारमाचारः) ज्ञान का सार आचरण है को अपना ध्येय वाक्य स्वीकार किया है। उक्त सभी विश्वविद्यालय सामान्य प्रकृति के विश्वविद्यालय हैं।

कतिपय विशिष्ट संदर्भों के विश्वविद्यालयों के ध्येय वाक्यों की समीक्षा करें तो हम पाते हैं कि उनके ध्येय वाक्य उनके विशिष्ट संदर्भों के परिचायक हैं। राजस्थान में संस्कृत शिक्षा विभाग/निदेशालय का ध्येय वाक्य है-**'सरस्वती श्रुति महती महीयताम्।'** विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ शारदा व ज्ञान के अप्रतिम भण्डार वेद विशिष्ट महानता प्रदाता हैं। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर का ध्येय वाक्य है-**'सर्वेप्रपत्रेरधिकारिणोमताः'** सभी मनुष्य ज्ञान के अधिकारी हैं। स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर ने कृषि को महत्व देते हुए **'उत्तमावृत्तिस्तुकृषिकर्मेव'** अर्थात सर्वश्रेष्ठ कार्य कृषि कर्म ही है, को आदर्श वाक्य निर्धारित किया है। पुरानी कहावत भी है **'उत्तम खेती मध्यम व्यापार'**। जोधपुर कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने **'कृषि वृत्तिः अभीष्ट'** पूर्णम् अर्थात् कृषि कार्य अभीष्ट (इच्छा) की पूर्ति करता है तथा महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर ने **'कृषि समृद्धया राष्ट्राभ्युदयः मतः'** अर्थात् कृषि समृद्धि को राष्ट्र का अभ्युदय (विकास) माना जाता है को अपना ध्येय वाक्य निर्धारित किया है। सरदार पटेल पुलिस सिक्योरिटी एण्ड क्रिमिनल जस्टिस (पुलिस विश्वविद्यालय), जोधपुर ने **'नालेज इज पावर'** अर्थात् ज्ञान ही शक्ति है, का सांदर्भिक अर्थ अपराधों के नियंत्रण में शक्ति का विवेकपूर्वक प्रयोग होना चाहिए। इसी प्रकार विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने **'नालेज इज एम्पावरमेंट'** अर्थात् ज्ञान अधिकार प्रदाता है, को अपने ध्येय वाक्य के रूप में स्वीकार किया है। ज्ञान से अधिकार मिले हैं या ज्ञान से अधिकारों की जानकारी होती है। राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, किशनगढ़ (अजमेर) का ध्येय वाक्य है-**'तेजस्विनावधीतमस्तु'** हम दोनों (शिष्य-गुरु) का पढ़ा हुआ तेजस्वी होवे। इसी प्रकार राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर ने अपना ध्येय वाक्य रखा है-**'धन्वातिष्ठन्नोषधिर्निम्नमापः'** तथा राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा का ध्येय वाक्य है-**'ज्ञानं सम्यग वेक्षणम्'** अर्थात् ज्ञान की भली प्रकार जाँच की जानी चाहिए।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर का ध्येय वाक्य है **'सिद्धिर्भवतिकर्मजा'** अर्थात् कर्म से सिद्धि प्राप्त होती है। महान ग्रंथ गीता में भी कर्म का महत्व स्वीकार किया गया है।

उक्त विश्लेषण में संस्थानों के ध्येय वाक्यों से उन संस्थानों के उद्देश्य, लक्ष्य तथा कार्योन्मुखता का परिचय मिलता है। अधिकांश शिक्षण संस्थानों तथा भारत सरकार ने अपने ध्येय वाक्य उपनिषदों से ग्रहण किए हैं। अनेक संस्था प्रधानों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को यह भी पता होता है कि वे जिस संस्था से सम्बद्ध हैं, उसका ध्येय वाक्य क्या है? उन्हें उस संस्था के ध्येय वाक्यानुरूप क्या प्रयत्न करने चाहिए? शिक्षण संस्थानों के कुलपतियों, संस्था प्रमुखों, शिक्षकों व विद्यार्थियों को अपने-अपने संस्थानों के ध्येय वाक्यों पर गहराई से विचार करना चाहिए तथा उन ध्येय वाक्यों में निर्दिष्ट लक्ष्य के प्रति स्वयं को समर्पित करते हुए कतिपय प्रयत्न करने चाहिए, तभी संस्थानों के आदर्श/ध्येय वाक्यों की सार्थकता है।

एस-7, विवेकानन्द मार्ग, सी-स्कीम,
जयपुर (राज.)-30201
मो. 9413977447

शिक्षा विमर्श

प्राणवान शिक्षा : शिक्षक एवं समाज

❒ हरीश कुमार वर्मा

क्या है, प्राणवान शिक्षा ?

मानव मस्तिष्क जिज्ञासु व क्रियाशील है और प्रयोग की जननी है। आज चहुँ ओर जो विकास दृष्टिगोचर हो रहा है, वह निरन्तर किए गए अनुसंधानों व प्रयोगों का ही परिणाम है। इसलिए गतिशीलता को जीवन का सूचक माना गया है, तो स्थिरता को मृत्यु का प्रतीक।

इसी तरह शिक्षा भी एक प्रगतिशील प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करने के साथ उनमें संशोधन व संवर्द्धन करना है, जिससे शिक्षा प्राप्ति के पश्चात विद्यार्थी समाज की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं की पूर्ति कर सके; क्योंकि शिक्षा की प्रखरता तभी बनी रह सकती है, जब वह समय व समाज में अनुकूल हो।

प्रश्न उठता है कि प्राणवान शिक्षा है क्या? प्राणवान शिक्षा कोई विशेष शिक्षा प्रणाली का नाम नहीं वरन ऐसे नवाचार हैं जो समय के साथ शिक्षा को जीवन्त बनाये हुए हो। साधारण शब्दों में कहें तो ऐसी शिक्षा जिसमें जीवन्तता हो।

शिक्षा को समयानुसार बनाए रखने में निरन्तर परिवर्तन आवश्यक है; क्योंकि परिवर्तित परिस्थितियों में पुरानी मान्यता एवं ख्याति प्राप्त विधियाँ भी प्रभावहीन हो जाती हैं। यदि महाभारत का युद्ध आज के युग में लड़ा जाए तो कौरवों एवं पाण्डवों को परम्परागत अस्त्र-शस्त्रों के स्थान पर आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों को उपयोग में लाना पड़ेगा अन्यथा उस युग के भीम, द्रोण, भीष्म, अर्जुन जैसे योद्धा भी टेंक, मशीनगन व परमाणु बम से टक्कर लेने में असमर्थ रहेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में यह बात लागू होती है। शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, अध्यापन विधियों, पाठ्यसहयोगी क्रियाओं, मूल्यांकन, विद्यालय प्रशासन आदि क्षेत्रों में परम्परा से हटकर नई दिशा में किए प्रयास शैक्षिक नवाचार कहलाते हैं, जो शिक्षा को प्राणवान बनाते हैं या यों कहें कि 'नवाचार वह ग्रीस है, जिससे शिक्षारूपी मशीन से विभिन्न पुर्जे अतिरिक्त गति प्राप्त करते हैं, ताकि उनमें जीवन्तता बनी रहे।

शैक्षिक नवाचार का सर्वप्रथम प्रारम्भ हमारे देश में राजस्थान राज्य से ही प्रारम्भ माना गया है। विशेष रूप से 1984 से ग्रीष्मावकाश में क्रियाशील अवकाश योजना प्रारम्भ हुई । 'शिक्षा नूतन प्रयोग' खोज एवं आविष्कार या कोई भी परिवर्तन जो किसी कार्यक्रम की वर्तमान स्थिति में, संस्थात्मक व गुणात्मक अभिवृद्धि करे, इसे ही हम नवाचार कहेंगे। यदि यह प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में है तो प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित नवाचार कहलायेगा तथा माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित है तो माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित नवाचार होगा।

नवाचार उसके उपयोगकर्ता पर निर्भर रहे। कोई नवाचार किसी एक उपयोगकर्ता के लिए नवाचार है, किन्तु दूसरे के लिए नहीं। वर्तमान परिस्थिति में साधन स्रोत, उपलब्धियों के आधार पर आप स्वयं भी अपनी सूझ-बूझ से नवाचार का प्रयोग कर सकते हैं। जैसे कि कहावत है, कि 'पहनने वाला ही जानता है कि पांवों में जूता कहाँ चुभता है, अतः आप स्वयं अपनी कक्षा की समस्या हल कर गहन अध्ययन के बाद नया हल निकाल सकते हैं, वही नवाचार होगा।

कक्षा में नवाचार के दो क्षेत्र हैं-शैक्षिक व सहशैक्षिक नवाचार। शैक्षिक नवाचार के अन्तर्गत, विद्यालय में बालक भिन्न-भिन्न रुचि व बुद्धिलब्धि के आते हैं, अतः उनकी व्यक्तिगत कठिनाई का पता लगाकर उन्हें अध्यापन कराया जाता है, इस हेतु शैक्षिक तकनीक का उपयोग किया जाता है जैसे रेडियो, टेप, टी.वी., कम्प्यूटर प्रोजेक्ट आदि के द्वारा बालकों की विभिन्न समस्याओं का पता लगाया जाता है, ताकि वे अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। सहशैक्षिक नवाचार के अन्तर्गत विज्ञान क्लब, भाषण, वाद-विवाद प्रदर्शनी नाटक, कठपुतली, मनन कुटीर, आरोग्य मंदिर, योगासन, चार्ट्स, मॉडल व आशुरचित उपकरणों द्वारा शिक्षण कराया जाता है। नवाचारों के क्रियान्वयन में, शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण है, उसे भी अपनी शैक्षिक योग्यता में अभिवृद्धि करना तथा विभिन्न अभिनवन प्रशिक्षणों के माध्यम से नवीन जानकारी प्राप्त करना होगा।

आज सिद्धांत बदल रहे हैं, ऐसे में शिक्षक का कार्य ज्ञान का केवल रखरखाव करना नहीं हो सकता है। वह पूरे समय छात्रों से सम्बन्धित रहने वाला साथी है, बदलते जीवन मूल्यों के कारण, शिक्षक की भूमिका ही बदल रही है। जिस तरह डॉक्टर, मानव शरीर में आए विकारों को शल्य क्रिया के इलाज द्वारा उसे नया जीवन देता है, ठीक वैसे ही शिक्षा के डॉक्टर शिक्षक को भी शिक्षा में उत्पन्न विकृतियों का पता लगाकर उसे पुनः प्राणवान बनाना है।

बालक कोरी स्लेट नहीं, जिस पर अध्यापक सभ्यता का पाठ अंकित कर ले। वह एक क्रियाशील सचेतन प्राणी है। स्कूल में प्रवेश के समय वह चार बुनियादी संवेग लेकर आता है, संवाद करना/निर्माण करना/प्रश्न पूछना तथा स्वयं को अभिव्यक्त करना। प्राणवान शिक्षा वही होगी, जो इन संवेगों को उपयुक्त दिशा प्रदान करे। वर्तमान समय में शिक्षा में मात्र लिखना, पढ़ना, गणना आकृतियाँ बनाना, तथ्यों के विषय में दूसरों के मतों को याद करना व कंठस्थ करना मात्र नहीं है, वरन् सीखना है, जो कि एक सक्रिय प्रक्रिया है एवं शिक्षा को प्राणवान बनाए रखने का एक अचूक हथियार है।

एक चीनी कहावत है- 'किसी को भोजन देने के बदले, भोजन बनाना सिखाएँ और हो सके तो भोजन बनाने के उपकरण बनाना सिखा दें, क्योंकि पकी-पकाई खाने की प्रकृति प्रमाद का द्योतक है। ठीक ही कहा गया है। एक औसत दर्जे का शिक्षक बताता है, अच्छा शिक्षक समझाता है, और उससे भी अच्छा शिक्षक प्रदर्शित करता है 'और ये ही शिक्षा को प्राणवान बनाए रखने का मंत्र है।

केवल पाठ्यक्रम के समुद्र में छात्रों को

नहलाना ही पर्याप्त नहीं है। एक सफल शिक्षक बालक की हर गतिविधि के साथ सक्रिय भूमिका निभाकर एक निष्क्रिय बालक को गतिशीलता से भरता है ताकि वह अनवरत गति से समय के साथ चलता रहे। शिक्षा को प्राणवान बनाए रखने का एक और गुण है-प्रशंसा। तभी तो अच्छा शिक्षक तारीफ में कंजूसी नहीं करता, क्योंकि तारीफ पाकर बालक दुगुने उत्साह एवं जोश से कार्य कर सकता है। तनाव व थकान से दूर रह सकता है।

प्राणवान शिक्षा का एक और पहलू है- पाठ्य सहगामी क्रियाएँ जैसे उत्सव, पर्वों की प्रवृत्ति। आजकल गुमनामी के अंधेरे में खोती जा रही है। जैसे महाकाव्यों के प्रणेताओं ने उर्मिला जैसे पात्रों को उपेक्षा के तारघर में डाले रखा, उसी तरह किसी समय का यह नवाचार भी विद्यालय में आज लापरवाही का शिकार हो रहा है और जो शिक्षा को चेतनाशून्य कर रहा है। कुछ सामयिक ज्वलन्त प्रश्न शिक्षक के मस्तिष्क में उठने चाहिए जैसे-कक्षा के कोने में चुपचाप खोया बालक सुकरात बन सकता है, हाथों व उंगलियों को नचाने वाली कोई बालिका नर्तकी, मनन विचारों में डूबा कोई विवेकानन्द बन सकता है। खिड़की के बाहर झाँकता प्रकृति के अद्‌भुत रहस्यों में उलझा जगदीश चन्द्र या तेज भागता कोई मिलखा सिंह बन सकता है। सूत्रधार बनना होगा शिक्षक को। बालकों को उड़ान भरने के इच्छुक नन्हें परिन्दों के रूप में देखना चाहिए, उन्हें खुली हवा व मुक्त गगन देना ही शिक्षक का सार्थक प्रयास होना चाहिए।

प्राणवान शिक्षा एवं समाज

यह मानना गलत है कि बालक कोरे कागज हैं, उनमें भिन्नताएं होती हैं, शरीर का ढाँचा वंशानुगत है, परन्तु शेष वातावरण परिस्थितियों पर निर्भर होता है। परिस्थिति निर्माण में सहायक है पूरा समाज, जिसमें शिक्षक भी है अभिभावक भी है व प्रशासन तंत्र भी है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा बालक इसी समाज से प्राप्त करता है। आज बालक समाज में कई प्रकार के प्रदूषित विचारों से ग्रसित है, जिसका प्रमुख कारण जीवन मूल्यों में कमी है।

बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षक, समाज एवं अभिभावक तीनों ही महत्वपूर्ण घटक है। वर्तमान परिस्थितियों में, शिक्षक एवं अभिभावकों का दायित्व बड़ा है। बदलते परिवेश में बालकों को शिक्षा के अवसर प्रदान करावें तथा उन्हें सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान कराने में सहयोगी बनें, जिससे वे अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हो सके। शिक्षक को बालक को आधे भरे पानी में गिलास के समक्ष देखना होगा, खाली नहीं। प्रत्येक पल कक्षा में शिक्षक द्वारा बालकों को स्नेह, प्रोत्साहन व सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

शिक्षक के लिए कहा भी गया है, 'गुरु नहीं तुम मित्र बनों अब, नन्हे-मुन्नों को मुक्त करो अब'

प्रेरक वातावरण बनाओ-भय-तनाव से मुक्ति दिलाओ। बाल-मन-मानवीयता एवं नवीनता चाहता है। वह बहुत जल्दी किसी से ऊब जाता है, उस चंचल मन को चाहिए, कुछ नयापन। चाहे खेल का मैदान हो, प्रार्थना सभा का मंच हो, स्काउट हो या शिविर, बस उसे तो अवसर दो। इन्हीं अवसरों से वह अपनी प्रतिभाओं को मूर्त रूप देगा।

शिक्षक अपने पद से नहीं ज्ञान से होता है, उसे निरन्तर ज्ञान की वृद्धि कर योग्यता बढ़ाना है, उसका परम दायित्व होगा। आज समय आ गया है, कि शिक्षक अपने ज्ञानवान होने का दंभ नहीं पाले, तभी तो वह एक फेसीलिटेटर के रूप में दायित्व का वहन कर सकेगा। अन्त में हम इस संदेश के माध्यम से शिक्षा को जीवन्त बनाए रखने हेतु एक नूतन, विचार प्रस्तुत कर सकते हैं-

'गंगा प्रदूषित हो सकती है पर गंगोत्री को तो पवित्र रहना होगा, मैली गंगा का प्रदूषण तो देर-सबेर दूर हो ही जाएगा, लेकिन गंगोत्री ही यदि प्रदूषित हो गई तो कोई उपचार नहीं होगा, अतः पहली आवश्यकता है, गंगोत्री को पवित्र रखना, ताकि गंगा की प्राणवत्ता बनी रहे एवं अनवरत गति से जीवन का संचार करती रहे।

यही प्राणवान शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य होगा। आइए हम गुणगान करें।

'बच्चे तो फूल हैं, जिन्हें एहसास नहीं है,
गलत सही का, शिक्षक को ही माली बनकर,
इस उपवन को महकाना है।'

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स,
हिरणमगरी, मनवाखेड़ा रोड, उदयपुर (राज.)
मो. 9982045522

महानता के लक्षण

एक बालक नित्य विद्यालय पढ़ने जाता था। घर में उसकी माता थी। माँ अपने बेटे पर प्राण न्योछावर किए रहती थी, उसकी हर माँग पूरी करने में आनंद का अनुभव करती। पुत्र भी पढ़ने-लिखने में बड़ा तेज़ और परिश्रमी था। खेल के समय खेलता, लेकिन पढ़ने के समय का ध्यान रखता। एक दिन दरवाज़े पर किसी ने-'माई! ओ माई!' पुकारते हुए आवाज़ लगाई तो बालक हाथ में पुस्तक पकड़े हुए द्वार पर गया, देखा कि एक फटेहाल बुढ़िया काँपते हाथ फैलाए खड़ी थी। उसने कहा, 'बेटा! कुछ भीख दे दे।' बुढ़िया के मुँह से बेटा सुनकर वह भावुक हो गया और माँ से आकर कहने लगा, 'माँ! एक बेचारी गरीब माँ मुझे बेटा कहकर कुछ माँग रही है।' उस समय घर में कुछ खाने की चीज़ थी नहीं, इसलिए माँ ने कहा, 'बेटा! दाल-रोटी तो कुछ बची नहीं है चाहे तो चावल दे दो।'

पर बालक ने हठ करते हुए कहा-'माँ! चावल से क्या होगा? तुम जो अपने हाथ में सोने का कंगन पहने हो, वही दे दो न उस बेचारी को। मैं जब बड़ा होकर कमाऊँगा तो तुम्हें दो कंगन बनवा दूँगा।' माँ ने बालक का मन रखने के लिए सच में ही सोने का अपना वह कंगन कलाई से उतारा और कहा, 'लो, दे दो।' बालक खुशी-खुशी वह कंगन उस भिखारिन को दे आया। भिखारिन को तो मानो एक ख़ज़ाना ही मिल गया। कंगन बेचकर उसने परिवार के बच्चों के लिए अनाज, कपड़े आदि जुटा लिए। उसका पति अंधा था। उधर वह बालक पढ़-लिखकर बड़ा विद्वान हुआ, काफ़ी नाम कमाया। एक दिन वह माँ से बोला, 'माँ! तुम अपने हाथ का नाप दे दो, मैं कंगन बनवा दूँ।' उसे बचपन का अपना वचन याद था। पर माता ने कहा, 'उसकी चिंता छोड़। मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूँ कि अब मुझे कंगन शोभा नहीं देंगे। हाँ, कलकत्ते के तमाम ग़रीब बालक विद्यालय और चिकित्सा के लिए मारे-मारे फिरते हैं, उनके लिए तू एक विद्यालय और एक चिकित्सालय खुलवा दे जहाँ निशुल्क पढ़ाई और चिकित्सा की व्यवस्था हो।' माँ के उस पुत्र का नाम था ईश्वरचंद्र विद्यासागर।

नेतृत्व

सह-शैक्षिक गतिविधियाँ : संस्था प्रधान की भूमिका

❒ मंजू वर्मा

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। जिसमें शैक्षिक, शारीरिक, चारित्रिक, नैतिक, मानसिक और सामाजिक गुणों का विकास सम्मिलित है। हम सभी यह जानते हैं कि केवल कक्षाकक्ष में बैठाकर निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा करा देने से सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। सर्वांगीण विकास के लिए प्रत्येक संस्था प्रधान को शैक्षिक के साथ-साथ सह शैक्षिक गतिविधियों को भी उतना ही महत्व देना पड़ेगा।

हमारा विभाग, सरकार और जनसाधारण की भी यही मंशा रहती है कि विद्यालयों में सरकारी निर्देशों की पालना हो, विद्यालय विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में भागीदार रहे तथा विद्यार्थी आगे चलकर राष्ट्र के विकास में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर सके।

विद्यालयों के संचालन हेतु समय-समय पर राज्य सरकार, शिक्षा विभाग, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, NCERT, SIERT द्वारा विभागीय नीति नियम निर्धारित किए जाते हैं और उनकी पालना सुनिश्चित करने का दायित्व सभी संस्था प्रधानों का होता है। अतः सभी संस्था प्रधानों का यह दायित्व बनता है कि विद्यालय में प्रत्येक बालक अनुशासित रहे। पठन-पाठन के साथ-साथ सभी सहभागी प्रवृत्तियों का सफल संचालन हो। विद्यालय केवल एकपक्षीय विकास की विचारधारा नहीं रखे अपितु संतुलित व सर्वांगीण विकास का पक्षधर हो।

मोटे तौर पर विद्यालय क्षेत्र को तीन भाग में बांटा जा सकता है-

1. शैक्षिक क्षेत्र
2. सह शैक्षिक क्षेत्र
3. भौतिक क्षेत्र

जहाँ तक शैक्षिक क्षेत्र की बात है सभी संस्था प्रधान लगभग सभी बिन्दुओं की पालना करते है परन्तु जहाँ सहशैक्षिक क्षेत्र की बात आती है तो हममें से बहुत से संस्था प्रधान सभी गतिविधियाँ नहीं कर पाते। इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे-

1. इन प्रवृत्तियों के संचालन के लिए विभाग की पर्याप्त धन-बजट की उदार नीति नहीं है।
2. समय-समय पर शिक्षकों के प्रशिक्षण का अभाव रहता है।
3. सहशैक्षिक गतिविधियों को विद्यालय का अतिरिक्त कार्य भार मान कर कम समय दिया जाता है।
4. विभाग का कार्य इतना अधिक होता है कि इन गतिविधियों को पर्याप्त समय नहीं मिलता।

पर परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों हमें निम्न गतिविधियाँ विद्यालय में आवश्यक रूप से करनी चाहिए—

1. प्रार्थना सभा कार्यक्रम में सुधार और उन्नयन- सभी संस्था प्रधान को मालूम होना चाहिए कि अब प्रार्थना सभा की समयावधि 30 मिनट कर दी गई है। जिसमें 20 मिनट प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम यथा वन्देमातरम्, प्रार्थना, श्लोक/अनमोल वचन, प्रेरक प्रसंग, देशभक्ति गीत, दैनिक समाचार, ध्यान/मौन, प्रतिज्ञा, राष्ट्रगान होना चाहिए तथा 10 मिनट सूर्य नमस्कार व योग को दिया जाना चाहिए।

प्रार्थना को जितना संभव हो सके प्रभावी बनाया जावे। संस्था प्रधान निर्धारित कार्यक्रम के साथ विषयवार प्रश्नोत्तर (वस्तुनिष्ठ) हेतु भी 5 से 7 मिनट रख सकते हैं। इस प्रवृत्ति से बालक में शारीरिक के साथ-साथ मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास होगा।

2. खेलकूद गतिविधियों का प्रभावी संचालन- संस्था प्रधान विद्यालय में स्थान की उपलब्धता और खेल सामग्री की उपलब्धता के आधार पर खेलकूद गतिविधियों का आयोजन प्रभावी ढंग से कराएँ। यदि विद्यालय में शारीरिक शिक्षक है तो अच्छी बात है परन्तु यदि नहीं भी है तो जो शिक्षक खेलकूद गतिविधियों में रुचि रखते हैं उनको इस गतिविधि का प्रभारी बनाकर संचालन कराया जावे। इस प्रवृत्ति से बालकों में शारीरिक विकास के साथ-साथ सामूहिकता की भावना, सहयोग की भावना, नेतृत्व का गुण आदि नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

3. गाइड, स्काउट, एन.एस.एस. एन. सी. सी. गतिविधि का प्रभावी संचालन- स्काउट गाइड गतिविधि प्राथमिक कक्षाओं से प्रारम्भ हो जाती है। प्रायः 10 वर्ष के बालक बालिका कब व बुलबुल तथा 10 वर्ष से अधिक के बालक स्काउट तथा बालिका गाइड होती है।

इस प्रवृत्ति से त्याग, सामाजिक सेवा, साहसिक प्रवृत्तियाँ और चारित्रिक गुणों का विकास होता है। स्काउट समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर रहता है। हमारे राष्ट्रीय व सामाजिक कार्यक्रम यथा पल्स पोलियो अभियान, स्वास्थ्य सम्बन्धी शिविर, मेले इत्यादि में समाज सेवा का कार्य बखूबी किया जा सकता है।

एन.एस.एस.- प्रवृत्ति में छात्राओं हेतु 10 दिवसीय केम्प आयोजित कर उन्हें रहन-सहन, रीति-रिवाज व श्रमदान जैसे कार्य सिखाए जाते है। इस प्रवृत्ति से बालक-बालिकाओं में सामाजिक सेवा, समूह प्रवृत्ति, शारीरिक श्रम व राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है।

एन.सी.सी.- यह प्रवृत्ति कुछ ही विद्यालयों में संचालित होती है। इस प्रवृत्ति में सम्मिलित कैडेट्स राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव से जुड़ जाते हैं। इसमें वायु सेना, थल सेना, जल सेना, सेना व्यवस्था, सेना चिह्न, निशानेबाजी, शस्त्र व हथियारों का रखरखाव तथा उनके प्रयोग की जानकारी दी जाती है।

4. साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियाँ-यह गतिविधि समस्त विद्यालयों में चलाई जाती है। वाद-विवाद, निबंध लेखन, भाषण, कवितापाठ, रचनात्मक लेखन, चित्रकला, प्रोजेक्ट व मॉडल निर्माण, नुक्कड़ नाटक, नृत्यकला इत्यादि गतिविधियाँ कराने से बालकों के अन्दर छिपी प्रतिभा का विकास होता

है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आंतरिक मूल्यांकन प्रवृत्ति माध्यमिक विद्यालयों में इसी उद्देश्य से संचालित की जाती है। विद्यालय आधारित मूल्यांकन योजना के अन्तर्गत कक्षा 9 व 10 के लिए विद्यालय में संचालित साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में से प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेना अनिवार्य किया गया है।

5. विद्यालयी शनिवारीय कार्यक्रमों का प्रभावी आयोजन– शनिवारीय कार्यक्रम के अन्तर्गत बाल सभा का आयोजन अनिवार्य रूप से किया जावे। सभी कालांशों में से 5-5 मिनट कम करते हुए अन्तिम कालांश पश्चात बाल सभा का आयोजन किया जाना चाहिए। बाल सभा में निम्नानुसार कार्यक्रम रखा जा सकता है-

प्रथम शनिवार– किसी महापुरुष के जीवन पर प्रेरक प्रसंग की जानकारी।

द्वितीय शनिवार– शिक्षाप्रद प्रेरक कहानियों का वाचन।

तृतीय शनिवार– राष्ट्रीय महत्व के समसामयिक समाचारों की समीक्षा एवं किसी महापुरुष अथवा स्थानीय सन्त महात्मा का उद्बोधन।

चतुर्थ शनिवार– सद् साहित्य, महाकाव्यों पर प्रश्नोतरी कार्यक्रम इत्यादि।

पंचम शनिवार– प्रेरक नाटक का मंचन, राष्ट्रभक्ति गीत गायन इत्यादि।

6. वार्षिक उत्सव– यह सह शैक्षिक गतिविधि भी बालकों में अनेक गुणों का विकास करती है। सभी विद्यालयों में वार्षिक उत्सव मनाया जाना अनिवार्य है। यह 30 नवम्बर तक आवश्यक रूप से मनाया जाना चाहिए। विभिन्न प्रतियोगिताएं SUPW केम्प सभी 30 नवम्बर तक समाप्त करना अनिवार्य है। यदि अपरिहार्य परिस्थितियों में 30 नवम्बर तक वार्षिक उत्सव नहीं मनाया जा सके तो जिला शिक्षा अधिकारी की अनुमति से ही इसे मनाया जावे।

7. शिक्षक-अभिभावक परिषद् का प्रभावी संचालन– समस्त राजकीय विद्यालयों में शिक्षक अभिभावक संघ गठित करना अनिवार्य है और प्रत्येक माह अमावस्या के दिन प्रातः 9:00 बजे से 10:00 बजे तक यह बैठक आवश्यक रूप से ली जावे। पहले इसमें सीमित सदस्य होते थे परन्तु निदेशक मा. शि. के आदेशानुसार अब सभी अध्यापक एवं अभिभावक-अध्यापक अभिभावक परिषद् के सदस्य होंगे।

विद्यार्थी के प्रवेश के साथ ही उनके अभिभावक का पंजीयन अध्यापक अभिभावक रजिस्टर में किया जावे। इस बैठक में संस्था प्रधान विद्यालय विकास योजना की गत तीन माह की प्रगति प्रस्तुत करेंगे तथा आगामी तीन माह हेतु कार्य योजना पर विचार-विमर्श करेंगे। साथ ही शैक्षिक के साथ-साथ सहशैक्षिक उपलब्धियों पर भी विचार विमर्श करेंगे। SMC कक्षा 1 से 8 व SDMC कक्षा 9 से 12 की बैठक भी यथासंभव अमावस्या के दिन ही आयोजित किए जाने के निर्देश है।

8. विद्यालयी शैक्षिक भ्रमण का आयोजन– बालकों को शैक्षिक भ्रमण आवश्यक रूप से कराया जाना चाहिए। स्थान एवं परिस्थितियों के अनुसार भ्रमण कराया जाए। भ्रमण स्थानीय, जिला और राज्य स्तर का भी हो सकता है।

सभी संस्था प्रधान स्टाफ सदस्यों व अभिभावकों की बैठक लेकर प्राकृतिक सामाजिक और ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण की योजना बना सकते हैं। इससे बालकों में निश्चित रूप से स्थाई ज्ञान की प्राप्ति होगी।

9. विद्यालय पत्रिका/भित्ति पत्रिका को लागू करना– संस्था प्रधान बालकों में लेखन अभिव्यक्ति का विकास करने हेतु जन सहयोग से अथवा छात्र कोष से विद्यालय पत्रिका प्रकाशन कर सकते हैं। इससे एक तरफ विद्यालय की वर्षपर्यन्त उपलब्धियाँ प्रकाशित होगी, साथ ही शिक्षकों व बालकों में लेखन कला का विकास होगा।

बालकों से भित्ति पत्रिका भी समय-समय पर बनवाकर Display बोर्ड में प्रदर्शित करना अच्छी प्रवृत्ति है। इससे विद्यालय का सौंदर्य तो बढ़ता ही है साथ ही रचनात्मक शैली का भी विकास होता है।

10. सुलभ सुविधाओं व पेयजल सुविधा का रखरखाव– सभी संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि उनके विद्यालय में जो भी सुलभ सुविधाएँ हैं उनकी नियमित साफ-सफाई हो एवं पेयजल सुविधा पर्याप्त हो तथा उनका रखरखाव बेहतर ढंग से हो। इस हेतु सर्वशिक्षा द्वारा प्रतिमाह 150 रु. तथा RMSA द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में 5000 प्रतिवर्ष रुपये उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके अतिरिक्त जनसहयोग, छात्रकोष व विकास कोष से भी व्यवस्था की जा सकती है। पेयजल व सुलभ सुविधाओं का रखरखाव सीधा हमारे स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है; अतः इसमें लापरवाही घातक साबित हो सकती है।

इसके अतिरिक्त मध्याह्न भोज से पूर्व व पश्चात भी साबुन से हाथ धोने की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जावे।

11. स्वास्थ्य जाँच– सभी संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि विद्यालय में बालकों की वर्ष में दो बार स्वास्थ्य जाँच अवश्य हो। साथ ही इसका रिकॉर्ड भी आवश्यक रूप से संधारित करे। समीप के अस्पताल डिस्पेन्सरी अथवा आँगनबाड़ी कार्यकर्ता से मिलकर स्वास्थ्य जाँच की दिनांक निश्चित की जा सकती है।

12. विभिन्न क्लबों की स्थापना– यह प्रवृत्ति भी अनिवार्य की गई है। सभी राजकीय विद्यालयों में Child Rights Club वन एवं पर्यावरण क्लब (Ecoclub) विज्ञान क्लब एवं Road Safety Club की स्थापना अनिवार्य रूप से की जावे। तथा समय-समय पर इनसे सम्बन्धित गतिविधियों का आयोजन भी आवश्यक रूप से

किया जावे।

इन क्लबों की स्थापना से बालकों में अधिकारों के प्रति जागरूकता, पर्यावरण प्रेम, सड़क सुरक्षा नियम व विज्ञान सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होगी।

13. उत्सव व जयन्तियों का प्रभावी संचालन– सभी संस्था प्रधान आवश्यक रूप से समय-समय पर उत्सव व जयन्तियाँ मनाएं तथा इसका रिकॉर्ड संधारित करें। उत्सव व जयन्तियाँ हमारे रीति-रिवाज और महापुरुषों के जीवन की प्रेरणा देते है।

14. कम्प्यूटर शिक्षण– आज राजकीय विद्यालयों में लगभग सभी जगह ICT फेज I, II, III के अन्तर्गत कम्प्यूटर लेब संचालित है। शेष विद्यालयों में फेज IV के अन्तर्गत लेब स्थापित की जा रही है। माध्यमिक शिक्षा विभाग ने इन्टरनेट कनेक्शन डॉगल भी अनिवार्य कर दिया है। चूँकि कम्प्यूटर लेब में नियमानुसार कक्षा 9 व 10 को ही कम्प्यूटर शिक्षण प्रदान किया जाता है परन्तु यदि संस्था प्रधान चाहे तो कक्षा 9 व 10 के साथ-साथ अन्य कक्षाओं को भी समय सारणी बनाकर मध्यान्तर अथवा प्रार्थना कार्यक्रम अवधि में एक-एक कक्षा को प्रतिदिन कम्प्यूटर के बेसिक ज्ञान की जानकारी देने की व्यवस्था कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त समय-समय पर ज्ञानवर्द्धक चलचित्र भी दिखाए जा सकते हैं।

इस प्रकार सहशैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत उपर्युक्त गतिविधियों के अलावा भी अनेक गतिविधियाँ हैं। परन्तु उपर्युक्त गतिविधियाँ लगभग अनिवार्य गतिविधियाँ हैं जिन्हें क्रियान्वित करना संस्था प्रधान की जिम्मेदारी है।

एक विद्यालय बालक का सर्वांगीण विकास तभी कर सकता है जब उस विद्यालय में बालक को शैक्षिक के साथ-साथ सह शैक्षिक प्रवृत्तियों का भी पूरा लाभ मिले।

प्रधानाचार्य
रा.बा.उ.मा.वि. सिंवाची गेट, जोधपुर
मो. 9414917525

दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं।

विद्यालय का समाजीकरण

❐ वृद्धिचन्द गोठवाल

विद्यालय मानव समाज का अभिन्न अंग है। बालक के जीवन का निर्माण होता है। अतः विद्यालय के प्रति जन-जन का आकर्षण होना चाहिए। विद्यालय के सर्वांगीण विकास में समाज की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पर आज समाज का ध्यान राजनीति, भावज्ञान, आन्दोलन और देश-विदेश की बातों पर तो है किन्तु विद्यालय के भौतिक एवं शैक्षिक प्रगति पर नहीं। कहना होगा जब समाज शिक्षा में रुचि नहीं लेता है तो वर्तमान परिस्थितियों में बालकों की अच्छी शिक्षा कागजों में तो दर्शायी जा सकती है किन्तु मानवीकरण से अछूती रहती है। ऐसा नहीं है कि विद्यालय के हालात समाज नहीं जानता है अन्य विभागों की भाँति विद्यालय का समाज पर कोई सीधा दबाव नहीं, इसलिए लोग विद्यालय के प्रति न ध्यान देते हैं और न किसी प्रकार का चिन्तन करते हैं। परिणामस्वरूप अनेक प्रकार के अभावों में तो चल रहे हैं लेकिन अपेक्षित एवं गुणात्मक स्थिति कहाँ कोई विद्यालय सर्वगुण सम्पन्न दिखाई नहीं देते। विद्यालय के सामाजिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता जरूरी है, न कि उपेक्षा वृत्ति।

हम चाहते हैं कि हमारे बालकों को अच्छी से अच्छी शिक्षा मिले, खेलकूद में ख्याति प्राप्त हो, देश के लोग सुनागरिक कहलाएँ, आदर्श परिवार एवं समाज के निर्माता हो, अच्छे वैज्ञानिक राजनेता और राष्ट्र निर्माता बनें तो समाज का ध्यान विद्यालय के चहुँमुखी विकास पर होना चाहिए। जहाँ समाज की दृष्टि विद्यालय के भौतिक एवं मानवीय संसाधन की व्यवस्था और सहयोग की है, वहाँ हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति का रिकार्ड देखने में आता है। शासकीय से विद्यालय विकास समितियाँ निर्मित हो जाती है, पर सदस्यों की भूमि का सक्रिय नहीं हो तो कोई मतलब नहीं। समिति के सदस्यों का चयन करने में शिक्षाप्रेमी, खेलप्रेमी, समाजसेवी, कर्मठ कार्यकर्ता और कर्तव्यनिष्ठ लोगों को सम्मिलित करना चाहिए। भेदभाव की नीति एवं जिन लोगों में अच्छी शिक्षा की कल्पना ही नहीं हो उन्हें विद्यालय विकास समिति का मेम्बर कदापि नहीं बनाना चाहिए।

हर समस्या का हल शिक्षा में निहित है अतः शिक्षा के केन्द्र विद्यालयों को समाज से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए। इसके लिए विद्यालय परिवार उत्तरदायी है। शिक्षक का सामाजिक दायरा कई अभावों का समाधान कर देता है। चाहे भवन निर्माण का मामला हो या खेल के मैदान का अथवा शैक्षिक सामग्री का, उनकी पूर्ति सामाजिक सम्पर्क से हो जाती है। दरअसल समाज द्वारा विद्यालय को प्रतिष्ठित स्थान नहीं माना जाता, उस इस बात का ध्यान ही नहीं कि विद्यालय समाज का दर्पण होता है। इसी तरह अध्यापकों से भी यदि विद्यालय के सन्दर्भ में कोई चर्चा की जाए तो ऐसा लगता है कि उनका विद्यालय विकास से कोई सम्बन्ध ही नहीं है,बल्कि शिक्षक अपनी उपस्थिति को ही राष्ट्र निर्माण होना मान रहे हैं। ऐसी स्थिति में समाज की ताकत ही विद्यालय को गति प्रदान कर सकती है। शिक्षक समुदाय एवं अभिभावक बंधुओं की रीति-नीति सकारात्मक दृष्टिकोण की हो, ताकि भावनात्मक सम्बन्ध प्रेम एवं भाईचारे के रहे, जिससे विद्यालय में शैक्षिक वातावरण उत्कृष्ट स्थिति का ही रह सकता है।

आप कहीं भी ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में जाएं तो विद्यालय की पहचान में संकोच होता है। विद्यालय पर्यावरण देखकर तो लगता नहीं कि क्या सचमुच यह विद्यालय ही है। कहीं कमरों का अभाव है, कहीं शिक्षकों का अभाव है, कहीं बालक ही नहीं। इसी तरह पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल व्यवस्था की डांवाडोल स्थिति। आज ऐसी स्थिति में समाज के भद्र पुरुषों को चिन्ता होनी चाहिए। लेकिन हमारे समाज में गपशप में समय खोना सामान्य बात है किन्तु बालकों की शिक्षा पर ध्यान देना, सहयोग करने की अवधारणा नहीं। समाज की उपेक्षा से विद्यालय कई कमियों के शिकार है। इसलिए मानव समाज को चाहिए कि विद्यालयों के भौतिक तथा मानवीय संसाधनों में भरपूर सहायता देकर मानवता का परिचय दें।

पूर्व व्याख्याता
कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)
मो. 9414732090

बाल चिन्तन

नन्हे फूल

❒ मंजू मीणा

बच्चों को फूलों की संज्ञा दी गई है। क्योंकि फूलों की भाँति बच्चे भी बहुत सुन्दर तथा मन को आनन्द देने वाले होते हैं। जरूरी नहीं हैं कि बच्चे इंसानों के ही अच्छे लगें, बल्कि इस संसार में व्याप्त सभी जीव-जंतुओं के बच्चे सुन्दर और प्यारे होते हैं। अनायास ही बच्चों के प्रति दुलार उत्पन्न होता है। छोटे बच्चों की अठखेलियाँ सारी थकान दूर कर देती है। बच्चे कोरे कागज के समान हैं। उनमें छल-कपट, राग-द्वेष, अमीरी-गरीबी किसी भी प्रकार के दुर्भाव नहीं होते हैं। बच्चों के प्रति हमें सहृदय होना चाहिए।

बड़े ही सतकर्मों तथा पुण्य फलों की वजह से हमें यह इंसान का जन्म मिला हैं। यदि इंसान को बचपन से ही अच्छा वातावरण और अच्छे संस्कार दिए जाएँ तो इस दुनिया की कोई भी दीवार नहीं है जो उसे अच्छा और सच्चा इंसान बनने से रोक सके। ध्यान रहे कि घर का वातावरण सुखमय हो तथा सही मार्गदर्शक के रूप में अनुभवी शिक्षक का साथ हो। हमें बच्चों की भावनाओं को समझना चाहिए। बच्चों को प्यार की आवश्यकता होती है। इसलिए उन्हें प्रेमपूर्वक समझाना चाहिए। ज्यादा डाँटने तथा धमकाने से बच्चे जिद्दी हो जाते हैं, अतः बच्चों को अपनेपन का अहसास कराना चाहिए। प्रकृति से संबंधित जानकारी प्रदान करनी चाहिए ताकि बच्चे जीवन के इस अमूल्य उपहार के बारे में जान सकें। बच्चों को सदैव आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इनके साथ मैत्रीपूर्वक व्यवहार करना चाहिए ताकि ये अपनी उलझनों की चर्चा कर उनसे उबर सकें तथा अच्छे नागरिक बन सकें। बच्चे ही हमारे देश का भविष्य हैं तथा बच्चों से ही हमारा सम्पूर्ण जीवन माना जाता है। आँगन की शोभा भी बच्चों से ही बढ़ती हैं। बिना बच्चों के घर सूना-सूना लगता है।

बच्चों को जन्म देना तथा बड़ा करना ही हमारा कर्त्तव्य नहीं है बल्कि बच्चों को अच्छे संस्कार तथा अच्छी शिक्षा दिलवाना एवं एक योग्य इंसान बना कर अपने पांवों पर खड़ा करना भी हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए। बच्चों में शुरू से ही लक्ष्य प्राप्ति की ललक पैदा कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए तथा परेशानी आने पर उनका समाधान करना चाहिए। माता-पिता को लड़के तथा लड़की में कोई अन्तर नहीं समझना चाहिए। उनको अपनी रुचि के अनुसार क्षेत्र चुनने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। जब वे अपनी रुचि के अनुसार कार्य करेंगे तो ज्यादा से ज्यादा सफलता प्राप्त कर आगे बढ़ सकेंगे। बच्चों पर कभी भी दबाव नहीं डालना चाहिए। हमेशा अपने बच्चों को मितव्ययता का पाठ पढ़ाना चाहिए। ताकि वे अनावश्यक खर्च करने से बच सकें। बच्चों को समय की कद्र करना तथा सदुपयोग कर समय पर कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इनमें बचपन से ही अनुशासन तथा बड़ों का आदर करने की भावना विकसित करनी चाहिए। अनुशासन एक ऐसा गुण है जिसकी आवश्यकता हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ती है।

बच्चे हम सभी के लिए ईश्वर का अमूल्य उपहार हैं। वे किसी रूप-रंग, लिंग तथा धर्म के हों, हमें इन्हें प्रेम की दृष्टि से देखना चाहिए। बच्चों के प्रति तुलनात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए। बच्चों में भगवान निवास करते हैं। हमें उन्हें शारीरिक तथा मानसिक रूप से नहीं सताना चाहिए। बच्चे हमेशा फूलों की तरह महकें और सुन्दर लगें। हमें उनकी स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए तथा शरीर एवं उम्र के अनुसार आवश्यक पोषण पर ध्यान देना चाहिए। उचित परवरिश तथा अच्छे संस्कारों से ही हम अर्जुन, कर्ण, भीम तथा श्रवण कुमार जैसे वीरों को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

शर्त है कि इन सब बातों का पालन हो-

माता-पिता तथा अभिभावकों के लिए-

1. बाल विवाह पर रोक हो तथा कानूनन 18 व 21 वर्ष की उम्र का पालन हो।
2. माता-पिता दोनों स्वस्थ हो।
3. बच्चों की अच्छी परवरिश हो।
4. घर का वातावरण बच्चों के अनुसार हो।
5. बच्चों पर अनावश्यक दबाव न हो।
6. बच्चों में धार्मिक तथा व्यावहारिक गुणों का विकास करें।
7. बच्चों के शैक्षिक स्तर की जानकारी माता-पिता को होनी चाहिए।
8. अभिभावकों का बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार हो।
9. आपसी झगड़ों को बच्चों से दूर रखें।
10. नैतिक जीवन से संबंधित शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाएं।

शिक्षक/शिक्षिका के लिए-

1. विद्यालय में बच्चों को उपयुक्त वातावरण मिले।
2. पाठ्यपुस्तक के अलावा व्यवहारिक ज्ञान दिया जाए।
3. शैक्षणिक गतिविधियों को रोचक बना कर प्रस्तुत करें।
4. बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखें।
5. अच्छे कार्य के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें।
6. बच्चों के सामने गरिमामय ढंग से आदर्श प्रस्तुत करें ताकि बच्चे अनुकरण कर सकें।
7. बच्चों के अभिभावकों से मिले।
8. बच्चों के साथ भेदभाव न करें, गुणात्मक शिक्षा प्रदान करें।
9. बच्चों को अच्छी पुस्तकें पढ़ने तथा क्षेत्र विशेष की जानकारी प्रदान करें।
10. शिक्षक समर्पित होकर अपना कर्म करें।
11. बच्चों के साथ प्रेम तथा मित्रवत् व्यवहार करें।
12. गुरु-शिष्य मर्यादाओं में रहें।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर हम आगे आने वाले युग में अच्छे गुणों, अच्छी शिक्षा तथा अच्छे समाज को अंकुरित कर अच्छे पेड़-पौधे विकसित कर सकेंगे तथा अच्छा इंसान पा सकेंगे। छोटे बच्चों के लिए एक बालगीत है-

हम नन्हें-नन्हें हो चाहे, पर नहीं किसी से कम...2
आकाश तले जो फूल खिले, वो फूल बनेंगे हम।
बादल के घेरे में, कोहरे के अंधेरे में...2
भयभीत न होंगे हम, घनघोर अंधेरे में
हम दीपक भी, हम सूरज भी, तुम मत समझो शबनम
अब जान गया है, नील गगन दिन-रात बनेंगे हम
यह जात-पात क्या हैं? यह भेदभाव क्या है?
दीवार हटाने से तो साथ छूटता है।
आँधी में भी उड़ता रहता इंसान बना है पवन,
इंकार करे संसार मगर इंसान बनेंगे हम।।

रा.आ.उ.मा.विद्यालय
आभावास (सीकर)

शोध आलेख

उच्च माध्यमिक स्तर पर

आपदा प्रबंधन के प्रति शिक्षकों की जागरूकता

❒ डॉ. फरज़ाना इरफ़ान

मानव एवं प्रकृति का सम्बन्ध अनादिकाल से अनवरत चला आ रहा है अर्थात् प्रकृति से मानव को पृथक नहीं किया जा सकता। प्रकृति मनुष्य की माँ के समान है। वह मानव को अपने पुत्रवत् रखती चली आ रही है। किन्तु जब से मनुष्य ने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करना प्रारंभ कर दिया, प्रकृति भी अपना विकराल रूप दिखाने में पीछे नहीं हटी। प्रकृति का यह रूप हमें अनेक दृश्यों के रूप में देखने को मिलता है।

प्राचीनकाल में मनुष्य प्रकृति के सान्निध्य में रहकर उसको किसी भी प्रकार का नुकसान न पहुँचाये अपना जीवनयापन करता था। धीरे-धीरे मनुष्य की इच्छाएँ बलवती होने लगी। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रकृति से छेड़छाड़ करने लगा। किन्तु प्रकृति अपने साथ हुए इस क्रूरतापूर्ण व्यवहार को बर्दाशत कर आधिपत्य जमाने नहीं देती।

(अ) आपदा के प्रकार–

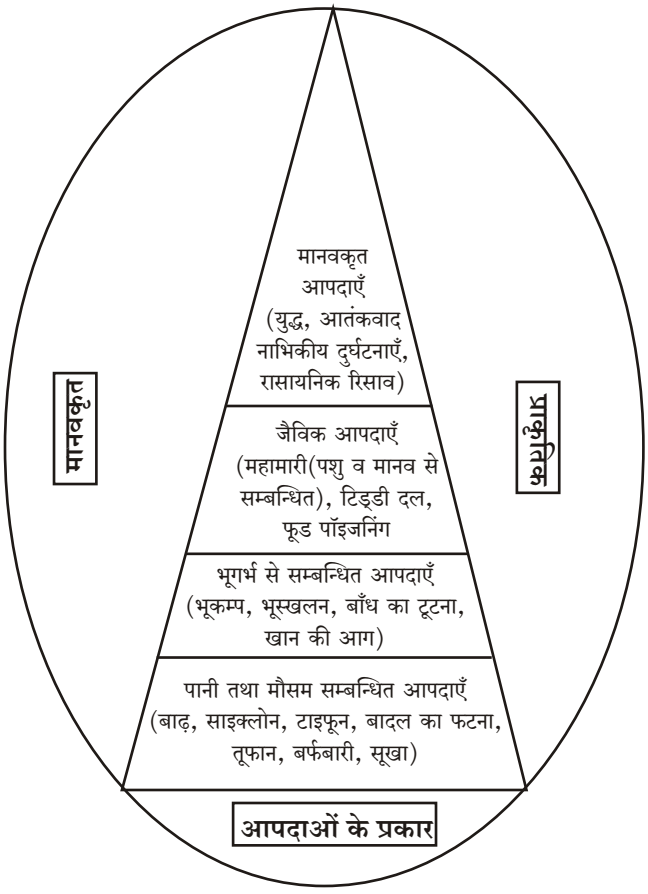

देश में कभी भूकम्प के रूप में, बाढ़ के रूप में, भूस्खलन के रूप में, चक्रवाती तूफान के रूप में, आग, ओलावृष्टि, टिड्डी दल, अतिवृष्टि, सुनामी लहरें, महामारी, चिकनगुनिया, स्वाइ फ्लू जैसी भयंकर बीमारी के रूप में अपना विकराल रूप दिखाती है। जिससे जन सामान्य को भारी क्षति उठानी पड़ती है।

प्रकृति के साथ मानव का अनुकूल एवं प्रतिकूल व्यवहार निरन्तर चलता आया है। मानव का प्रकृति के साथ अनुकूल व्यवहार विकास एवं समृद्धि की ओर ले जाता है और प्रतिकूल व्यवहार उसे अवनति के मार्ग की ओर धकेलता है।

(ब) आपदा के कारण–

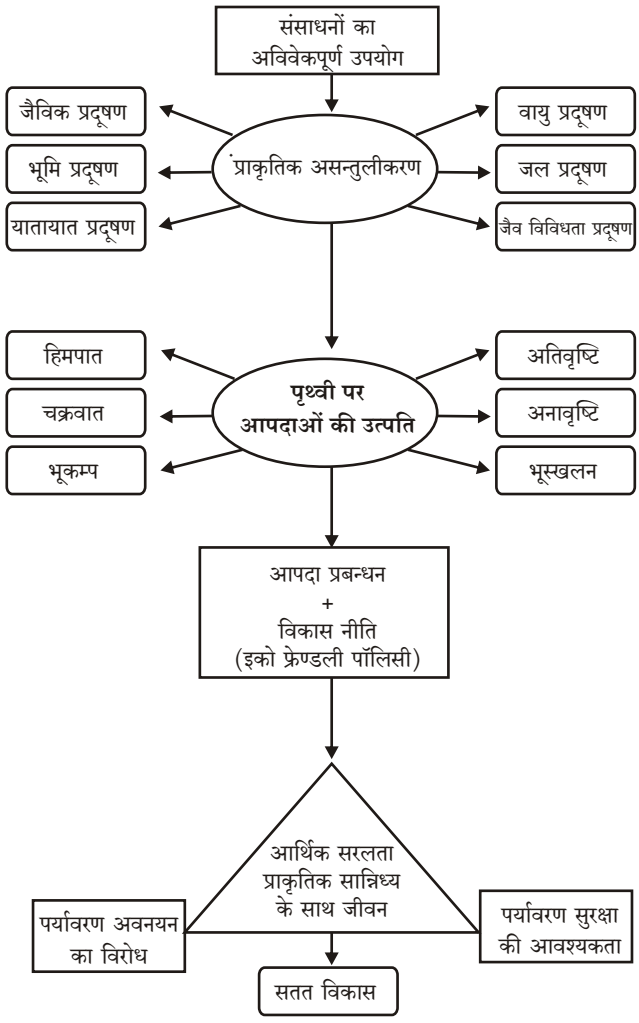

(ब) आपदा के प्रभाव–

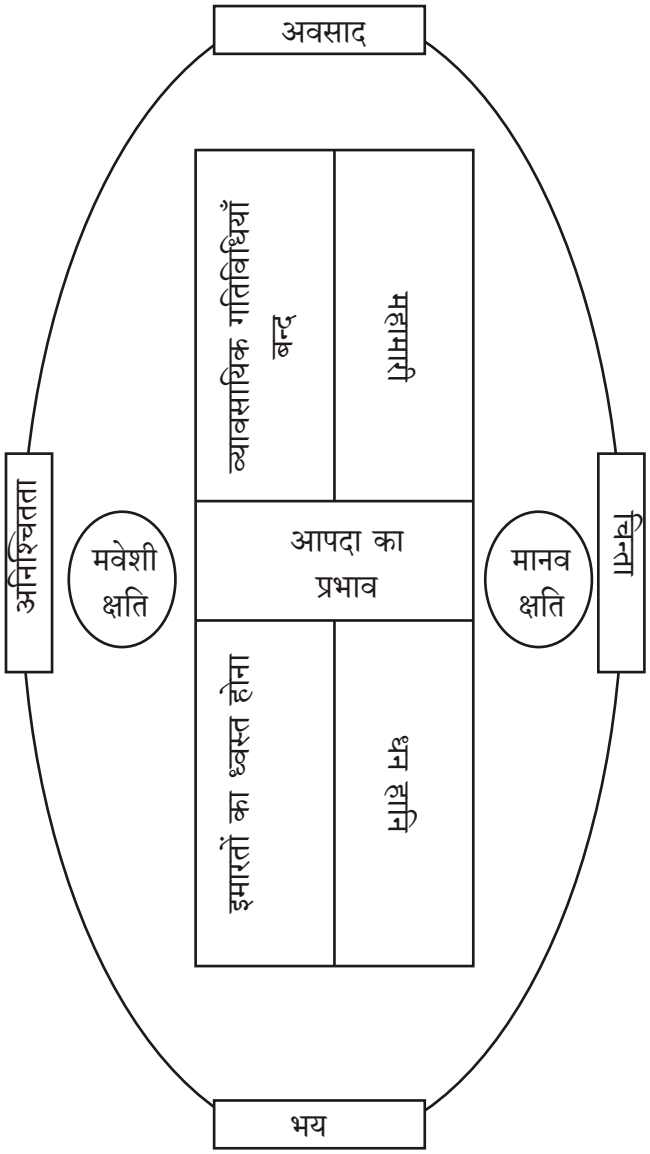

हम यदि दृष्टिपात करें तो प्राकृतिक आपदाओं के बड़े ही भयंकर रूप देखने को मिलते हैं जिसने एक बार यह दृश्य देख लिया या उसके साथ जो भी घटित हुआ उसको मन उस दृश्य को कभी भूल नहीं पाता है गुजरात का भूकम्प हो या उड़ीसा का तूफान, बिहार की बाढ़ हो या राजस्थान में अतिवृष्टि, सुनामी लहरें हो या चिकनगुनिया जैसी भयंकर बीमारी, संसद में आतंकवादी हमले हो या विमान का अपहरण ऐसे अनेक उदाहरण है। इन सभी विकट परिस्थितियों में दिल दहलाने वाले दृश्य आँखों के सामने आते हैं, तो पैरों तले धरती खिसक जाती है। तूफान हो या भूकम्प हो या फिर बादल का फटना हो सब कुछ तहस–नहस हो जाता है। कई लाशें मलबे के नीचे दब जाती हैं, कई परिवार उजड़ जाते हैं, कई बच्चे अपनी माँ, परिवार से बिछुड़ जाते हैं। खाने–पीने की सामग्री भी उन तक समय पर नहीं पहुँच पाती। आवागमन एवं संचार साधनों का भी अभाव हो जाता है।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को आपदाओं से बचने/बचाने के लिए सफल तरीकों से वाकिफ होना ही काफी नहीं हैं बल्कि अपने कर्तव्य व अधिकारों के प्रति जागरूक होना नितान्त आवश्यक है। आपदा प्रबंधन भविष्य की चुनौतियों के विरुद्ध सक्षमता विकसित करने का एक प्रयास है।

आपदा प्रबंधन के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता लाई जाए जिससे जन–धन की हानि एवं बचाव कर सहयोग की क्षमता विकसित की जा सके। इसी बात को ध्यान में रखकर यह शोध अध्ययन करने का निश्चय किया है।

2. अनुसंधान के उद्देश्य–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों व अध्यापिकाओं की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।
4. सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
5. निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
6. सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष व महिला शिक्षकों की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

3. प्राकल्पनाएँ–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों में आपदा–प्रबंधन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

4. शोध अध्ययन का परिसीमन–

1. क्षेत्र की दृष्टि से– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उदयपुर जिले के उच्च माध्यमिक सरकारी एवं निजी विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
2. न्यादर्श की दृष्टि से– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उदयपुर जिले (माध्यमिक प्रथम एवं माध्यमिक द्वितीय) सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों, अध्यापिकाओं एवं अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

5. न्यादर्श चयन–

प्रस्तुत शोध कार्य में कुल विद्यालय न्यादर्श 100 (सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय 50 एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय 50) है जिसका वर्गीकरण निम्नानुसार है।

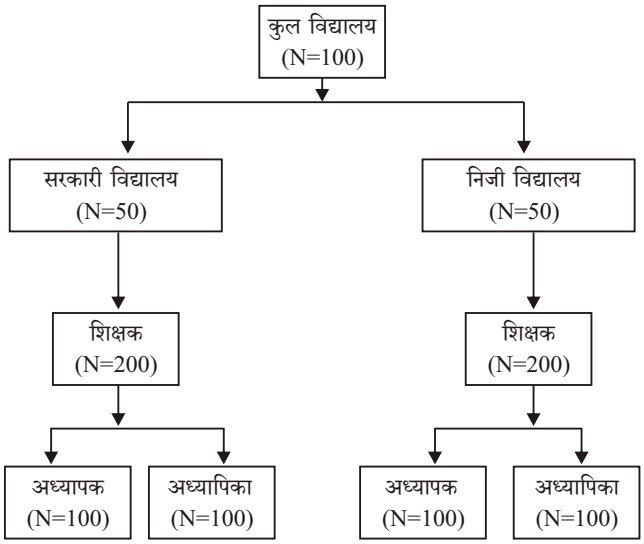

1. विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया।
2. शिक्षकों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि से (जो दत्त संकलन के समय उपस्थित होंगे) किया गया।

6. शोध विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि को उपयोग में लाया गया।

7. उपकरण–

1. आपदा प्रबंधन जागरूकता प्रमापनी (अध्यापकों के लिए)

8. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी–

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया। 1. मध्यमान 2. मानक विचलन, 3. 'टी' मूल्य

शोध निष्कर्ष– आपदा प्रबंधन के प्रति उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं (N=400) की जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण

सारणी

क्र. सं.	क्षेत्र	उ.मावि. के शिक्षक (N=400)				'टी' मूल्य	.05 व .01 स्तर पर सार्थकता (निष्कर्ष)
		समग्र अध्यापक (N=200)		समग्र अध्यापिकाएँ (N=200)			
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	आपदा एवं आपदा प्रबंधन का अर्थ	30.7	2.88	31.6	2.19	3.517	अन्तर सार्थक है
2.	आपदा के प्रकार एवं कारण	30.5	2.57	29.7	2.33	3.261	अन्तर सार्थक है
3.	आपदा का प्रभाव	28.3	2.61	28.6	2.17	1.249	अन्तर सार्थक नहीं है
4.	आपदा प्रबंधन की अवस्थाएं	28.8	2.85	28.5	2.14	1.190	अन्तर सार्थक नहीं है
5.	आपदा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी	28.8	2.90	29.6	2.57	2.919	अन्तर सार्थक है
6.	आपदा न्यूनीकरण के प्रयास	24.2	3.10	25.2	2.88	3.342	अन्तर सार्थक है
7.	योग	171.3	12.86	173.2	8.23	1.759	अन्तर सार्थक नहीं है।

स्वतंत्रता के अंश (df=398) पर 0.05 स्तर का सारणी मान =1.97
0.01 स्तर का सारणीमान = 2.59

व्याख्या– आपदा प्रबंध के प्रति जागरूकता का विश्लेषण कर प्राप्त दत्तों का मध्यमान, मानक विचलन व 'टी मूल्य' ज्ञात किया गया। उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का मध्यमान क्रमशः 171.3 व 173.2 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.86 व 8.23 प्राप्त हुआ। उपरोक्त मानों के आधार पर 'टी' का मान 1.759 प्राप्त हुआ जो कि तालिका में 398^0 डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से कम है अर्थात सार्थक अन्तर नहीं कहा जा सकता है। अतः परिकल्पना संख्या 1 को स्वीकृत किया जाता है।

क्षेत्रवार तुलनात्मक विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र प्रथम 'आपदा एवं आपदा प्रबंधन का अर्थ' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 30.7 व 31.6 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.88 व 2.19 प्राप्त हुआ, उपरोक्त मानों के आधार पर 'टी' का मान 3.517 प्राप्त हुआ जो कि 'टी' तालिका में 398^0 डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है। अर्थात अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।
2. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र द्वितीय ''आपदा के प्रकार एवं कारण' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 30.5 व 29.7 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.57 व 2.33 प्राप्त हुआ। उपरोक्त मानों के आधार पर 'टी' का मान 3.261 आया। जो कि 'टी' तालिका में 398^0 डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है। अर्थात अंतर सार्थक कहा जा सकता है।
3. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र तृतीय 'आपदा का प्रभाव' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 28.3 व 28.6 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.61 व 2.17 प्राप्त हुआ। उपरोक्त मानों के आधार पर 'टी' का मान 1.249 आया। जो कि 'टी' तालिका में 398^0 डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से कम है। अर्थात अंतर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।
4. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र चतुर्थ 'आपदा प्रबंधन की अवस्थाएं' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 28.8 व 28.5 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.85 व 2.14 प्राप्त हुआ। उपरोक्त मानों के आधार पर 'टी' का मान 1.190 आया। जो कि

'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से कम है। अर्थात अंतर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।

5. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र पंचम 'आपदा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 28.8 व 29.6 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.90 व 2.57 प्राप्त हुआ। उपरोक्त मानों के आधार पर 'टी' का मान 2.919 आया। जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है। अर्थात अंतर सार्थक कहा जा सकता है।
6. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र अंतिम 'आपदा न्यूनीकरण के प्रयास' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 24.2 व 25.2 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.10 व 2.88 प्राप्त हुआ। उपरोक्त मानों के आधार 'टी' का मान 3.342 आया। जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है। अर्थात अंतर का सार्थक कहा जा सकता है।

आपदा प्रबंधन के प्रति सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों (N=400) की जागरूकता का तुलनात्मक विश्लेषण

सारणी

सरकारी एवं निजी उ.मा.वि. में कार्यरत शिक्षकों की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता की तुलनात्मक सारणी

क्र. सं.	क्षेत्र	न्यादर्श शिक्षक (N=400)				'टी' मूल्य	.05व .01 स्तर पर सार्थकता (निष्कर्ष)
		राज.उ.मा.वि. (N=200)		निजी उ.मा.वि. (N=200)			
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	आपदा एवं आपदा प्रबंधन का अर्थ	31.3	1.78	30.3	3.57	3.545	अन्तर सार्थक है
2.	आपदा के प्रकार एवं कारण	28.8	1.95	28.5	3.10	1.158	अन्तर सार्थक नहीं है
3.	आपदा का प्रभाव	28.1	2.30	29.0	2.90	3.438	अन्तर सार्थक है
4.	आपदा प्रबंधन की अवस्थाएँ	27.7	1.87	28.6	3.14	3.482	अन्तर सार्थक है
5.	आपदा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी	27.6	2.01	28.4	2.88	3.221	अन्तर सार्थक है
6.	आपदा न्यूनीकरण के प्रयास	27.5	2.21	28.4	2.87	3.204	अन्तर सार्थक है
7.	योग	171.0	6.85	173.2	15.10	1.876	अन्तर सार्थक नहीं है।

स्वतंत्रता के अंश (df=398) पर 0.05 स्तर का सारणी मान =1.97
0.01 स्तर का सारणीमान = 2.59

व्याख्या– आपदा प्रबंध के प्रति जागरूकता का विश्लेषण कर प्राप्त दत्तों का मध्यमान, मानक विचलन व 'टी' मूल्य ज्ञात किया गया। सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक के दत्तों का मध्यमान क्रमशः 171.0 व 173.2 मानक विचलन क्रमशः 6.85 15.10 तथा 'टी' का मान 1.876 प्राप्त हुआ जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से कम है अर्थात अन्तर को सार्थक नहीं कहा जा सकता है। अतः परिकल्पना संख्या 2 को स्वीकृत किया जाता है।

क्षेत्रवार तुलनात्मक विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र प्रथम 'आपदा एवं आपदा प्रबंधन का अर्थ' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 31.3 व 30.3, मानक विचलन क्रमशः 1.78 व 3.57 तथा 'टी' का मान 3.545 प्राप्त हुआ। जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है अर्थात अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।
2. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र द्वितीय 'आपदा के प्रकार एवं कारण' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 28.8 व 28.5, मानक विचलन क्रमशः 1.95 व 3.10 तथा 'टी' का मान 1.58 प्राप्त हुआ, जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से कम है। अर्थात अंतर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।
3. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र तृतीय 'आपदा का प्रभाव' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 28.1 व 29.0, मानक विचलन क्रमशः 2.30 व 2.90 तथा 'टी' का मान 3.438 आया। जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है। अर्थात अंतर सार्थक कहा जाता है।
4. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र चतुर्थ 'आपदा प्रबंधन की अवस्थाएँ' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 27.7 व 28.6, मानक विचलन क्रमशः 1.87 व 3.14 तथा 'टी' का मान 3.482 प्राप्त हुआ। जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है। अर्थात अंतर सार्थक कहा जा सकता है।
5. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र पंचम 'आपदा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 27.6 व 28.4, मानक विचलन क्रमशः 2.01 व 2.88 तथा 'टी' का मान 3.221 आया। जो कि 'टी' तालिका में 398° डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व 0.01 सार्थकता स्तर 'टी' के सारणीयन मूल्य से अधिक है। अर्थात अंतर सार्थक कहा जा सकता

(शेष पृष्ठ 46 पर)

पुस्तक समीक्षा

भारत में सुकरात

(पुस्तक व व्यक्ति केन्द्रित शैक्षिक निबन्ध)

लेखक : शिवरतन थानवी **प्रकाशक** : वाग्देवी प्रकाशन, विनायक शिखर, पॉलिटेक्निक कॉलेज के पास, बीकानेर **संस्करण** : प्रथम, 2016 **पृष्ठ संख्या** : 168 **मूल्य** : ₹ 240

राजस्थान के शिक्षा विभाग को दो नवाचारी पत्रिकाओं **शिविरा पत्रिका** और **नया शिक्षक/टीचर टुडे** के माध्यम से पूरे देश के शैक्षिक मानचित्र पर स्थाई कर देने वाले विकट विद्यानुरागी शिवरतन थानवी के नाम और काम से शैक्षिक और अकादमिक जगत में शायद ही कोई अपरिचित हो। पिछले वर्ष प्रकाशित और बहुचर्चित कृति **सामाजिक विवेक की शिक्षा** के बाद हाल ही में उनकी किताब **भारत में सुकरात** शीर्षक से आई है। इस किताब की सामग्री मुख्यत: दो खण्डों में विभक्त है। पहला खण्ड व्यक्ति केन्द्रित निबन्धों का है जिसमें चार निबन्ध हैं और दूसरा खण्ड पुस्तकों और पत्रिकाओं पर केन्द्रित है जिसमें उन्नीस निबन्ध हैं। इनके अतिरिक्त परिशिष्ट के रूप में लेखक की पूर्व प्रकाशित कृति 'आज की शिक्षा कल के सवाल' पर रामेश्वर 'पंकज' और बनवारी की समीक्षाएं हैं। पुस्तक में व्यक्ति केन्द्रित चार निबन्ध हैं जो प्रो. वी. वी. जॉन, अनिल बोर्दिया, मास्टर मोतीलाल और पंडित शिवबालकराम जी पर केन्द्रित हैं। प्रो. वी. वी. जॉन की ही एक चर्चित और प्रशंसित कृति की चर्चा दूसरे खण्ड में है और केवल चर्चा ही नहीं, उसी कृति प्लेटो'ज इण्डियन रिपब्लिक के शीर्षक के हिन्दी अनुवाद को ही इस पुस्तक का शीर्षक बनने का मान भी दिया गया है। केरल के कोट्टायम ज़िले के एक छोटे-से गाँव में जन्मे नाटे कद के प्रो. जॉन शैक्षिक जगत के उन कद्दावर व्यक्तित्वों में से एक हैं जो अपने जीवनकाल में ही लीजेंड बन गए थे। वे जितने मेधावी शिक्षक थे उतने ही कुशल और प्रखर प्रशासक भी थे। गवर्नमेण्ट कॉलेज अजमेर को उन्होंने शिखर तक पहुँचाया तो जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में ऐसा और इतना कुछ कर डाला कि थानवी जी के शब्दों में कहूँ तो 'देश में एक नालंदा पैदा हो गया, बौद्धिक संस्कृति का केन्द्र बन गया जोधपुर।' थानवी जी प्रो. जॉन की खूब लेकिन उचित प्रशंसा के बाद एक मार्के की बात और कहते हैं: फिर भी उन्हें हम महाबली नहीं कहेंगे क्योंकि ऐसा कहना उनकी शान के खिलाफ़ होगा। अहंकार उनमें लेशमात्र नहीं था। वे जो करते थे शिक्षकों और शिक्षार्थियों के हित में करते थे। अंगद का पाँव था तो सच्ची शिक्षा की अच्छी स्थापना के लिए था। वे कठिनाइयों का मुक़ाबला कठोरता से करते थे किंतु विनम्रता को क्षण भर भी अपने स्वभाव से जुदा नहीं होने देते थे। उनकी विनम्रता लुंज-पुंज और पिलपिली नहीं थी, यह एक निष्ठावान सच्चे मज़बूत शिक्षक की सच्ची विनम्रता थी जो हृदय में रखी जाती थी, बाहर प्रदर्शन के लिए नहीं। (पृ.12) प्रो. वी. वी. जॉन की विस्तृत चर्चा इस किताब के एक अन्य लेख 'पोथी का सुख' में भी है जहाँ हम उनके गहन पुस्तकानुराग से परिचित होते हैं। दरअसल थानवी जी उन्हीं लोगों को ज़्यादा पसन्द कर पाते हैं जिनका पुस्तकों से गहरा लगाव हो। इस खण्ड के मास्टर मोतीलाल जी तो इस मामले में और भी अधिक अनूठे हैं। वे स्कूली अध्यापक थे और उन्होंने अपने दम पर एक पुस्तकालय की स्थापना की तथा लोगों में पुस्तक प्रेम का प्रसार किया। अपने जीवन काल में उन्होंने तीस हज़ार पुस्तकें एकत्रित कर ली थीं। अब जयपुर में उनकी स्मृति में एक बड़ा पुस्तकालय संचालित होता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अनिल बोर्दिया का नाम तो राजस्थान और देश के अनेक शैक्षिक नवाचारों, जिनमें लोक जुम्बिश और संधान प्रमुख हैं, की वजह से सुपरिचित ही है लेकिन थानवी जी उनके साथ अपने वैयक्तिक अनुभवों की चर्चा करते हुए एक भिन्न बोर्दिया जी से भी हमें परिचित कराते हैं। शिक्षा को लेकर उनका सोच मौलिक था। वे मानते थे कि **शिक्षा केवल सूचना देने वाली न होकर शिक्षार्थी की समझ में वृद्धि करने वाली भी होनी चाहिए।** इस खण्ड का चौथा लेख अपेक्षाकृत अनजाने शिक्षक पंडित शिवबालकराम जी पर है जिन्होंने शिवरतन जी को चार बरस पढ़ाया था। सातवीं कक्षा तक जिन्होंने पढ़ाया उन शिक्षक को कोई अपने जीवन की सन्ध्या बेला में याद करे, यह बात अचरज पैदा करती है। लेकिन जब हम यह पढ़ते हैं कि 'मुझमें जो साहित्य-प्रेम व भाषा प्रेम जागा वह सब मैं उनकी ही देन मानता हूँ' तो यह बात भी समझ में आ जाती है कि क्यों थानवी जी उन्हें भुला नहीं पाए हैं। इस लेख को पढ़ते हुए यह विचार बार-बार सताता है कि आखिर क्या वजह है कि आज शिवबालकराम जी जैसे शिक्षक हमें नहीं मिलते हैं! ये चारों ही लेख चार भिन्न-भिन्न संरचनाओं वाले व्यक्तित्वों के ऐसे गुणों से हमारा साक्षात्कार कराते हैं जिनका आज हम सामान्यत: अभाव पाते हैं।

किताब का दूसरा खण्ड कुछ बेहद ज़रूरी और महत्त्वपूर्ण किताबों तथा पुस्तकानुराग के अनुभवों पर केन्द्रित है। खण्ड के पहले ही लेख 'पोथी का सुख' में थानवी जी पुस्तक प्रेम के सन्दर्भ में नियमों को शिथिल करने की बात करते हैं। एक समय था जब एक लोकप्रिय पत्रिका एक अभियान चलाती थी कि जब आप मांग कर खाते नहीं तो मांग कर क्यों पढ़ते हैं। ज़ाहिर है कि इस अभियान का मकसद लोगों में खरीद कर किताब पढ़ने की आदत के विकास से था। थानवी जी बहुत दिलचस्प अन्दाज़ में इस अभियान से अपनी असहमति व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं कि जितना मैं मित्रों से चाय पीने-पिलाने का मिठाई खाने-खिलाने का हक़ रखता हूँ उतना ही हक़ पुस्तक-पत्रिका मांग कर पढ़ने का भी रखता हूँ। अपनी इस बात को और खोलते हुए वे कहते हैं कि मैं मित्रों व पुस्तकालयों से पुस्तकें-पत्रिकाएँ मांग कर लाता-लौटाता हूँ और खरीदता भी हूँ। पुस्तक संस्कृति का विकास तभी होता है जब हम यों पुस्तकों से गहरा प्रेम रखें। इस खण्ड के अनेक लेखों में थानवी जी बार-बार ऐसी लीक से हटकर बातें करते हैं और हमें सोचने को मज़बूर करते हैं। वे इस बात की खुली वकालत करते हैं कि बच्चों को (और बड़ों को भी!) सब कुछ पढ़ने की छूट होनी चाहिए। इस सब कुछ में वह भी शामिल है जिसे सामान्यत: हम वर्जनीय मानते हैं। थानवी जी के अपने तर्क हैं, और अगर

आप खुले मन से सोचें तो उनसे असहमत भी नहीं हो सकते। असल में यही उनके विचारक की सबसे बड़ी ताकत है कि वे आपको लीक से हटकर सोचने को प्रेरित करते हैं। जब वे कहते हैं कि अंग्रेज़ों ने प्रतिबंध लगाया पं. सुन्दरलाल की किताब पर और हम प्रतिबंध लगाते हैं यौन क्रियाओं के दर्शन-दिग्दर्शन शास्त्र पर। क्यों भला? यह नहीं देखते कि रणकपुर के जैन मन्दिर पर, खजुराहो के शिव मन्दिर पर और कोणार्क के सूर्य मन्दिर पर क्या उत्कीर्ण है? यौन जीवन अध्यात्म का अभिन्न अंग है, अलग नहीं है। छद्म रहेगा तो विकृत होगा। (पृ. 144) तो मुझे लगता है जैसे वे मेरे ही मन की बात कह रहे हैं। उनका दो टूक विचार है: बच्चों को उनका श्रेय दो, प्रेय दो। जो श्रेष्ठ है वह भी और जो उन्हें प्रिय है वह भी दो। बच्चे खूब पढ़ें यह बात वे बार-बार कहते हैं। बच्चे ही नहीं, बड़े भी खूब पढ़ें। और खास तौर पर शिक्षक तो पढ़ें ही। एक तरह से तो यह किताब शिक्षक और अभिभावक के ही लिए है और इसलिए इसके इस खण्ड में बहुत सारी बेहद ज़रूरी किताबों और कुछ पत्रिकाओं के विशेष अंकों की समीक्षाएं हैं। जहाँ 'किताब कैमरा है कि आँख' में लेखक अपनी पठन यात्रा और पसन्दीदा किताबों की रोचक चर्चा कर हमें ज़रूरी किताबों की तरफ उन्मुख करता है वहीं इस खण्ड के कुछ अन्य लेखों के माध्यम से दिवास्प्वप्न (गिजु भाई), तोत्तोचान (तेत्सुको कुरोयोनागी) शिक्षक के अनुभव (हरिनंदन मिश्र), मित्थल मौसी का परिवार-पुराण (मिथिलेशकुमारी मुखर्जी), रामलाल की व्यथा-कथा (अरुण ओझा), वामा शिक्षक (मुंशी ईश्वरीप्रसाद मुदर्रिस रियाज़ी और मुंशी कल्याणराय मुदर्रिस अव्वल), मोंतेस्सोरी साहित्य, नेपथ्य के दावेदार (डॉ. श्रीगोपाल काबरा), मेरी ग्रामीण शाला की डायरी (जूलिया वेबर गार्डन), डेविड ऑसबर्न और नीलबाग़ स्कूल (सं. राजाराम भादू), मेरा मुझ में कुछ नहीं (रमेश उपाध्याय), मंज़िल अब भी दूर (गंगाधर चिटणीस), शिक्षण की वैज्ञानिकता (रामनरेश सोनी) की ऐसी समीक्षाएं प्रस्तुत की गई हैं जो हमें इन किताबों को पढ़ने के लिए व्याकुल कर देती हैं।

मुझे इस किताब की सबसे बड़ी विशेषता यह लगी कि यह हमें पढ़ने के आनंद से नए सिरे से परिचित कराती है और यह काम करते हुए बहुत आहिस्ता से यह भी बताती चलती है कि क्यों शिक्षक के लिए पढ़ना और पढ़ते रहना बहुत ज़रूरी है। अगर शिक्षक पढ़ेगा तो वह अपने विद्यार्थी को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।

लेखक किसी खास किस्म की किताबों की वकालत नहीं करता है। वह तो यह चाहता है कि पाठक सब कुछ पढ़े। यहाँ तक कि जिसे सामान्यत: साहित्य की परिधि से बाहर रखा जाता है उसे भी पढ़ने से वह नहीं रोकता है। उसका स्पष्ट मत है कि जो आज उस तरह का लेखन पढ़ रहा है कल वह बेहतर भी ज़रूर पढ़ेगा। आज जब हम शिक्षा से जुड़े लोग इस बात पर अफसोस ज़ाहिर करते हैं कि लोगों में पढ़ने की आदत घटती जा रही है, शिवरतन थानवी जी की यह किताब और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि जो भी इस किताब को पढ़ लेगा वह और काफी कुछ पढ़ने को प्रेरित होगा। मेरे विचार से यह किताब हर विद्यालय में पहुँचाई जानी चाहिए और हमारे शिक्षक साथियों को आग्रहपूर्वक इसे पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इस किताब के लिए आदरणीय थानवी जी को बहुत बहुत बधाई, और बधाई वाग्देवी प्रकाशन को भी जिन्होंने इसे इतने सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित किया है।

-समीक्षक : **डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल**
ई-2/211, चित्रकूट, जयपुर-302021
मो. 9829532504

आज का सच

लेखक : एन.सी. आसेरी **प्रकाशक** : गोपेश्वर बस्ती, गंगाशहर, बीकानेर **संस्करण** : प्रथम, जून 2008 **पृष्ठ संख्या** : 80 **मूल्य** : ₹ 50

'सच बोलना चाहिए' ऐसा कहते सभी हैं, मगर कितने ऐसे लोग हैं जो सच बोल पाते हैं? कबीर जैसे महान कवि यह स्वीकार करते हैं कि 'साँच कहूँ तो मारन धावे झूठे जग पतियाना।' सच ही है इस संसार में जिसने भी सच कहने की हिम्मत की, उन्हें या तो कष्ट उठाने पड़े या मृत्यु का वरण करना पड़ा। ये भी सच है कि ऐसे ही सच बोलने वाले मृत्युपरान्त संसार द्वारा पूजनीय बने हैं।

'आज का सच' के कवि एन.सी. आसेरी ऐसे ही सच के प्रखर वक्ता हैं। यह उनका पहला काव्य संग्रह है। कवि ने इसमें आज के सत्य को पूरी सच्चाई के साथ प्रकट किया है। हो सकता है कि कुछ लोग उनसे सहमत न हों किन्तु सत्य को स्वीकारने की, जो हिम्मत इन्होंने दिखाई है, वह कम ही लोगों में होती है। हालांकि कवि कर्म स्वयं को सत्य में रखे बिना संभव नहीं है फिर भी कितने ऐसे हैं जो कबीर की तरह स्वीकार कर सकते हैं कि-

'बुरा जो देखन मैं चला।
बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना,
मुझसा बुरा न कोय।'

मगर कवि आसेरी ने आज की सभी अच्छाइयों व बुराइयों पर पैनी दृष्टि डाली व युग से साक्षात्कार करवाया है। एक कहावत है 'जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।' कवि पर-पीड़ा में पैठकर, उसे भोगता है। जिस कवि में पर-पीड़ा बोध जितना गहरा होता है युग के सत्य का वह उतना ही साधक होता है।

कवि एन.सी. आसेरी की इस रचना में 'आज का सच' पूरी तरह प्रकट हुआ है। आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, कुत्सित राजनीति, महँगाई, स्वार्थपरता, हिंसा का तांडव, अकाल एवं वज्जनित निराशा, पत्नी के कारण बदलते माता-पुत्र के रिश्ते, नशाखोरी, अर्थ के पीछे भागते मनुष्य की मरती मानवीयता, गरीबी, कुटीर उद्योगों की समाप्ति, वृद्धजनों के प्रति तिरस्कार की भावना, सास-बहू की खींचतान और बिखरते घर, धार्मिक कट्टरता, कन्या भ्रूण हत्या, जन आंदोलनों के दौरान हिंसा, तोड़-फोड़, इन सभी ने कवि के हृदय को आंदोलित किया है। कवि 'जल संरक्षण' को वक्त की आवश्यकता मानता है। जैसे-

'नित्य सवेरे ब्रज बालाएं,
यमुना जल में नहाती थी
प्रक्षालन करती अपने अंगो का
जल मैला कर जाती थी
केशव ने सबके वस्त्र छिपाकर,

जल के महत्व का ज्ञान दिया
और
'जल अमृत जल जीवन है,
प्रकृति का प्रसाद प्रबल यह
जल है तो जग जीवन है,
जल अमृत जल जीवन है।'

आजादी के समय परिश्रम पर बल दिया गया। नेहरु जी का नारा 'आराम हराम है' खूब प्रसिद्ध हुआ। किन्तु आज श्रम के प्रति उदासीनता का भाव दिखलाई पड़ रहा है। कवि परिश्रम का महत्व बतलाते हुए लिखते हैं–

पुरुषार्थ करने वाला ही,
जीवन में सब कुछ पाता है।
उदासीन जो रहता श्रम से,
भाग्य लक्ष्मी नहीं पाता है।

परिश्रमी कृषक का गुणगान किया है–

'कृषक तन मन से समृद्ध है,
सेवा भाव में जग प्रसिद्ध है
तुच्छ स्वार्थ से परे जो जीता,
लेता नहीं है पर कुछ देता।।'

कवि देश की दुर्दशा देख व्यथित है। देश को आज सुशासन की आवश्यकता है–

'आज संकट की वेला में,
शासन नहीं सुशासन चाहिए
आज देश की माँग यही,
नेता नहीं सृजेता चाहिए''

राजनीति में शुचिता, निर्मलता व धर्मनीति को स्वीकार करें ऐसी कवि की इच्छा है–

'राजनीति हो स्वच्छ निर्मला,
जिसमें न आए कभी विकार
सत्य कर्म पर चले सभी जन,
धर्म नीति को करे स्वीकार'

महँगाई ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है। परन्तु मजदूर की पत्नी ज्यादा प्रभावित होती है। 'महँगाई तूने रुलाया इतना, कैसे जीवन निर्वाह करुँगी।'

अन्न धन, तेल मिर्च मसालें,
लगने लगे हैं माणक–मोती
क्रय करना दुश्वार हो रहा,
उबल पड़ती हूँ जागते सोती'
तू महँगाई नारी संज्ञा,
नारी की क्यों बात न समझी'

आज देश में हर कहीं नफरत, धार्मिक कट्टरता व हिंसा का वातावरण है कवि लिखते हैं–

'हाड़–माँस चाम एक सा,
एक सा है सबका रक्त
कट्टरपन का पहन के चोला,
हो रहे हैं विभक्त
दिल टूटता कट्टरता के कारण
और बढ़ता क्लेश
इसकी अतिशयता के कारण
बँट जाते है देश।'

जातीय आन्दोलनों ने देश और कवि को हिला दिया है

'सत्याग्रह बेमानी हो रहे
आन्दोलन हिंसाकारी
न्याय नीति पंगु सी लागे,
अपराधों की भरमारी'

देश के साथ–साथ प्रत्येक घर भी सास–बहू की नासमझी व खींचतान के कारण टूट रहे हैं

'हर घर में हर युग में देखा,
सास बहू का चले पुराण
इक दूजे की होती विलोमज,
कैसे पावे गृहस्थी त्राण'

इनमें प्रेम भाव आवश्यक है–

'इन दोनों में सद्भाव हो तो,
सुखी रहता है घर बार
धन धान्य की वृद्धि होती,
लक्ष्मी आती है अपार'

पढ़ी–लिखी बहू समझदारी नहीं दिखाती तो व्यथित हो कवि लिखते हैं–

अनपढ़ तो है बहू–रानी घर की,
पढ़ी–लिखी महारानी
शिक्षा का अर्थ न समझी,
बात–बात पर करती मन मानी'

और भी बहुत कुछ कवि ने इस संग्रह में समेटा है। 'आज का सत्य' है ये। 80 पृष्ठ की ये पुस्तक निश्चित तौर पर संग्रहणीय है। वर्तनीगत कुछ त्रुटियां अवश्य हैं किन्तु भावाभिव्यक्ति में कहीं आड़े नहीं आती। समग्रतः कवि का पहला काव्य संग्रह 'आज के समाज का सच है।

–समीक्षक : **दुलीचंद स्वामी**
प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. दुलचासर
मो. 9214525086

दोहों में दुर्गादास

लेखक : मोहन लाल गहलोत **प्रकाशक** : पाली देवी (गहलोत प्रकाशन) गाँधीपुरा, बालोतरा **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 64 **मूल्य** : ₹ 155

समीक्ष्य कृति 'दोहों में दुर्गादास' मोहनलाल गहलोत द्वारा लिखित 'अट्ठारह' दोहों का संकलन है जिसमें प्रत्येक दोहे में वीरवर दुर्गादास के विराट व्यक्तित्व व कृतित्व को रेखांकित करने का सफल प्रयास किया गया है। वीर दुर्गादास मरुधरा के वीर सपूत, युद्धवीर व स्वामिभक्ति के अद्वितीय उदाहरण हैं, उन्हीं के जीवन की यशगाथा को प्रेरणा का भंडार मान लेखक ने पुस्तक का सृजन किया, और पूरे मनोयोग से किया। भारतीय काव्य धारा में साहित्य के आदिकाल से विभिन्न कवियों ने अपनी कलम से दोहा, सोरठा आदि काव्य रूपों को रचा–गढ़ा है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 10 वीं शताब्दी के राजस्थान में भरपूर साहित्य सृजन की बात कही है तथा राजस्थानी में जो चरित काव्य लिखे जाते थे उनका प्रचलन भी सातवीं शताब्दी बता कर साहित्य समृद्धि की बात कही है। दोहे आदिकाल से रचे जा रहे हैं जो अपने विषय का सार 'गागर में सागर' भरने जैसा करते हैं।

देशभक्त वीर दुर्गादास राठौड़ राजस्थान के मारवाड़ राज्य के महाराजा जसवंतसिंह के सामंत ठाकुर आसकरण करणोत के यशस्वी, साहसी, संघर्षी पुत्र थे, जो राजस्थान ही नहीं समूचे भारत के गौरवमय इतिहास पुरुष थे।

प्रस्तुत पुस्तक में उनके जीवन–संघर्ष की कहानी दूहों के माध्यम से रेखांकित की गई है, वह धरोहर अजर–अमर कीर्ति स्वरूप चमक रही है। उनके जीवन के अतुल्य गुणों व अलौकिक कार्यों का उल्लेख कर पुनः शिक्षा–साहित्य जगत की स्मृतियों को ताजा किया है। उनका लक्ष्य एक ही था मातृभूमि की आजादी।

भाकरां भटकियां, न अटकियौ खाळां–वाळां,
पलक न विखो जैण, उर खटकियां....।

वीर दुर्गादास ने नींद का भी त्याग किया, घोड़े पर ही आँख झपका लेते थे खाना भी घोड़े पर खा लेते थे, आटे के बाटे बनाकर भालों की अणी से उठा लेते। मातृभूमि को समर्पित ऐसे वीर नौजवान थे दुर्गादास। तभी तो कवि को लिखना पड़ा–

''आठ पहर चौसठ घड़ी, घुड़ला उपर वास,
सैल अणी सूं सेकतो, बाटा दुरगादास।''

देश के विभिन्न कवियों ने अपनी कलम से वीर दुर्गादास के बारे में कवित्त, छंद, दूहा, सोरठा लिखा है, कई आधुनिक कवियों ने भी छंद मुक्त रचनाओं में दुर्गादास राठौड़ की प्रणबद्धता, वीरता, तलवार का धनी जैसे भावों की आधुनिक शैली की रचनाओं में चित्रण किया है। पुस्तक के प्रथम दोहे में–

''दुरगो आसकरण रो, नित उठ बागां जाय
अमल औरंग रो उतरे, दिल्ली धड़का खाय।''

लेखक ने वर्णन किया है कि दुर्गादास किस प्रकार बेधड़क औरंगजेब की सभा में जाते थे उसकी हर चाल समझते, अपने साथियों से सलाह–मशविरा करते और राजकुमार व राजपरिवार की सुरक्षा करते हुए एक दिन पूरे राजपरिवार के साथ दिल्ली से बाहर निकल गए। इसी प्रकार

''माई जणै तो पूत जण, जैहड़ा दुर्गादास
बाँध मुंडासे थांमियौ, बिन खम्भे आकास।''

इसकी पूर्ण व्याख्या कर वीर दुर्गादास के व्यक्तित्व–कृतित्व को धन्य बताया है।

एक और कहानी सामने आती है कि औरंगजेब ने सम्पूर्ण मारवाड़ पर आधिपत्य जमा इस्लाम का अनुयायी बनाने का सपना पाल रखा था, सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति को समाप्त कर अपना परचम फहराना चाहता था, ऐसे में दुर्गादास ने उसका मुँहतोड़ जवाब दिया, औरंगजेब के सारे प्रयास विफल किए तभी तो विद्वानों–कवियों व प्रबुद्ध लोगों ने कहा कि अगर दुर्गादास नहीं होता तो सबकी सुन्नत होती, तब यह कहावत एक जाट भाई ने कही–

'ढंबक ढंबक ढोल बाजै, दे दे ठोर नगारों की
आसे घर दुर्गा न हो तो, सुन्नत होती सारां की।''

दुर्गादास पर रचित इन दोहों की सम्पूर्ण व्याख्या दृष्टांतों के साथ एक पूर्ण लंबी कहानी की तरह प्रस्तुत की है जो युवाओं व बालकों के लिए प्रेरणादायक होगी। वीरवर द्वारा चलाए विभिन्न युद्ध अभियानों में उसकी महती भूमिका पर भी पूर्ण प्रकाश डाला गया है जो आने वाले युवा जगत को प्रेरित करेंगे। विभिन्न कवियों के छंदों की माला पिरोकर लेखक मोहनलाल गहलोत ने मरुभूमि की सांस्कृतिक धरोहर की कड़ी में अपना अथक प्रयास किया है जो सराहनीय है। पुस्तक छपाई अच्छी व पृष्ठावरण आकर्षक है। लेखक को सृजनधर्मिता के लिए धन्यवाद।

–समीक्षक : **डॉ. कृष्णा आचार्य**
राबाउमावि., लक्ष्मीनाथ घाटी
बीकानेर (राज.)
मो. 9461036201

(पृष्ठ 42 का शेष...उ.मा. स्तर पर आपदा प्रबंधन के प्रति शिक्षकों की जागरूकता)

है।

6. आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता प्रमापनी के क्षेत्र अंतिम 'आपदा न्यूनीकरण के प्रयास' के प्राप्त दत्तों का मध्यमान क्रमशः 27.5 व 28.4, मानक विचलन क्रमशः 2.21 व 2.87 तथा 'टी' का मान 3.204 आया। जो कि 'टी' तालिका में 398^0 डिग्री स्वतंत्रता के अंश पर क्रमशः .05 व .01 सार्थकता स्तर पर 'टी' के सारणी मूल्य से अधिक है। अर्थात अंतर सार्थक कहा जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्त्री ने सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों (अध्यापक व अध्यापिकाओं) की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता देखने के लिए उपकरण के माध्यम से प्राप्त दत्त संकलन का विश्लेषण व व्याख्या की गई। तत्पश्चात् जो निष्कर्ष प्राप्त हुए जो इस प्रकार है–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता पायी गयी।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों (पुरुष) की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता पायी गई।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की आपदा प्रबंधन की जागरूकता पायी गई।
4. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
5. सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता पायी गई।
6. निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता पायी गई।
7. सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में आपदा प्रबंध के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

10 शैक्षिक निहितार्थ

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की आपदा प्रबंधन के पाठ्यक्रम को आधार मानकर एक नये विषय के रूप में अपनाया जाने का जो प्रयास किया गया है वह निःसंदेह सराहनीय है। किन्तु पाठ्यक्रम के संबंध में शिक्षाविदों, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने जो अमूल्य सुझाव दिये हैं उनको ध्यान में रखना नितान्त आवश्यक है ताकि पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ सके और उसके कलेवर में बदलाव लाया जा सके।

आपदा प्रबंधन की पुस्तक में जो विषयवस्तु दी गई वह उसे प्रभावी बनाने तथा शिक्षण को सारगर्भित स्थायी ज्ञान प्रदान करने के लिए पाठ्यवस्तु का विकास किया है। उस विषय वस्तु को भी द्वितीय संस्करण में सम्मिलित करने पर पुस्तक की महत्ता बढ़ जायेगी।

जी.एस. विद्या भवन,
बी.एड, कॉलेज, उदयपुर (राज.)

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

पवन चक्की छत पर लगाओ, बिजली बनाओ

काजरी–जोधपुर केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी पवन चक्की बनाई है जिसे घर की छत पर लगाकर उतनी बिजली पैदा की जा सकती है जितनी खपत घर में होती है। आकार में छोटी पवन चक्की (विण्ड टरबाइन) लगाने के बाद भारी-भरकम बिजली के बिल से बचा जा सकता है। महज 4 फीट की इस चक्की में एक्रलिक व गेल्वेनाइज्ड लोहे से बनी सीट लगाई गई है जो बहुत हल्की है। मात्र अँगुली के छूने से घूमने लगती है। 7-8 किलोमीटर प्रति घण्टे की गति से चल रही हवा में आसानी से घूम सकती है। शीट के नीचे की तरफ दिष्ट धारा का जनरेटर लगाया गया है, जो विद्युत बाधा को बढ़ा देता है। एक बैटरी लगाई गई है, जो पैदा हुई बिजली को संग्रहित करती है। इसकी लागत 15-18 हजार रुपये है। काजरी की ओर से बनाया विण्ड टरबाइन क्षैतिज (होरिजेटल) है। इसमें ब्लेड की महज गोलाकार तीन हिस्सों में कटी हुई सीट को उपयोग में लिया गया है।

भलस्वा के कचरे से बनेगी बिजली

नई दिल्ली– उत्तरी दिल्ली नगर निगम भलस्वा लैंडफिल साइट पर कचरे से बिजली बनाने का संयंत्र लगाएगा। यहाँ पर हर दिन एक हजार मीट्रिक टन कचरे से बिजली बनाई जा सकेगी। उत्तरी निगम के मेयर डॉ. संजीव नैय्यर ने इसकी घोषणा की। उत्तरी निगम क्षेत्र में हर दिन लगभग 3200 मीट्रिक टन कचरा निकलता है। जबकि, कचरे के निस्तारण के लिए भलस्वा लैंडफिल, साइट में जगह नहीं है। 2004 में मियाद समाप्त हो चुकी है। मेयर ने बताया की संयंत्र लगने से न केवल कचरा निस्तारण की समस्या दूर होगी बल्कि बिजली निर्माण भी किया जा सकेगा।

पनीर की तरह पिघलने वाला आलू बनाया

मेल्बर्न–आस्ट्रेलियाई वैज्ञानिक एंड्रयू डिहलिन नेथनीट ने पनीर की तरह पिघलने वाली और आइसक्रीम में इस्तेमाल की जा सकने वाली आलू बनाई है। शोधकर्ता डिहलिन ने कहा कि इस आलू को पनीर की तरह ब्रेड में लगाकर स्वाद लिया जा सकता है। यह पर्यावरण के अनुकूल और खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से सुरक्षित है। चीज औप पोटेटो को जोड़कर इसे चैरो नाम दिया गया है। डिहलिन ने आलू की तमाम किस्मों पर 12 साल प्रयोग कर इस प्रजाति को तैयार किया है। उन्होंने दावा किया है कि चैरों से बनने वाले व्यंजन का इस्तेमाल चार साल माह से चार तक हो सकता है। (एजेन्सी)

स्वदेशी ड्रोन बना रहे हैं-आईआईटी खड़गपुर के छात्र

कोलकाता– भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर के विद्यार्थी पूरी तरह स्वदेशी निर्मित ड्रोन विकसित कर रहे हैं। इस ड्रोन में इस्तेमाल हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर को भी देश में बनाया गया है। ड्रोन का विकास आईआईटी के एरियल रोबोटिक खड़गपुर (एआरके) की पहल पर किया जा रहा है। इसका विकास सेंटर फॉर एक्सिलेंस इन रोबोटिक कर रहा है, जबकि स्पॉन्सर्ड रिसर्च एंड इंडस्ट्रियल कन्सलटेन्सी (एआरआईसी) योजना का विश्लेषण कर रही है। इस केन्द्र को 12 परियोजनाओं के लिए संस्थान के पाँच करोड़ रुपये मिले हैं। इसका नेतृत्व करने वाले गणित विभाग के सोमेश कुमार ने बताया कि यह ड्रोन स्वतः उड़ान भरने में सक्षम हो और जीपीएस रहित क्षेत्र में उड़ सकेगा। इसे जमीन से मोबाइल से भी नियंत्रित किया जा सकेगा।

सरसों के दाने से लाख गुना छोटा ट्रांजिस्टर बनाया

केलिफोर्निया– वैज्ञानिकों ने दुनिया का अब तक का सबसे छोटा ट्रांजिस्टर बनाने में कामयाबी पाई है। एक नैनोमीटर लम्बा यह ट्रांजिस्टर सरसों के दाने से लाख गुना छोटा होता है। इसके आकार का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एक बाल की मोटाई करीब एक लाख नैनोमीटर होती है। जबकि यह एक नैनोमीटर है। खास बात यह है इसे बनाने में सिलिकॉन के बदले मोलिब्डेनम डाइसल्फाइड का इस्तेमाल किया गया है, जो गाड़ियों में डाला जाने वाला एक प्रकार का इंजन ल्यूब्रिकेंट है। वैज्ञानिकों ने इसका नाम इंटेल के संस्थापक गोल्डन मूर के नाम रखा है। इस खोज में प्रमुख भूमिका निभाने वाला भारतीय मूल के वैज्ञानिक सुजॉय देशाई का कहना है इस अति सूक्ष्म ट्रांजिस्टर को बिना किसी उपकरण की मदद लिए अपनी आँखों से देख पाना भी संभव नहीं है।

सरस्वती नदी के वैज्ञानिक प्रमाण मिले

नई दिल्ली– पौराणिक काल में बहने वाली सरस्वती नदी के वैज्ञानिक प्रमाण मिल गए हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार हिमालय में आदि बद्री से गुजरात में कच्छ के रण से होकर धौलावीरा तक करीब पौने पाँच हजार किमी तक जमीन के भीतर जल भण्डार का पता चला है। इससे हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तरी गुजरात तक के क्षेत्र की प्यास बुझाई जा सकती है। भूगर्भ वैज्ञानिक प्रोफेसर के.एस. वाल्दिया की अध्यक्षता वाले एक विशेषज्ञ दल ने केन्द्रीय जल संसाधन और नदी विकास मंत्री उमा भारती को उत्तर-पश्चिम भारत में पुरावाहिकाओं की प्राक्कलन रिपोर्ट में सरस्वती नदी के अस्तित्व में रहने की बात कही है। उमा भारती ने कहा कि यह विश्व की सबसे प्रमाणिक रिपोर्ट है। यदि आवश्यक हुआ तो इस को लेकर कानून भी बनाया जाएगा।

सेज के ऑयल केप्सूल सेवन करने वालों की याददाश्त ज्यादा

यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूकैसल एण्ड नार्थमबिया में मेडिक्लिनिकल प्लांट रिसर्च सेंटर ने एक अध्ययन कर जिसमें 18 से 37 साल की उम्र के 44 लोगों पर शोध किया। कुछ लोगों को सेज के ऑयल केप्सूल दिए गए और कुछ को प्लेक्सो के। इसके बाद कुछ शब्द याद करने के लिए दिये गये। सेज के ऑयल केप्सूल सेवन करने वालों को दूसरों से कहीं ज्यादा शब्द याद रहे। रिसर्च के अनुसार सेज का पौधा एक प्राकृतिक जड़ी बूटी है जो कि याददाश्त बढ़ाने में फायदेमंद है।

संकलन : **नारायण दास जीनगर**
प्रकाशन सहायक

शाला प्रांगण से

गुलाबपुरा में प्रदर्शनी का आयोजन

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) ने उपखण्ड स्तरीय स्वच्छ शोभा अभियान में प्रदर्शनी का आयोजन किया। संस्था प्रधान डॉ. रूपा पारीक ने बताया कि कस्बे के मुख्य चौराहे पर जागरूकता व प्रचार-प्रसार हेतु स्वच्छ भारत अभियान मुख्य विषय पर छात्राओं द्वारा तैयार पोस्टर व सामग्री का प्रदर्शन करने के साथ ही ''स्वच्छ शहर, प्रदूषण-मुक्त शहर'' विषय पर नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की गई। डॉ. रूपा पारीक द्वारा लिखित नाटिका का निर्देशन श्रीमती प्रेरणा शर्मा ने किया। इस अवसर पर नगरपालिका गुलाबपुरा के अध्यक्ष धनराज गुर्जर, उपाध्यक्ष प्रदीप रांका, उपखण्ड अधिकारी नन्दकिशोर राजोरा, मुख्य कलाकार रामप्रसाद पारीक एवं श्री गाँधी विद्यालय के प्राचार्य सत्यनारायण अग्रवाल एवं विभिन्न विद्यालयों के संस्था प्रधान एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

बेहतर परिणाम देने पर शिक्षकों का सम्मान

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुरावड़, उदयपुर में शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ संस्था प्रधान, छात्राओं एवं मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण व सरस्वती वंदना से हुआ। मुख्य अतिथि पंचायत समिति प्रधान श्रीमती अस्मा खां पठान, कुरावड़ व विशिष्ट अतिथि श्री विक्रम सिंह कृष्णावत थे। इस अवसर पर ब्लॉक स्तरीय पुरस्कार पाने वाले व्याख्याता श्री सुधीर खण्डेलवाल उमावि बम्बोरा, श्री भंवरसिंह राठौड़ उमावि कुरावड़ एवं उप्रावि के प्रधानाध्यापक श्री भगवान शंकर सनाढ्य व राउमावि गुडली के अध्यापक श्री वगताराम शर्मा थे। सम्मानित शिक्षकों को संस्था प्रधान अतिथियों द्वारा शॉल, श्रीफल, प्रतीक चिह्न प्रदान कर व साफा पहनाकर सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों ने रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति देकर आयोजन को मनोरम बनाया। संचालन महेश 'बालक' ने किया। धन्यवाद देते हुए संस्था प्रधान ने कहा कि 'शिक्षक एक सजग राष्ट्र का निर्माण करने वाला होता है। आने वाली पीढ़ीयाँ तैयार करता है। इसी कारण शिक्षकगण सदैव आदरणीय है।

विद्यालय पत्रिका 'उड़ान' का विमोचन

राबाउमावि काली बेरी में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को समर्पित विद्यालय पत्रिका 'उड़ान' के वार्षिक विज्ञान अंक का विमोचन मुख्य अतिथि इंजी. चेतन प्रकाश माथुर, अध्यक्ष डॉ. ओ.पी. कल्ला, विशिष्ट अतिथि जवाहर लाल, रूपाराम चौधरी व अनिल अनवर के हाथों विद्यालय सभा भवन में 31.08.06 को किया गया। इस अवसर पर स्थानीय पार्षद के अलावा भामाशाह व अभिभावकगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सरस्वती प्रतिमा के माल्यार्पण के साथ शुरू हुए कार्यक्रम में अतिथियों ने डॉ. कलाम के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर कलाम के अलावा डॉ. कल्पना चावला पर निर्मित फिल्में प्रदर्शित की गई। अतिथि अनवर ने छात्राओं को राडार प्रणाली व मिसाइल सिस्टम, जवाहर लाल ने पर्यावरण प्रदूषण व ग्लोबल वार्मिंग पर सारगर्भित जानकारी बच्चों के साथ साझा की। अध्यक्षीय उद्बोधन में वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री कल्ला ने अपने सहकर्मी रहे डॉ. कलाम के साथ बिताये पलों व अनुभवों का साझा करते हुए कहा कि ''कलाम जैसे व्यक्तित्व सदियों में जन्म लेता है। विद्यालयी छात्राओं ने नृत्य नाटिका 'अमर बलिदान' व 'धरा गीत' द्वारा वैश्विक एकता का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री शैतान सिंह द्वारा किया गया। अतिथियों का स्वागत प्रधानाचार्य श्रीमती मृदुला श्रीवास्तव तथा धन्यवाद एसएमसी अध्यक्ष श्री देवीसिंह भाटी ने किया। अतिथियों ने छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

50 लाख रुपये से अधिक विकास कार्य करवाने वाले संस्था प्रधानों का अभिनन्दन

5 अगस्त 2016 राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को 50 लाख रुपये से अधिक विकास कार्य करवाने वाले संस्था प्रधानों का अभिनन्दन सिटिजन्स सोसायटि फॉर एज्यूकेशन द्वारा शिवदत्त विद्यापीठ गढ़ी स्थित स्वामी कृष्णानन्द सभागार में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक जगदीश चन्द्र पुरोहित के मुख्य अतिथि एवं विवेकानन्द केन्द्र जयपुर के अध्यक्ष लॉयन महेन्द्र लोढ़ा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सीईए प्रवक्ता शौकत अली लोहिया ने बताया कि राजकीय विद्यालयों में जन सहयोग से कार्य करवाने के लिए प्रेरक रहे राउबावि प्रतापनगर के प्रधानाचार्य जगदीश प्रसाद पुरोहित 'जगसा' एवं राबामावि खाण्डा फलसा की प्रधानाध्यापिका श्रीमती देवी बिजाणी का निदेशक जगदीश चन्द्र पुरोहित के हाथों अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा में निदेशक महोदय ने राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम के उन्नयन पर हर्ष व्यक्त किया तथा शिक्षकों की सकारात्मक भूमिका की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसे निरनतर जारी रखने के लिए कहा। लॉयन महेन्द्र लोढ़ा ने प्रशासनिक अधिकारियों के बच्चों को भी सरकारी स्कूलों में भेजने का आह्वान किया। आयोजन सोसायटी के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक किशनगोपाल कंसारा, बालकिशन जाजड़ा, कैलाशनाथ पुरोहित, इंजी, एस.डी. बिस्सा, स्वागत मंत्री अचलेश्वर बोहरा तथा श्रीमती शीला पुरोहित अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे। राजकीय विद्यालयों में जहाँ निःशुल्क शिक्षण, पाठ्यपुस्तकें व पोषाहार सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जा रहा है वहीं स्टेशनरी व पोशाकों के वितरण की भामाशाहों द्वारा घोषणा की गई। इस अवसर पर सोसायटी के सदस्य शिक्षा विभाग के अधिकारी, कर्मचारी, रंगकर्मी व बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहीं।

राजकीय विद्यालयों के शिक्षक 'पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान, जयपुर' द्वारा पुरस्कृत

उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम एवं नामांकन वृद्धि करने वाले राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों को पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान जयपुर द्वारा शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 2016 को सेन्ट माइकिल उमावि जयपुर में राज्य स्तरीय समारोह में बाड़मेर जिले के 14 शिक्षकों को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के अध्यक्ष प्रो. बी.एल. चौधरी के हाथों शॉल ओढ़ाकर प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने

बताया कि नामांकन वृद्धि में असाडा के प्रधानाचार्य, भूराराम चौधरी, हीरा की ढाणी के हरिसिंह पूनिया, उमराई के उम्मेद सिंह, धोरीमन्ना के डालूराम सुथार, चौहटन के अनिल कुमार परमार बेहतर परीक्षा परिणाम देने राउमावि बालोतरा के व्याख्याता सुरेश कुमार डांगी (अर्थशास्त्र) मुकेश सोनगरा, सिवा के सुल्तान सिंह थेब के हरिश्चन्द्र, भियाड़ के भूराराम, करना के सुरेन्द्र सिंह, उमर लाई के लालाराम सुथार, सुरपुरा के भोमाराम गोयल, ढापना के उमाराम मूंढ को सम्मानित करने पर जिले के गणमान्य नागरिकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों ने जयपुर से बाड़मेर लौटने पर स्वागत किया।

शाला में परिवर्द्धित ड्रेस कोड– एक नवाचार

राउमावि मण्डावर, पं.स. झालरापाटन जिला झालावाड़ में स्टाफ ने स्वेच्छा से अपने लिए ड्रेस कोड नवाचार के रूप में प्रारम्भ किया है। दिनांक 5 अगस्त 2016 से ही पूरा स्टाफ इसी वेशभूषा में विद्यालय आता है। इस नवाचार का नाम 'हमारा वेश : हमारी पहिचान' रखा गया है। विद्यार्थियों के उत्साहवर्धन हेतु विभाग द्वारा निर्धारित गणवेश कुछ परिवर्द्धन करके नेवी ब्ल्यू टाई, बेल्ट, काले जूते, सलेटी मौजे तथा परिचय-पत्र निर्धारित किया गया है। शाला परिवार के इस कदम से न केवल स्टॉफ में बल्कि विद्यार्थियों में भी अत्यंत उत्साह और प्रसन्नता का माहौल बन गया है। अभिभावकों की इस दिशा में सकारात्मक भूमिका भी सराहनीय रही है।

शिक्षक सम्मान विश्व हिन्दू परिषद द्वारा

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कालियास, भीलवाड़ा में गत सितम्बर 2016 के शिविरा पत्रिका अंक 'शिक्षक दिवस विशेषांक-2016' की प्रेरणा के तहत इस वर्ष शिक्षक दिवस के मौके पर स्थानीय ग्राम पंचायत में कार्यरत राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों का उनके आदर्श कृतित्व एवं व्यक्तित्व के आधार पर स्थानीय विश्व हिन्दू परिषद एवं बजरंग दल द्वारा शिक्षकों को प्रशस्ति-पत्र, श्रीफल, सिल्वर नोट प्रदान कर अभिनन्दन करते हुए अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। इस अभूतपूर्व कार्यक्रम को आदर्श बनवाने हेतु प्रत्येक छात्र-छात्राओं ने शिक्षकों को श्रीफल एवं माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया। गुरु शिष्य परम्परा के साक्ष्य के रूप में अभिभावकों की उपस्थिति शानदार रही।

डॉ. कलाम जयन्ती पर 15 शिक्षक हुए सम्मानित

जयपुर– पूर्व राष्ट्रपति, वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जयन्ती 15 अक्टूबर को पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान की ओर से वैशाली नगर स्थित टैगोर पब्लिक स्कूल वैशाली के सभागार में शिक्षा के जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में राज्य स्तर पर चयनित 15 शिक्षकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राज्य स्तरीय शिक्षक रत्न पुरस्कार 2016 से सम्मानित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री कालीचरण सराफ थे तथा अध्यक्षता राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति जे.पी. सिंघल ने की। विशिष्ट अतिथि टैगोर शिक्षण संस्थाओं के निदेशक पी.डी. सिंह थे। प्रारम्भ में फोरम के संरक्षक एल.आर. गुप्ता, उपाध्यक्ष सुदर्शन कुल्हार ने अतिथियों का स्वागत किया।

फोरम के महासचिव रामेश्वर प्रसाद शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय/कॉलेज शिक्षा से राजस्था वि.वि. में डीन एवं प्रो. डॉ. सोहन लाल शर्मा, एसोसिएट प्रो. डॉ. मंजू शर्मा, छात्र परामर्श केन्द्र के निदेशक डॉ. दीपक सक्सेना, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (जयपुर) की एसो. प्रो. डॉ. अनिता शर्मा होम्यो मेडिकल कॉलेज जयपुर के एसो. प्रो. मनीष भाटिया व अग्रवाल टी टी कॉलेज जयपुर के प्रिंसिपल डॉ. संजीव सिंघल है। स्कूल शिक्षा से स्काउट गाइड के स्टेट कमिश्नर (कार्यक्रम क्रियान्वयन) आर.एस. शेखावत, अति. जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.) जयपुर, राजेन्द्र शर्मा 'हंस' अवर उप जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शिक्षा) बाडमेर, श्रवण कुमार छंगाणी, मंजू लाटा (निदेशक, विद्याश्रम पब्लिक स्कूल सीकर), टैगोर विद्या भवन मानसरोवर (जयपुर) के प्रिंसिपल मुरारी लाल शर्मा रा.उ.मा.वि. राजगढ़ (चुरू), के शारीरिक शिक्षक जसवन्त सिंह रा.वरि.उपा. संस्कृत विद्यालय अलवर के एज्यू. ऐड्रोयेड एप्स निर्माता शिक्षक मो. इमरान खान मेवाती व विशेष (दिव्यांग) शिक्षा की शिक्षिका स्नेहलता शर्मा को राज्य स्तर पर फोरम की ओर से शॉल ओढ़ा कर के प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न भेंट कर के मेडल पहनाकर के डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राज्य स्तरीय शिक्षक रत्न पुरस्कार 2016 से सम्मानित किया। अंत में फोरम की ओर से ओम प्रकाश शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के अन्तर्गत कार्यक्रम

सवाई माधोपुर– स्थानीय विद्यालय में दिनांक 19.8.2016 को बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के अन्तर्गत कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्री अशोक राज मीना सीनोली समाजसेवी, विशिष्ट अतिथि श्री बाबूलाल मीना अध्यक्ष एस.एम.सी. रहे। कार्यक्रम के इस अवसर पर उपस्थित ग्रामवासियों से कन्या भ्रूण हत्या रोकने, बेटी बचाने व बेटी को पढ़ाने का आह्वान किया। उन्होंने बेटा बेटी में भेद न करने की अपील अपील की और कहा कि बेटी को भी बेटे के समान अधिकार है। मुख्य अतिथि अशोकराज मीना ने कहा कि हमें बालिका शिक्षा पर जोर देना है व अधिक से अधिक बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ना है। कोई भी 'बालिका' शिक्षा से वंचित न रहे।

बाबूलाल मीना अध्यक्ष एस.एम.सी. ने अपने सम्बोधन में श्री बैरवा के इस मिशन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। हमें स्थानीय विद्यालय की राजकुमारी दीयाकुमारी ब्राण्ड एम्बेसेडर के सपने को पूर्ण करना है। इस अवसर पर श्री बाबूलाल बैरवा प्र.अ. ने 55 छात्र-छात्राओं को शिक्षण सामग्री (बैग पुस्तक स्लेट पेन्सिल) निःशुल्क वितरण की। श्री बैरवा प्रतिवर्ष कई विद्यालयों में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को संदेश पहुँचाते है। इस अवसर पर श्री देवकीनन्दन जाँगिड़ अ., श्री अनिल कुमार गुप्ता अ., मानवता यादव अ., जयनारायण मीना ने भी लोगों को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के समापन से पूर्व श्री बैरवा ने लोगों को कन्या भ्रूण हत्या रोकने, बेटी बचाने व बेटी पढ़ाने का संकल्प दिलवाया।

संकलन : **नारायणदास जीनगर**
प्रकाशन सहायक
मो. 9414142641

सिरोही

रा.उ.मा.वि. वाटेरा को श्री हरिसिंह चौहान से छात्रों के लिए टाई लागत 400 रुपये, बैल्ट लागत 400 रुपये, बैग लागत 1000 बैग लागत 31,000 रुपये प्राप्त हुए। श्री बालचन्द, हेमाजी जणवा द्वारा हेन्डीक्राफ्ट लोहे का गेट लागत 30,000 रुपये का बनाकर विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री सीताजी पन्ना जी बौराणा द्वारा खेल मैदान का गेट व बोर्ड लागत 21,000 रुपये का विद्यालय को सप्रेम भेंट। युसुफ खान द्वारा 30 प्लास्टिक के स्टूल लागत 6,000 रुपये, डॉ. नरोत्तम जणवा से दो बड़ी मेट 2,500 रुपये की विद्यालय को सप्रेम भेंट। श्री रमेश भाई, स्व. धनपत सिंह जी, फुसाजी, बॉलीबाल क्लब, रमेश कुमार, जगाराम धाँची, भेराराम दरिया बेन, पूनाराम जी द्वारा आठ पंखे लागत 10,000 रुपये, सर्व श्री जगदीश प्रजापत, प्रकाश माली, दिनेश कुमार, शंकरलाल व पदमावती बैंगल्स वाटेरा से 15 कुर्सीयाँ प्राप्त हुई। श्री भंवर लाल जणवा से एक जाजम लागत 1,100 रुपये, श्रीमती जीवन जैन एवं अन्य भामाशाह द्वारा 25 छात्र-छात्राओं को विद्यालय की पोशाक वितरित की गई। **संघवी नत्थीबाई खुमाजी रा.उ.मा.वि., तंवरी** को सर्व श्री चन्द्र कुमार, मूलशंकर, उत्तम सिंह, खेताराम, गंगाराम, प्रागाराम, मेघाराम, लुम्बाराम कलंबी, हितेश सिंह, बगता छीपा, शंकर लाल मेघवाल, गोमाराम, उना देवासी एवं देवीचंद सोनी द्वारा 70,000 रुपये की लागत से विद्यालय को वाटर प्यूरी फायर व प्रिंटर विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.उ.प्रा.वि. नवाखेड़ तह. शिवगंज** में श्री शंकरलाल कुम्हार द्वारा 3,05,000 रुपये की लागत से प्याऊ का निर्माण करवाकर उसके वाटर प्यूरी फायर व वाटर फ्रीजर लगवाया गया। श्री शंकरलाल कुम्हार से एक लोहे की अलमारी लागत 5,000 रुपये, 1008 श्री पोमजी महाराज खन्दरा मठ द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को विद्यालय गणवेश व शिक्षण सामग्री विद्यालय को सप्रेम भेंट लागत 5,000 रुपये, श्री शंकरलाल कुम्हार, नवाखेड़ा द्वारा विद्यालय में पोषाहार कार्यक्रम के तहत स्टील बर्तन विद्यालय को दिए लागत 3,500 रुपये, श्री हंसाराम कुम्हार से 5 केनिंग कुर्सी लागत 3,000 रुपये, श्री भीमाराम, शंकरलाल कुम्हार, हंसाराम कुम्हार द्वारा सत्रारम्भ वाकपीठ (2015-16) के आयोजन में 75,000 रुपये का सहयोग दिया।

सीकर

श्री ब्र.ने.गं. रा.उ.मा.वि. पचार पं.स. दांतारामगढ़ (सीकर) को श्री राम प्रसाद शर्मा (पूर्व प्रोफेसर) द्वारा इस विद्यालय के कमजोर एवं गरीब विद्यार्थियों को 61 गर्म स्वेटर जिनकी कीमत 15,000 रुपये। रा.उ.मा.वि. गणेश्वर में श्री कन्हैयालाल सिंघानिया द्वारा विद्यालय में छः कक्षा-कक्षों सहित एक बड़े हॉल का निर्माण तथा 200 सैट स्टूल लोहे के सभी कक्षों में विद्युतीकरण एवं पानी की व्यवस्था लागत 23,85,000 रुपये मात्र, श्री दिलीप कुमार सिंघानिया द्वारा विद्यालय भवन का मुख्यद्वार एवं चार दीवारी का निर्माण, 50 सैट स्टूल टेबल लकड़ी के पाँच अलमारी लोहे की एवं दो रेक लागत 1,75,00 मात्र। **श्री ब्र.ने.ग. रा.उ.मा.वि. पचार पं.स. दांतारामगढ़** को श्री रघुवीर सिंह शेखावत द्वारा **रा.आ.उ.मा.वि., पचार (सीकर)** को सत्र 2016-17 में कक्षा IX से XII तक अध्ययनरत SC, ST के छात्रों-छात्राओं को जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है उनके शुल्क के पुनर्भरण के रूप में आर्थिक सहयोग के रूप में 10,000 रुपये। **शहीद जे.पी. खरबास रा.आ.उ.मा.वि. मावण्डा खुर्द पं.स. नीम का थाना** को श्री खेता राम वर्मा से दो बड़ी लोहे की अलमारी प्राप्त हुई। **रा.उ.मा.वि. डाबला** में सर्व श्री अजय सिंह, राजपाल सिंह व संजय सिंह द्वारा 25×45 का प्रार्थना मंच का निर्माण करवाया गया।

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**

हमारे भामाशाह

लागत 4,00,000 रुपये, स्थानीय विद्यालय में कार्यरत श्री नथमल यादव (प्राध्यापक हिन्दी) के सुपुत्रों श्री सत्यवीर यादव व लोकेश कुमार यादव प्रार्थना मंच पर सरस्वती माँ की प्रतिमा की स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजन करवाया लागत 1,00,000 रुपये। **रा.आदर्श उ.मा.वि, नांगल (अभयपुरा)** में श्री दीपाराम मावलिया (पूर्व व्या.) द्वारा विद्यालय में 8000 लीटर पानी की टंकी का निर्माण करवाया गया। जिसकी लागत 71,000 रुपये, श्री रामकुमार मावलिया द्वारा प्रधानाचार्य ऑफिस एवं कार्यालय कक्ष में फर्श पर टाइल लगवाई गई जिसकी लागत 50,000 रुपये, श्री महावीर प्रसाद मावलिया द्वारा विद्यालयों को H.P. 1005 मल्टी फंक्शन प्रिण्टर जिसकी लागत 12,900 रुपये, श्री साबरमल व बेगाराम मावलिया द्वारा विद्यालय के मुख्यद्वार पर सरस्वती माता की मूर्ति स्थापित की गई जिसकी लागत 8,000 रुपये, प्रधानाचार्य श्री रणजीत सिंह बुरड़क द्वारा विद्यालय के 11 छात्र-छात्राओं को विद्यालय गणवेश जिसकी लागत 5,100 रुपये तथा अपने ग्राम पलथाना में **रा.उ.मा.वि, पलथाना (सीकर)** में नामांकन बढ़ाने के लिए 130 छात्र-छात्राओं को विद्यालय पोशाक दी गई जिसकी लागत 61,000 रुपये, विद्यालय में स्थानीय ग्राम वासियों द्वारा 75 सैट टेबल-स्टूल जिसकी लागत 1,11,000 रुपये तथा 20 कमरों पर छत डलवायी गई जिसकी लागत 1,51,000 रुपये, **आदर्श रा.उ.मा.वि. खण्डेला** को श्री सुरेन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष व्यापार मण्डल खण्डेला) से गरीब 41 छात्र-छात्राओं को स्वेटर सप्रेम भेंट जिनकी जिसकी लागत 6,150 रुपये तथा एक फोटो स्टेट मशीन जिसकी लागत 12,100 रुपये, जनाब रहीम काजी हाल-मुंबई द्वारा छात्र-छात्राओं को 3 क्विंटल लड्डू वितरित जिसका व्यय 21,000 रुपये, रा.उ.मा.वि. कासली को हाजी मोहम्मद इब्राहिम खाँ द्वारा बालिकाओं के लिए दो शौचालय एवं 4 ग्रीन बोर्ड, श्री मकसूद खाँ (ग्राम किरडोली) द्वारा विद्यालय के कक्षा-कक्षों के लिए 11 छत पंखे, क्रिकेट क्लब कासली से एक डेगर्ट कूलर, श्रीमती मीनाक्षी माथुर (अ.) से एक छत पंखा। **संघी रा.बा.उ.मा.वि. कांवट** को श्री हनुमान प्रसाद सैनी से एक वाटर प्यूरी फायर कैन्ट जिसकी लागत 17,500 रुपये। **श्रीमती मगदू देवी पाटनी रा.बा.उ.मा.वि. धोद** को सर्व श्री बंशीधर सोनी मदन लाल सोनी, ओमप्रकाश सोनी, जुगलकिशोर सोनी, रमेश कुमार काला, नत्थु सिंह तंवर, विनोद कुमार पहाड़िया, विनोद कुमार पुजारी, कैलाश चन्द्र शास्त्री, कैलाश चन्द्र काला, पूर्णमल जांगिड़, मदन लाल मौर्य, इन्द्रा चौधरी (प्रधानाचार्य) से प्रत्येक से 5,000 रुपये (अर्थात् 65,000 रुपये) की राशि से विद्यालय में सी.सी.टी.वी. कैमरा 11 मय आवश्यक मशीनरी फिटिंग सहित सप्रेम भेंट। श्री सम्पत कुमार, मनोज कुमार पाटनी से एक प्रिन्टर मय स्कैनर व फोटो स्टेट तथा LCD Monitoer 17" जिसकी लागत 21,000 रुपये, श्री विनोद कुमार पहाड़िया से एक वाटर प्यूरीफायर (R O Kent) 10 लीटर जिसकी लागत 14,500 रुपये, श्रीमती रिंकी (व्या.) से एक बड़ी लोहे की अलमारी जिसकी लागत 8,500 रुपये, श्री चन्द्रपाल थोरी से 11,000, श्री सम्पत कुमार, मनोज कुमार से 5000 रुपये, श्रीमती पुष्पा कुमारी (शा.शि.) से 5,000 रुपये, श्री डालूराम लेगा से 3,100 रुपये, सर्व श्री घासीराम नेहरा, लाल चन्द कुमावत, किशोर सिंह चापावत, जगदीश प्रसाद पंवार, श्रीमती अंजना माथुर प्रत्येक से 2,100 रुपये, श्री किशनलाल गोरस्या से 1,100 रुपये अर्थात 36,000 हजार रुपये की लागत से विद्यालय चौक पर मुख्य द्वार से पोर्च तक पोल पर लाइट फिटिंग सौंदर्यीकरण बाबत प्राप्त हुए।

संकलन : **रमेश कुमार व्यास,** प्रकाशन सहायक

शिविरा पत्रिका (मासिक) : नवम्बर 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।